

सम्पादक :—
श्री० रामरत्नसिंह सहगल

‘भविष्य’ का चन्दा

वार्षिक चन्दा ... ६) ६०
 छः माहो चन्दा ... ५) ६०
 तिमाही चन्दा ... ३) ६०
 एक प्रति का मूल्य ... ॥)

Annas Three Per Copy

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक
 आध्यात्मिक स्वराय हमारा भ्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—
‘भविष्य’ इलाहाबाद

एक प्रार्थना
 वार्षिक चन्दे अथवा फो-कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुकताचीनी करने में पहिले मित्रों को ‘भविष्य’ में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टि-पात करना चाहिए !

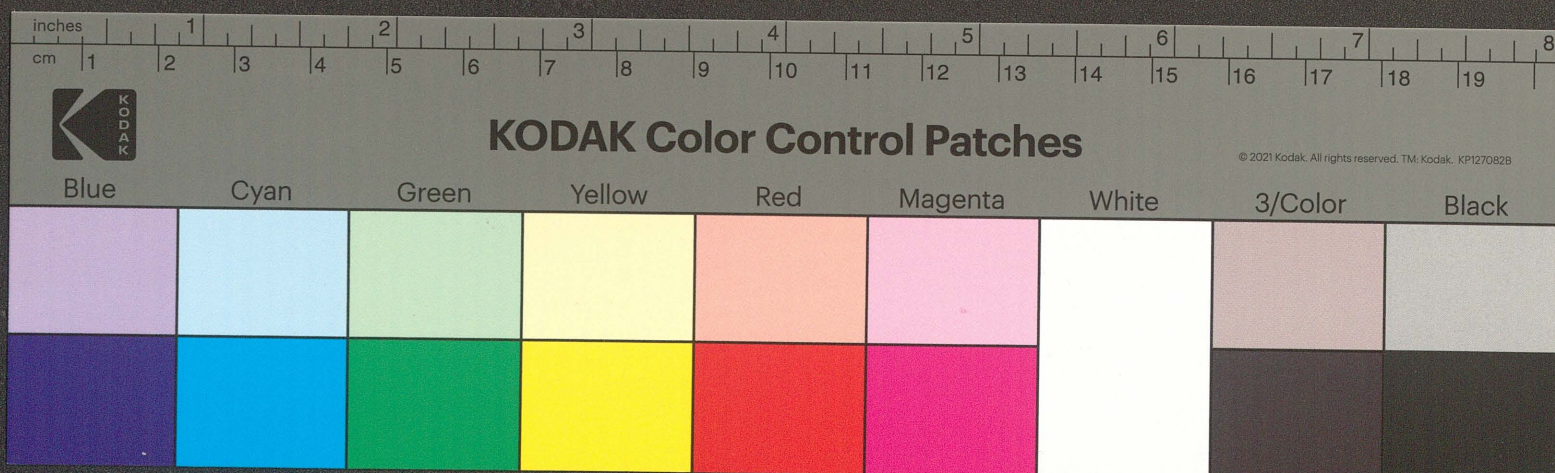
वर्ष १, खण्ड २ इलाहाबाद—बृहस्पतिवार; २५ दिसम्बर, १९३० संख्या १, पूर्ण संख्या १३

बम्बई में महिलाओं की विराट सभा

भारतीय देवियों के छलकते हुए देश-प्रेम का एक साधारण नमूना



बम्बई में ‘गाँधी-दिवस’ जिस उत्साह और समारोह से मनाया गया था, उसका समाचार पाठकों ने पत्रों में पढ़ा ही होगा। इन दिनों न जानें कितनी सभाएँ हुईं और कितनी बार हुई लाठियों की हृदयहीन धर्पा ! यह चित्र महिलाओं की एक महती सभा का है, जिसमें हजारों महिलाओं ने भाग लिया था ऊपर के घेरे में पाठक श्रीमती हुंसा मेहता, बी० ए० को व्याख्यान देते हुए देखेंगे, जो हाल ही में जेल से लौटे हैं।



विंदूषक

नाम ही से पुस्तक का विषय इतना स्पष्ट है कि इसकी विशेष चर्चा करना व्यर्थ है। एक-एक चुटकुला पढ़िए और हँस-हँस कर दोहरे हो जाइए—इस बात की गारण्टी है। सारे चुटकुले विनोदपूर्ण और चुने हुए हैं। भोजन एवं काम की थकावट के बाद ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी समान आनन्द उठा सकते हैं। मूल्य १)

देवदास

यह बहुत ही सुन्दर और महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है। वर्तमान वैवाहिक कुरीतियों के कारण क्या-क्या अनर्थ होते हैं; विविध परिस्थितियों में पड़ने पर मनुष्य के हृदय में किस प्रकार नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं और वह उद्भ्रान्त सा हो जाता है—इसका जीता-जागता चित्र इस पुस्तक में खींचा गया है। भाषा सरल एवं मुहावरेदार। मूल्य केवल २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

समाज की चिनगारियाँ

एक अनन्त अतीत-काल से समाज के मूल में अन्ध-विश्वास, अविश्रान्त अत्याचार और कुप्रथाएँ, भीषण अग्नि-ज्वालाएँ प्रज्वलित कर रही हैं और उनमें यह अभाग्य देश अपनी सदभिलाषाओं, अपनी सत्कामनाओं, अपनी शक्तियों, अपने धर्म और अपनी सभ्यता की आहुतियाँ दे रहा है। 'समाज की चिनगारियाँ' आपके समक्ष उसी दुर्दान्त दृश्य का एक धुंधला चित्र उपस्थित करने का प्रयास करती है। परन्तु यह धुंधला चित्र भी ऐसा दुःखदायी है कि देख कर आपके नेत्र आठ-आठ आँसू बहाए बिना न रहेंगे।

पुस्तक बिल्कुल मौलिक है और उसका एक-एक शब्द सत्य को साक्षी करके लिखा गया है। भाषा इसकी ऐसी सरल, बामुहाविरा, सुललित तथा करुणा की रागिनी से परिपूर्ण है कि पढ़ते ही बनती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पुस्तक की छपाई-सफाई नेत्र-रञ्जक एवं समस्त कपड़े की जिल्द दर्शनीय हुई है; सजीव प्रोटे-क्रिङ्ग कवर ने तो उसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए हैं। फिर भी मूल्य केवल प्रचार-दृष्टि से लागत मात्र ३) रक्खा गया है। स्थायी ग्राहकों से २) रु०।

विधवा-विवाह-मीमांसा

अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अकाट्य प्रमाणों द्वारा लिखी हुई यह वह पुस्तक है, जो सड़े-गले विचारों को अग्नि के समान भस्म कर देती है। इस बीसवीं सदी में भी जो लोग विधवा-विवाह का नाम सुन कर धर्म की दुहाई देते हैं, उनकी आँखें खुल जायँगी। केवल एक बार के पढ़ने से कोई शङ्का शेष न रह जायगी। प्रश्नोत्तर के रूप में विधवा-विवाह के विरुद्ध दी जाने वाली असंख्य दलीलों का खण्डन बड़ी विद्वत्तापूर्वक किया गया है। कोई कैसा ही विरोधी क्यों न हो, पुस्तक को एक बार पढ़ते ही उसकी सारी युक्तियाँ भस्म हो जायँगी और वह विधवा-विवाह का कट्टर समर्थक हो जायगा।

प्रस्तुत पुस्तक में वेद, शास्त्र, स्मृतियों तथा पुराणों द्वारा विधवा-विवाह को सिद्ध करके, उसके प्रचलित न होने से जो हानियाँ हो रही हैं, समाज में जिस प्रकार जघन्य अत्याचार, व्यभिचार, भ्रूण-हत्याएँ तथा वेश्याओं की वृद्धि हो रही है, उसका बड़ा ही हृदय-विदारक वर्णन किया गया है। पढ़ते ही आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित होने लगेगी एवं पश्चात्ताप और वेदना से हृदय फटने लगेगा। अस्तु। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, रोचक तथा मुहावरेदार है; मूल्य ३)

ग्रह का फेर

यह बङ्गला के प्रसिद्ध उपन्यास का अनुवाद है। लड़के-लड़कियों के शादी-विवाह में असावधानी करने से जो भयङ्कर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अङ्कित की गई है कि अनाथ हिन्दू-बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हें किस प्रकार ईसाई और मुसलमान अपने चङ्गुल में फँसाते हैं। मूल्य ॥)

राष्ट्रीय गान

यह पुस्तक चौथी बार छप कर तैयार हुई है, इसीसे इसकी उपयोगिता का पता लगाया जा सकता है। इसमें वीर-रस में सने देशभक्ति-पूर्ण गानों का संग्रह है। केवल एक गाना पढ़ते ही आपका दिल फड़क उठेगा। राष्ट्रीयता की लहर आपके हृदय में उमड़ने लगेगी। यह गाने हारमोनियम पर गाने लायक एवं बालक-बालिकाओं को कण्ठ कराने लायक भी हैं। मूल्य ॥)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

भविष्य

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मज़ल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २

इलाहाबाद—वृहस्पतिवार—२५ दिसम्बर, १९३०

संख्या १, पूर्ण संख्या १३

क्या शाह अमानुल्ला फिर अफ़ग़ानिस्तान के सम्राट होंगे ?

गवर्नमेण्ट का कहना है 'हिंसात्मक क्रान्ति प्रचण्ड रूप धारण कर रही है'

पंजाब-गवर्नर पर गोलियों की वर्षा :: पुलिस अफ़सर की मृत्यु!

प्रेस ऑर्डिनेन्स और भी भयंकर रूप में पास किया गया !!!

किसानों पर अत्याचारों का पहाड़ ढाया जा रहा है !

(२४ वीं दिसम्बर की रात तक आए हुए 'भविष्य' के खास तार)

—बम्बई में विदेशी कपड़े पर वाल्गिट्यर और देश-सेविकाएँ आज पिकेटिंग कर रही हैं। मैमन मुहल्ले में तीन वाल्गिट्यरों ने विदेशी कपड़े की लॉरी के सामने खड़े होकर उसे रोक लिया था, पर वे ८॥ बजे गिरफ़्तार कर हवालात में भेज दिए गए। मोटर ड्राइवर ने पहले तो वाल्गिट्यरों की प्रार्थना पर ध्यान न दिया, परन्तु जब भीड़ एकत्र हो गई तब वह लॉरी छोड़ कर भाग गया। वाल्गिट्यर लॉरी पर पहरा दे रहे हैं। बाद में पुलिस ने वहाँ पहुँच कर वाल्गिट्यरों को गिरफ़्तार कर लिया और भीड़ को लाठियों से भग दिया।

ऑर्डिनेन्सों के भूतों की पुनरावृत्ति

नई दिल्ली का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि लॉर्ड इर्विन ने कुछ परिवर्तन करके प्रेस-ऑर्डिनेन्स और अनधिकृत पत्र ऑर्डिनेन्स फिर से पास कर दिए हैं। उन्होंने लगानबन्दी के सम्बन्ध में भी एक नया ऑर्डिनेन्स जारी किया है। प्रेस-ऑर्डिनेन्स में जो परिवर्तन किए गए हैं, उनमें से मुख्य निम्न प्रकार हैं:—

(१) १८वीं धारा में एक विधान जोड़ा गया है, जिसके अनुसार उन लोगों को दण्ड दिया जा सकेगा, जो अनधिकृत इशतहारों और समाचार-पत्रों का प्रचार करते हैं।

(२) प्रेसों से ४थी धारा के अनुसार जो ज़मानत ली जायगी, उसका केवल कुछ ही अंश ज़ब्त करने के निर्णय का अधिकार प्रान्तीय गवर्नमेण्टों को दिया गया है।

(३) १६वीं धारा में जो परिवर्तन हुआ है, उसके अनुसार निश्चित श्रेणी के व्यक्तियों को विरोधपूर्ण ख़बरों का प्रचार रोकने और उन्हें छीनने का अधिकार दिया गया है।

—जलगाँव तालुके की काँड्ग्रेस कमिटी के पाँचवें डिक्टेटर श्री वैद्य उस समय गिरफ़्तार कर लिए गए, जब वे एक सभा में चौथे डिक्टेटर को ६ माह की सज़ा होने पर बर्दाई दे रहे थे। श्री० वैद्य ने स्वयं अपने को पाँचवाँ डिक्टेटर घोषित किया और पुलिस से काँड्ग्रेस ऑफ़िस की चाबी अपने सेक्रेटरी को देने की प्रार्थना की। चाबी न देने पर वे काँड्ग्रेस का ताला खोलने के लिए सेक्रेटरी के साथ आगे बढ़े और गिरफ़्तार कर लिए गए।

—अजमेर की जेल में राजनीतिक कैदी लक्ष्मी-नारायण की हालत अत्यन्त चिन्ताजनक है। कहा जाता है कि उसने कालकोठरी में जहाँ वह पाँच दिन से कैद है, पाज़ाना-पेशाब तक बन्द कर लिया है। मालूम हुआ

—लन्दन के 'डेजी हेरल्ड' का पेशावर-स्थित सम्वाददाता लिखता है, कि अमानुल्ला को फिर काबुल की गद्दी पर बिठाने की कोशिशें की जा रही हैं। सुलेमान खेल नामक स्थान के अफ़ग़ानी

सम्राट नादिरशाह के विरुद्ध हो गए हैं, और वे नादिर-शाह से मोरचा लेने की तैयारी कर रहे हैं। वहाँ के गवर्नर ने गद्देज़ में अफ़ग़ानों की जो जिर्गा की थी, उसमें लोगों ने साफ़ तौर से अमानुल्ला के प्रति सहाय-भूति दिखाई थी। अफ़ग़ान लोगों का कहना है, कि अमानुल्ला के बाद उनके छोटे भाई इनायतुल्ला को गद्दी मिलनी चाहिए थी। नादिर ख़ाँ ज़बरदस्ती शासक बन बैठा है।

—उन ४७ व्यक्तियों का मामला, जो २५ सितम्बर को चिरनेर के गोलीकाण्ड के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, कल पानवेल स्पेशल मैजिस्ट्रेट मि० सोनलकर की अदालत में पेश हुआ। अभियुक्तों पर दण्ड-विधान की ३०२वीं धारा (हत्या) और १४०वीं-१४८वीं और ३६२वीं धाराओं (डकैती) का अभियोग लगाया गया है। मैजिस्ट्रेट ने दो अभियुक्तों को ज़मानत पर छोड़ने की प्रार्थना रद्द कर



अफ़ग़ानिस्तान के देशभक्त सम्राट (भूतपूर्व) अमानुल्ला ख़ाँ है कि एक दूसरे राजनैतिक कैदी जमालुद्दीन मख़मूर ने भी अनशन प्रारम्भ कर दिया है।

—बम्बई की लिज़ायत कमीशन एजेण्ट्स एसोसिएशन ने शोलापुर के अभियुक्तों को, जिन्हें फाँसी की सज़ा दी गई है, क्षमा प्रदान करने की अपील की है।

दी है। गवाहों में पहला सर्किट-इन्स्पेक्टर था, जिसने घटनास्थल का नक्शा, बहुत से पञ्चनामे और ख़ाली कारतूस पेश हुए। फ़रिस्ट रेज़र शिवराम की गवाही हो चुकने पर मामला दूसरी तारीख़ के लिए स्थगित कर दिया गया।

—मनीपुरी का समाचार है कि श्रीमती जीवलाल दुवे को एक साल की सादी कैद की सजा दी गई। श्रीमती जी 'सी' श्रेणी में रखी गई हैं, किन्तु उनके पति श्रीयुत जीवलाल दुवे 'ए' श्रेणी में रखे गए हैं।

—मनीपुरी के रहस्य श्रीयुत बोहरे किसोरीलाल, जो जिला कॉङ्ग्रेस कमिटी के ज्ञानानची थे, गत १५ वीं दिसम्बर को गिरफ्तार कर लिए गए। शहर में पूर्ण हड़ताल मनाई गई। जुलूस भी निकाला गया।

—कानपुर जिला कॉङ्ग्रेस कमिटी के 'डिप्टेटर' पण्डित रामलाल पाण्डे १७ दिसम्बर को गिरफ्तार कर लिए गए।

—लुधियाना का समाचार है कि गत १६वीं दिसम्बर को श्रीमती सरस्वती देवी को, जो एक सिविल इंजीनियर की पत्नी हैं, और श्रीमती शान्ति देवी को, पुलिस एक्ट की ३२वीं धारा के अनुसार २५, २५ रु० जुर्माना किया गया। जुर्माना न देने पर उन्हें एक-एक माह की कैद की सजा भोगनी पड़ेगी।

—१८ दिसम्बर को नई दिल्ली के ६ स्वयंसेवक तथा पुरानी दिल्ली की ८ महिलाएँ शराब की दुकान पर धरना देने के अपराध में गिरफ्तार की गईं।



बम्बई की श्रीमती विद्यागौरी पुरुषोत्तमदास फाडिया, जो हाल ही में विलेपार्ले पर गिरफ्तार हुई हैं।

—केरल प्रान्त की 'युद्ध-समिति' के डिप्टेटर श्रीयुत माधवन तथा अन्य तीन नेताओं को, जो कि १३ दिसम्बर को कलेक्टर की आज्ञा के विरुद्ध जुलूस निकालने तथा सभा करने के अपराध में गिरफ्तार किए गए थे, छः-छः महीने की कड़ी सजा दी गई है।

—पटना के एक उरसाही और प्रधान कार्यकर्ता श्रीकृष्ण सिंह को गैर-कानूनी जुलूस निकालने का प्रोत्साहन देने के अपराध में, तारीख १८ दिसम्बर को १ साल की कड़ी सजा का हुक्म सुनाया गया है।

—बेलगाँव की खबर है कि १७ वीं दिसम्बर को वहाँ के ४२ स्वयंसेवक गिरफ्तार कर लिए गए। १८ तारीख को ४१ स्वयंसेवकों का एक जत्था प्रभात फेरी देने के अपराध में भी गिरफ्तार किया गया है।

—तामलुक (बङ्गाल) से खबर आई है कि वहाँ के बहुत से स्वयंसेवक नमक बनाने के अपराध में १८ दिसम्बर को गिरफ्तार किए गए हैं।

—गत १६वीं दिसम्बर को, लखनऊ कॉङ्ग्रेस कमिटी के एक प्रधान कार्यकर्ता श्रीयुत कृष्णकुमार श्रीवास्तव दो अन्य कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ गिरफ्तार कर लिए गए।



—खबर है कि लगानबन्दी के सम्बन्ध में इटावे में ५० गिरफ्तारियाँ हुई हैं। विदेशी वस्त्रों पर पिकेटिङ्ग करने के सम्बन्ध में भी वहाँ ३०० गिरफ्तारियाँ हुई हैं।

—अमृतसर में जो ५ महिलाएँ गिरफ्तार की गई थीं, उनके सम्बन्ध में विशेष जाँच करने पर मालूम हुआ है कि वे बाजारों में जाकर लोगों से विदेशी वस्त्र परित्याग करने के लिए कह रही थीं। फल-स्वरूप कुछ लोगों ने अपने विदेशी कपड़े के साफे उन्हें दे डाले।

एक सप्ताह में ५० पी० में ४७५ गिरफ्तारियाँ
तारीख १७वीं दिसम्बर को बनारस से खबर आई है कि इस सप्ताह वर्तमान आन्दोलन के सम्बन्ध में संयुक्त प्रान्त में ४७५ गिरफ्तारियाँ हुई हैं, गिरफ्तारियों की कुल संख्या ६,६१२ तक पहुँची गई है।

श्री० रामदास गाँधी फिर गिरफ्तार

सूरत का १६वीं दिसम्बर का समाचार है कि महाराम गाँधी के पुत्र श्रीयुत रामदास गाँधी, फिर गिरफ्तार कर लिए गए हैं। मदवाद गाँव में एक भाषण देने और गैर-कानूनी नमक बेचने के सम्बन्ध में आपकी गिरफ्तारी हुई है।

पुलिस की गोलियों के शिकार

सारन ज़िले के भोर थाने में जो गोली चली थी, उसके सम्बन्ध में खबर है कि आहतों में से ३ छपरा अस्पताल में मर गए। १० मनुष्यों की अवस्था नाजुक है!

एक सत्याग्रही का बलिदान

लाबा लाखुराम, पञ्जाब के मान्टगोमरी-जेल में ६ दिनों के अनशन के बाद स्वर्ग सिधार गए। उनकी मृत्यु के विषय में गवाही देते हुए, उसी जेल से छूटे हुए स्वामी पूर्णानन्द ने कहा है, कि लाबा लाखुराम ने जेल के कष्टों के कारण अनशन किया था। वे धार्मिक प्रवृत्ति के आदमी थे। वे रोज अपनी छोलदारी में ईश-प्रार्थना किया करते थे। नए जेलर के आने पर वह छोलदारी उतार ली गई। यही उनके अनशन का कारण था। अनशन करने पर उन्हें कालकोठी में डाल दिया गया। वहाँ अनशन और कठोर शीत के कारण अकड़ कर उन्होंने प्राणान्त कर दिया।

बङ्गाल के मुस्लिम-कवि गिरफ्तार

बङ्गाल के प्रतिष्ठित मुस्लिम कवि काज़ी नज़रुल-इस्लाम को १६वीं दिसम्बर को ६ मास की कड़ी सजा दी गई है। आपने "प्रलय-शिक्षा" नामक एक पुस्तक लिखी है। मैजिस्ट्रेट ने कहा कि यह पुस्तक राज विद्रोह-हात्मक है और नवयुवकों को सरकार के विरुद्ध उभाड़ने की दृष्टि से लिखी गई है।

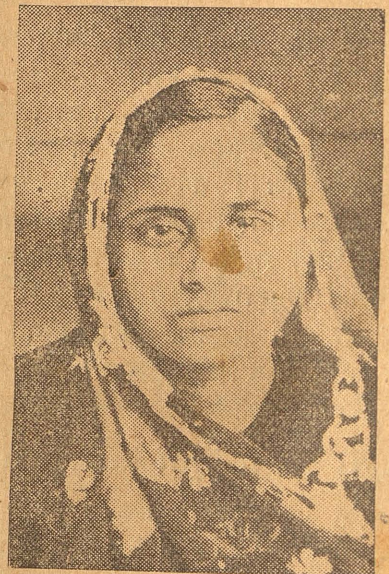
इन महिलाओं ने वहीं पर उनमें आग लगा दी। खबर पाकर पुलिस के एक सब-इन्स्पेक्टर वहाँ आ पहुँचे, और अपनी छड़ी से आग बुझाने का यत्न करने लगे। किन्तु संयोगवश स्वयं उनके साफे में आग की एक चिनगारी जा लगी। इन्स्पेक्टर साहब ने इन महिलाओं को तथा कुछ अन्य लोगों को पुलिस-एक्ट की ३४वीं धारा के अनुसार गिरफ्तार कर लिया।

—रोहतक का समाचार है कि पण्डित श्रीराम शर्मा को, जो कॉङ्ग्रेस के एक मुख्य नेता और अखिल भारतवर्षीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के सदस्य हैं—८ महीने के मामले के बाद, गत १५ दिसम्बर को दो अभियोगों पर डेढ़ साल की कैद और १०० जुर्माने की सजा दी गई है।

—हवड़ा का समाचार है कि कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता श्रीयुत कार्तिकचन्द्र दत्त गत २०वीं दिसम्बर को, एक पार्क में टहलते समय गिरफ्तार कर लिए गए। आप हाल ही में ६ महीने की सजा भोग कर छूटे थे। आपके साथ दो स्वयंसेवक भी गिरफ्तार किए गए हैं।

—लायलपुर का समाचार है कि बाल-भारत-सभा के अध्यक्ष मास्टर मङ्गललाल को ४ माह की सादी कैद की सजा दी गई है। उन्हें ३ साल के लिए रिकॉर्मेटरी में भेजने की आज्ञा दी गई है।

—लायलपुर का एक समाचार है कि गोजरा के डिप्टेटर श्रीयुत लुनीलाल को गत १८वीं दिसम्बर को ३ माह की कड़ी कैद और ३० रुपए जुर्माने की सजा दी गई है।



बम्बई की श्रीमती लक्ष्मीबाई गिरधरलाल हेमदेव—जिन्हें विदेशी वस्त्रों की दुकान पर धरना देने के अपराध में ४ मास का दण्ड प्रदान किया गया है।

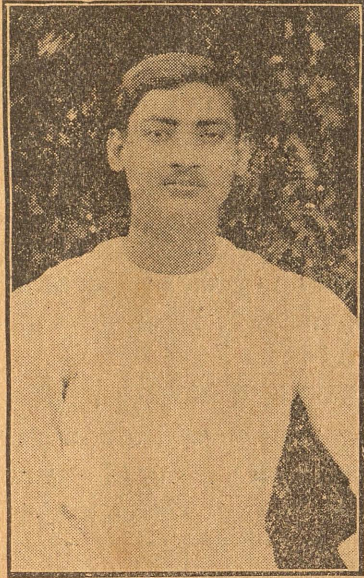
—रुड़ का समाचार है कि वहाँ गत १७वीं दिसम्बर को, एक १४ वर्ष के लड़के को मैजिस्ट्रेट ने एक साल की कैद की सजा दी है।

—लुधियाना में पुलिस-एक्ट की ३२वीं धारा काम में लाई जा रही है। गत २० दिसम्बर को वहाँ ८ स्वयंसेवक गिरफ्तार किए गए जिनमें ४ महिलाएँ थीं। २१ दिसम्बर को फिर ४ महिलाएँ, विदेशी वस्त्र के वहिष्कार के सम्बन्ध में गिरफ्तार की गईं। इनमें चौथी महिला वहाँ के प्रसिद्ध कवि श्री० अकबर की माता थीं।

—सूरत का २१वीं नवम्बर का समाचार है कि रणदेर कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्रीयुत मङ्गललाल कल्याण-भाई, अपने हाल के दिए गए भाषण के सम्बन्ध में गिरफ्तार कर लिए गए हैं।

—बुलन्दशहर का २१वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ ४ कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिए गए हैं गिरफ्तार किए जाने वालों में, खजुरा कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्रीयुत बालमुकुन्द गुप्त वकील, श्रीयुत आनन्द स्वरूप बिस्मिल के पिता और बहिन तथा वहाँ के स्थुनिसिपल कमिशनर पं० नानकचन्द हैं।

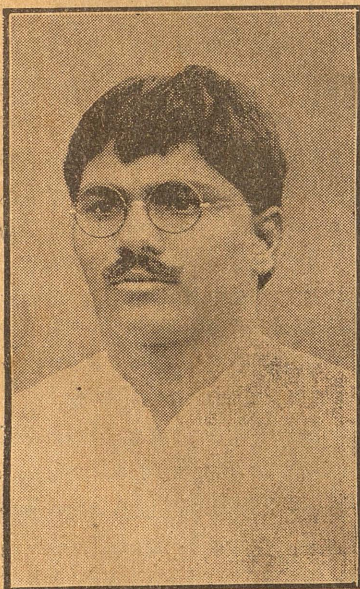
—लुधियाना का २०वीं दिसम्बर का समाचार है कि श्रीमती शान्तिमागर तथा कुछ अन्य लोग गिरफ्तार कर एक मोटर लॉरी में कोर्ट पहुँचाए गए। पाँच बजे शाम को वे प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट मि० घोष के सामने पेश की गईं, जिन्होंने उन्हें जमानत पर छोड़ने की अनुमति दे दी। किन्तु उन्होंने जमानत देना अस्वीकार किया। अब वे ज़िला मैजिस्ट्रेट के सामने पेश की जायेंगी।



मुजफ्फरनगर के वकील श्री० ब्रह्मप्रकाश शर्मा, एम० एस० सी०, पल० पल० बी०, जिन्हें ६ मास का कारावास और ५० रु० जुर्माने की सजा हुई है।

भीड़ पर घोड़े दौड़ाए गए

गत १८वीं दिसम्बर को कलकत्ते में ८० स्वयंसेवकों और २५ महिलाओं ने धरना दिया। एक मुसलमान व्यापारी के शिकायत करने पर एक गोरे सर्जेंट ने उन स्वयंसेवकों पर डण्डे बरसाए। कई स्वयंसेवक घायल हुए और १५ गिरफ्तार किए गए। इस पर वहाँ बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। कहा जाता है कि पुलिस ने भीड़ पर घोड़े दौड़ाए।



देहरादून के श्री० एम० त्यागी, जिन्हें बिजनौर के पंडीशनल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने १०८ वीं धारा के अनुसार एक वर्ष का कारावास दण्ड प्रदान किया है।

—कानपुर काँग्रेस कार्यकर्त्ता श्रीमती शान्तादेवी को इटावा के मैजिस्ट्रेट ने ३ मास की कड़ी कैद की सज़ा दी है। आप इटावा जेल में रक्की गई हैं।

शहर और ज़िला

इलाहाबाद में विद्यार्थी कॉन्फ्रेंस

इलाहाबाद में २१वीं दिसम्बर को 'विद्यार्थी-समिति' की अध्यक्षता में और श्री० पुरुषोत्तमदास जी टण्डन के सभापतिव में विश्वभर पैसेस में एक सभा हुई थी।

कॉन्फ्रेंस ने एक प्रस्ताव द्वारा गवर्नमेण्ट के शिक्षा-संस्थाओं की सहायता बन्द करने के कार्य का विरोध किया। कॉन्फ्रेंस की सम्मति में गवर्नमेण्ट को संस्थाओं की सहायता बन्द करने का कोई अधिकार न था, क्योंकि विद्यार्थियों के माता-पिता टैक्स देते हैं और उन्हें अपनी संस्थाओं का खर्च माँगने का तथा अपने कार्य-स्वातन्त्र्य की रक्षा का पूर्ण अधिकार है। एक दूसरे प्रस्ताव द्वारा कॉन्फ्रेंस ने यू० पी० की महिला शिक्षा-समिति के उस कार्य का विरोध किया, जिसमें श्रीमती उमा नेहरू से कॉलेज की सहायक मन्त्रिणी के पद से इस्तीफा देने की प्रार्थना की गई है। एक तीसरे प्रस्ताव में शिक्षकों और विद्यार्थियों को यह चेतावनी दी गई है, कि यदि वे भविष्य में स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग न करेंगे, तो उन पर पिकेटिङ्ग किया जायगा। विद्यार्थियों ने यह भी निश्चय किया, कि बड़े दिनों की छुट्टियों के बाद ६ जनवरी को हर एक संस्था पर फिर से राष्ट्रीय झण्डा फहराया जाय।

अन्त में श्री० पुरुषोत्तम दास टण्डन ने एक जोशीली वक्तृता दी, जिसमें उन्होंने इस सिद्धान्त का घोर विरोध किया कि 'विद्यार्थियों को राजनीति में भाग न लेना चाहिए।' उन्होंने दूसरे देशों के इतिहास की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, कि किसी देश ने बिना युवकों और विद्यार्थियों की सहायता के उन्नति नहीं की। उन्होंने कहा कि किसी भी दृष्टि से देखा जाय शिक्षा राजनीति से अलग नहीं जा सकती। 'इलाहाबाद यूनीवर्सिटी मेगज़ीन, में प्रकाशित इस विचार की, कि 'यूनीवर्सिटी के अन्दर शान्ति और आराम होना चाहिए' विवेचना करते हुए आपने कहा कि यूनीवर्सिटी क्लब, सिविल हस्पताल या ऋषियों की कुटी नहीं है, जहाँ 'शान्ति और आराम' की आवश्यकता पड़ती है। यूनीवर्सिटी वह मैदान है, जहाँ युवकों को जीवन के आदर्श बनाने की शिक्षा दी जाती है। शिक्षा का उद्देश्य 'शान्ति और आराम' नहीं, बल्कि दृष्टिकोण को दूरदर्शी बनाना और आत्मा का उद्धार करना है। साधारण समय में विद्यार्थियों को अध्ययन और मनन में ही अपना समय व्यतीत करना चाहिए। परन्तु असाधारण समय में तो उन्हें अपना क्रम बदल कर कार्यक्षेत्र में कूद पड़ना चाहिए।

राष्ट्रपति की सास को ६ माह की कैद

नई दिल्ली का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ दो पुरुष और ६ महिला स्वयंसेविकाओं को, जिनमें पं० जवाहरलाल की सास श्रीमती राजपति कौल भी सम्मिलित हैं—६-६ महीने की कड़ी कैद की सज़ा दी गई है। श्रीमती राजपति कौल 'ए' श्रेणी में रक्की गई हैं।

—बाहौर का समाचार है कि गत १८वीं दिसम्बर को 'बन्देमातरम्' के सम्पादक लाला ठाकुरदास गिरफ्तार कर लिए गए। गिरफ्तारी १० दिसम्बरके 'भगत-सिंह' नामक एक अग्रलेख के सम्बन्ध में हुई है। उन पर राजद्रोह का अभियोग लगाया गया है।

—इलाहाबाद के एक १६ वर्षीय नवयुवक पण्डित कमलनारायण मालवीय १८ दिसम्बर को राज-विद्रोह के अपराध में गिरफ्तार कर लिए गए।



विदेश

—इस साल की मर्दुमशुमारी से पता चलता है कि इङ्ग्लैण्ड में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या १५ लाख अधिक है। सन्, १९२४ की मर्दुमशुमारी में स्त्रियों की संख्या पुरुषों की अपेक्षा १६ लाख अधिक थी।

—पेशावर का समाचार है कि काबुल के बादशाह नादिरशाह ने बचा-सक्का के ४१६ साथियों को छोड़ दिया है। इन लोगों ने बादशाह के विरुद्ध ग़दर करने का प्रयत्न किया था। इनके मुखिया को फाँसी दी जा चुकी है।

लङ्काशायर में हड़ताल की सम्भावना

आगामी ५ जनवरी से लङ्काशायर की मिलों में एक नई प्रणाली शुरू की जाने वाली है, जिसके अनुसार हर एक मज़दूर को अधिक कर्यों का निरीक्षण करना पड़ेगा। सुनते हैं कि वहाँ के मज़दूर इस प्रबन्ध से बहुत असन्तुष्ट हैं और यदि ठीक समझौता न किया गया, तो इससे विकट हड़ताल हो जाने की सम्भावना है। यह नया प्रबन्ध वर्तमान औद्योगिक शिथिलता के कारण किया गया है।

अमेरिका के बैङ्कों का दिवाला

वर्तमान औद्योगिक शिथिलता के कारण अमेरिका के कई बैङ्कों का दिवाला निकल गया है। हाल ही में खबर आई है कि १६वीं दिसम्बर को १५ बैङ्क और बन्द हो गए।

—पण्डित हृदयनाथ कुञ्जरू, जो कि दक्षिण अफ्रीकावासी भारतीयों के अधिकारों का समर्थन करने के लिए विलायत गए हुए हैं, १६ दिसम्बर को लन्दन पहुँच गए।

इङ्ग्लैण्ड में फाँसी की सज़ा उठाने का प्रयत्न

लन्दन का १२वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ की उस कमिटी ने, जो फाँसी के दण्ड पर विचार कर रही थी, इस बात की सिफारिश की है कि ५ वर्षों के लिए वहाँ से फाँसी की सज़ा एकदम रोक दी जाय। यदि पार्लामेण्ट पूर्णतया मृत्यु-दण्ड उठाना स्वीकार न करे, तो कम से कम २१ वर्ष से नीचे के व्यक्ति को फाँसी कदापि न दी जाय और स्त्री अपराधियों के प्रति विशेष दया दिखाई जाय। उसने सम्राट से भी इस बात की प्रार्थना करने का विचार किया है, कि वे ऐसे अपराधियों के प्रति विशेष दया दिखाया करें।

—'सण्डे डिस्पैच' को विश्वस्त-सूत्र से पता लगा है कि लॉर्ड विलिङ्गटन, अपनी वृद्धावस्था के कारण, अस्थायी रूप से वायसराय के पद पर आ रहे हैं। तो भी यह आशा की जाती है कि भारत की दशा सुधरने तक वे अवश्य यहाँ रहेंगे।

—लन्दन से २१वीं दिसम्बर को मौलाना मुहम्मद अली की सख्त बीमारी के समाचार आए हैं। उनकी वर्तमान दशा चिन्ताजनक है। उनकी स्त्री और मौलाना शौकत अली उन्हीं के साथ हाईड पार्क होटल में ठहरे हुए हैं। बाद का समाचार है कि मौलाना साहब की तबीयत कुछ सुधरी है, किन्तु तो भी हालत ख़तरनाक है।



देश के प्राङ्गण में

—“हिन्दुस्तान टाइम्स” ने अपनी ज्वत् की हुई २०००) रुपयों की जमानत के विषय में जो अपील की थी वह १६ दिसम्बर को लाहौर हाईकोर्ट ने खारिज कर दी।

—पश्चिम भारतीय लिबरल सङ्घ ने शोलापुर के अपराधियों को क्षमा प्रदान करने के विषय में १६ दिसम्बर को बम्बई में एक प्रस्ताव पास किया है। इस प्रस्ताव की नकल वाइसराय को भेज दी गई है।

बम्बई में “मोतीलाल-दिवस”

१६ दिसम्बर को बम्बई के निवासियों ने “मोतीलाल-दिवस” मनाया था। शहर में कई जुलूस निकाले गए जिनमें फूलों से सुसज्जित पण्डित जी की तस्वीर निकाली गई। हिन्दू तथा जैन मन्दिरों में पूजा-पाठ तथा प्रार्थनाएँ की गईं; और आज़ाद मैदान में पण्डित जी के आरोग्य के लिए प्रार्थना की गई। बम्बई की सारी जनता ने इस में भाग लिया।

श्रीयुत पटेल मेज़ से नीचे गिर पड़े

कोयम्बटूर की खबर है कि १६वीं दिसम्बर को, जब वहाँ के सिविल सर्जन श्रीयुत पटेल का निरीक्षण कर रहे थे तब अकस्मात् श्रीयुत पटेल टेबल पर से नीचे गिर पड़े। कहा जाता है कि श्रीयुत पटेल एक मेज़ के ऊपर लिटाए गए थे जो कि ३॥ फीट ऊँची थी। अकस्मात् मेज़ के सिरहाने का टुकड़ा टूट गया और श्रीयुत पटेल नीचे गिर पड़े। आपको विशेष चोट नहीं आई, पर इससे आप को धक्का बहुत लगा।

सत्याग्रही किसानों को पठानों की धमकी

—अहमदाबाद की खबर है कि बोरसद ताल्लुके के उन किसानों पर, जोकि अपनी जमीन छोड़ कर अब बरोदा स्टेट के विश्रामपुरा गाँव में जा बसे हैं, कुछ पठानों ने धावा किया। इन किसानों की ज्वत् की हुई जमीन को इन पठानों ने सरकार से खरीदा है। पर इन किसानों ने अपने खेतों का अन्न काट लिया था, इस पर उन्होंने उनको धमकाया और हवा में गोबरियाँ भी चलाईं। इस पर बहुत सी भीड़ इकट्ठी हो गई और सब पठान वहाँ से भाग गए।

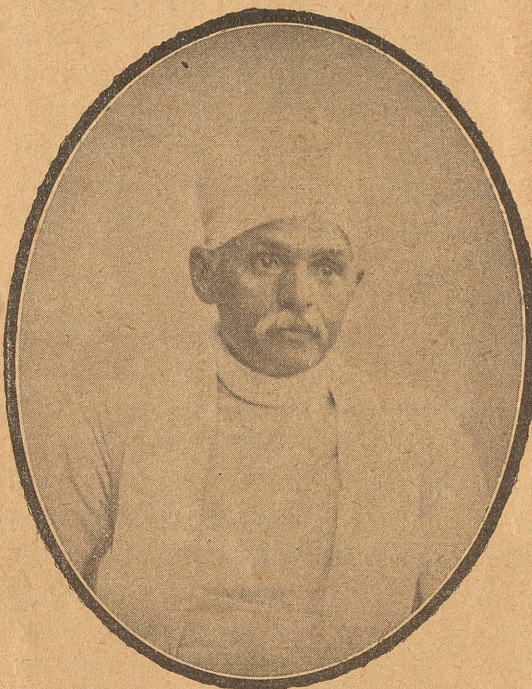
—१७ दिसम्बर को कानपुर की १६ महिलाएँ, जो पिकेटिंग के अरराध में गिरफ्तार की गई थीं, सज़ा भुगत कर जेल से रिहा हो कर आईं। लोगों ने सन्ध्या को उन्हें जुलूस बना कर घुमाना निश्चय किया। जुलूस घूम कर जब माल रोड की ओर बढ़ा तो पुलिस ने उसे रोक दिया। कुछ समय बाद उन्होंने रिहा की हुई महिलाओं को जाने दिया। और सब लोग वहाँ से जबरन हटा दिए गए।

—विदेशी वस्त्र-वहिकार के सम्बन्ध में १६ दिसम्बर को लखनऊ की महिलाओं ने चूड़ी-दिवस मनाया। शहर के मुहल्लों में महिला स्वयं सेविकाओं ने चक्कर लगाया और घर-घर विदेशी वस्त्र वहिकार के प्रतिज्ञा-पत्रों पर हस्ताक्षर कराए। जो हस्ताक्षर करने से इनकार करता था उन्हें वे चूड़ियों का उपहार देती थीं।

—खबर है कि बाबूराव गेनू की मृत्यु के सम्बन्ध में, गत १६ दिसम्बर को बनारस में हड़ताल मनाई गई। एक जुलूस भी इस सम्बन्ध में निकाला गया था।

—सुना जाता है कि इस हफ्ते के अन्त तक पण्डित मोतीलाल जी नेहरू इलाहाबाद वापस आ जावेंगे।

पण्डित मालवीय जेल से रिहा कर दिए गए



महामना पं० मदनमोहन जी मालवीय

२३वीं दिसम्बर की रात्रि को पण्डित मदनमोहन मालवीय को पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट ने इलाहाबाद यूरोपियन सिविल हस्पताल में गवर्नमेण्ट का निर्णय सुनाया, जिसके अनुसार उनकी लगभग दो मास की सज़ा रद्द कर दी गई थी और उन्हें बीमारी के कारण शीघ्र ही रिहा कर देने की आज्ञा दी गई थी।

कहा जाता है पण्डित मालवीय की सब शिकायतें दूर हो गई हैं और उन्हें उसी समय घर जाने की आज्ञा दे दी गई थी, परन्तु सर्दी अधिक पड़ने के कारण उनके पुत्र पण्डित रमाकान्त मालवीय ने उन्हें रात्रि में घर ले जाना उचित न समझा। इसलिए वे २४ तारीख को सवेरे मोटर पर घर गए।

—खबर है कि गत १८वीं दिसम्बर को, दैनिक ‘तेज’ के डायरेक्टर श्रीयुत देशबन्धु गुप्त के मकान की ओर ‘तेज’ के प्रेस तथा ऑफिस की तलाशी ली गई। कोई सन्देशजनक वस्तु प्राप्त नहीं हुई।

—बम्बई का समाचार है कि वहाँ के चीफ प्रेजिडेन्सी मैजिस्ट्रेट ने उन लोगों के लिए, जिन्हें गत दृष्ट से हानि पहुँची थी, ७,२४,७१० ० की स्वीकृति दी है। ये रुपए ‘बी’ ‘सी’ और ‘डी’ वर्ड के केवल हिन्दुओं और मुसलमानों से वसूल किए जायेंगे। सरकारी नौकर और वे लोग जिन्हें सरकार की ओर से उपाधियाँ मिली हैं, इस अतिरिक्त कर से बचा दिए गए हैं।

—दिल्ली का १८ वीं नवम्बर का समाचार है, कि श्रीयुत खड्गबहादुर सिंह नेपाली, सिटी मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किए गए। उनके विरुद्ध अभियोग यह था, कि उनके पास सरकार द्वारा ज्वत् पुस्तिकाएँ प्राप्त हुई थीं, जिन्हें वे बाँटना चाहते थे। इसके अतिरिक्त कॉङ्ग्रेस की सहायता के लिए उन्होंने गुप्तों का एक स्वयंसेवक दल भी तैयार किया था। ८ गवाह पेश किए गए थे।

पञ्जाब सरकार को एक करोड़ की हानि

पञ्जाब सरकार के सामने एक कठिन समस्या उपस्थित है। उसे १ करोड़ रुपयों का घाटा सहना पड़ा है। कहा जाता है कि १० फ्री सदी कर की आनदनी बन्द हो जाने से ही यह घाटा हुआ है।

इसकी पूर्ति के लिए अतिरिक्त कर लगाना सम्भव नहीं है। अतएव इस घाटे की पूर्ति कुछ तो व्यय घटा कर की जायगी और कुछ प्रान्तीय बोन फ्रण्ड से ऋण लेकर की जायगी। गेहूँ और कपास की दर घट जाने से जो आर्थिक हानि हुई है, उसे भी पूरी करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

काश्मीर में अनिवार्य शिक्षा

काश्मीर दरबार ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है, जिसमें लिखा है, कि पार साल जो काश्मीर नरेश ने काश्मीर के सब शहरों में अनिवार्य तथा मुफ्त शिक्षा देने की घोषणा की थी उसके अनुसार श्रीनगर, ऊधमपुर, मीरपुर तथा सीरपुर की म्युनिसिपैलिटियों ने मुफ्त अनिवार्य शिक्षा देना आरम्भ कर दिया है। अब बारामुल्ला भी इसका कार्य शुरू करेगा।

डॉक्टर महमूद रिहा कर दिए गए

१८वीं दिसम्बर की शाम को भारतीय कॉङ्ग्रेस के सेक्रेटरी डॉक्टर महमूद नैनी जेल से छोड़ दिए गए। जेल में जाने से आप का वज़न २३ १/२ पौण्ड घट गया है। आप ने देश के लिए यह सन्देश दिया है।—“आगे बढ़े चलो, संशय दूर करो। अब अन्तिम प्रयत्न का अवसर है। वीर ही विजय पाते हैं।”

कानपुर में अतिरिक्त पुलिस

खबर है कि युक्त प्रान्त के गवर्नर ने इस बात की घोषणा की है, कि कानपुर ज़िले के निम्नलिखित स्थानों में, सन् १८६१ की पुलिस एक्ट के अनुसार, पुलिस की संख्या तीन महीने के लिए बढ़ा दी जाय। (१) कानपुर सिटी (२) पुलिस सर्किल नरवाला (३) पुलिस सर्किल विजहौर के अन्तर्गत—विजहौर, दुण्डुआ और सैवासु तथा भोगनीपुर पुलिस सर्किल के अन्तर्गत, गौरी खारन। पुलिस की संख्या बढ़ाने का कारण वहाँ की जनता का सरकार के प्रति असन्तोषजनक व्यवहार कहा जाता है।

—सेठ मञ्जनलाल जो धरसाना नमक-सत्याग्रह के सम्बन्ध में गिरफ्तार किए गए थे, जेल से छूट कर गत १७वीं दिसम्बर को अहमदाबाद पहुँच गए।

—मैमनसिंह के मैजिस्ट्रेट ने वहाँ के श्री० हेमचन्द्र घोष फ़कीरचन्द दास गुप्ता, आदि ६ नेताओं के नाम एक आज्ञापत्र निकाला है, जिसमें उन्हें मैमनसिंह के म्युनिसिपल टाउन में, भाषण देने या वर्तमान आन्दोलन में किसी प्रकार भाग लेने की मनाही की गई है।

—इलाहाबाद के ऐरोडोम के लिए एक हिन्दुस्तानी अधिकारी श्रीयुत शिवसुब्रह्मण्यम नियुक्त हुए हैं। आप को भारत की सरकार ने वायुयान-शिक्षा के लिए लन्दन भेजा था। आप दो वर्ष की शिक्षा के बाद हाल ही में लौट कर आए हैं।

—बारीसाल के कॉङ्ग्रेस नेता श्री० रजनीकान्त चटर्जी गत १८वीं दिसम्बर को दमदम जेल से छोड़ दिए गए।

—गत १७ वीं दिसम्बर को अहमदाबाद की महिलाओं ने वहाँ की कुछ दुकानों पर फिर धरना दिया। कहा जाता है कि उन दुकानों के मालिकों ने, अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध फिर विदेशी कपड़ा बेचना आरम्भ कर दिया था। इन महिलाओं के दिन भर अनशन करने और धरना देने के बाद उन व्यापारियों ने जमा माँग ली। कुछ ने जुमाने भी दिए। सबों ने फिर विदेशी वस्त्र न बेचने की प्रतिज्ञा की। एक व्यापारी ने, जिसने विदेशी कपड़े की नई दुकान खोली थी, उस दुकान को बन्द कर देने की प्रतिज्ञा की।

गोलमेज़ परिषद का भण्डाफोड़; वह केवल एक स्वाँग है

श्री प्रेस का विशेष सम्बाद्धता लन्दन से लिखता है कि, हिन्दू-मुस्लिम समझौता अभी तक नहीं हो सका है। अब लोग समझ गए हैं कि कॉन्फ्रेंस से कोई आशा करना व्यर्थ है। किन्तु प्रतिनिधि लोग चाहते हैं कि यह भण्डा फूटने न पाए। लोग यह न समझें, कि ये खाली हाथ लौट आए; इसलिए वे कुछ न कुछ लेकर ही लौटना चाहते हैं। उनका कहना है कि यदि प्रधान-मन्त्री हिन्दू-मुस्लिम समस्या को हल न करेंगे, तो लोग यह समझेंगे कि, परिषद केवल एक स्वाँग थी और कुछ नहीं।

यदि कुछ सप्ताहों के अन्दर, भारत को पूर्ण स्वाधीनता नहीं मिली, तो इस धारणा पर पक्का झुक जायगा कि उसे उसका अंश भी नहीं मिला। मि० मैकडॉनल्ड ने एक योग्य सभापति की तरह, और सभी कुछ किया है, कमिटियाँ बनाई हैं, भाषण दिए हैं, दावें दी हैं, किन्तु केवल एक बात उन्होंने नहीं की है। सरकार का रुख क्या है, यह वे शायद नहीं बताना चाहते। 'मैनचेस्टर गार्जियन' का कहना है कि जब तक मि० रेमजे मैकडॉनल्ड प्रधान-मन्त्री की हैसियत से कोई निश्चित उत्तर न देंगे; तब तक गोलमेज़ कॉन्फ्रेंस में चक्र-चक्र मचती ही रहेगी। बर्मा के विषय में जो बातें तय हो चुकी थीं, वह भी रद्द कर दी गई हैं। बात असल यह है कि बिना कुछ लिए, वे कुछ देना भी नहीं चाहते।

ज़मींदारों का अत्याचार

समाचार है कि नरवल वेन्द्र के ज़मींदार किसानों के प्रति अत्यन्त निर्दयता का व्यवहार कर रहे हैं। वहाँ की सत्याग्रह समिति ने ज़मींदारों को व्यर्थ छेड़ना उचित नहीं समझा था। किन्तु ज़मींदार अब जामें से बाहर हुए जा रहे हैं। हाथे नामक गाँव के एक ज़मींदार ने एक किसान को इतना मारा है कि उसकी पसली टूट गई। उसकी अवस्था नाजुक है। रामपुर के एक ज़मींदार ने भी इसी निर्दयता से एक किसान को पीटा है। उसकी भी अवस्था चिन्ताजनक है। इस प्रकार की एक नहीं, कितनी ही घटनाएँ सुनने में आ रही हैं।

—एक राजनैतिक कैंदी, जो हाल ही में अल्लोपुर जेल से छूट कर आया है, का कहना है कि वहाँ के राजनैतिक कैदियों को बड़ी-बड़ी तकलीफें भोगनी पड़ रही हैं। ऐसे जाड़े के मौसम में भी केवल एक बम्बल बिछाने और एक ओढ़ने के लिए दिया जाता है। कलकत्ता कॉन्फरेंस के सदस्य श्रीयुत विपिन बिहारी गाँगुली जैसे व्यक्ति को भी इन तकलीफों का सामना करना पड़ रहा है। इसके फलस्वरूप कितने ही सर्दों, खाँसी, इन्फ्लूज़ा आदि अनेक बीमारियों से पीड़ित हो रहे हैं। जेल के अधिकारियों ने सभी तीसरी श्रेणी के कैदियों के साथ जेल की पोशाक पहनने के लिए सख्ती की है।

—अजमेर का समाचार है कि गत १७ वीं दिसम्बर को सवेरे, पं० अर्जुनलाल सेठी के मकान की तलाशी करीब दो घण्टे तक ली गई। पण्डित जी इस समय अजमेर जेल में हैं।

—गत हिन्दू-मुस्लिम दूजे में ढाका के वकील बाबू प्रफुल्लकुमार बोस की हत्या करने तथा उनकी लाश छिपाने के अपराध में, सशस्त्रशस्त्री और मज़दूरइमान नामक दो सुसज्जमान अभियुक्तों द्वारा सुपुर्द किए गए हैं। ढाका सेशन जज के सामने जो ६ सुसज्जमान आग लगाने और दज़ा करने के अपराध में पेश किए गए थे, उनमें दो को छोड़ कर, शेष को ११ वर्ष से लेकर २ वर्ष तक की कड़ी कैद की सज़ाएँ दी गई हैं।

—दिल्ली २२ वीं दिसम्बर का समाचार है कि यहाँ के शराब की प्रसिद्ध दुकान मेसर्स भोलाशम एण्ड सन्स के सिवा इस दुकान में काम करने वाले कर्मचारियों के मकानों पर भी धरना दिया गया है। नौकर-चाकर या कोई भी इनके मकानों में नहीं जाने पाते। धरना देने का लीढ़ा महिलाओं ने उठाया है। खबर है कि उस दुकान के एक मुलाज़िम ने हस्तीक्रा दे दिया है। दुकान पर धरना देने के सम्बन्ध में कुछ गिरफ्तारियाँ भी हुई हैं। दुकान पर पुलिस का पहरा रहता है।

बिहार के सर्वस्व—बाबू राजेन्द्रप्रसाद रिहा कर दिए गए

पटना का २१ वीं दिसम्बर का समाचार है कि बाबू राजेन्द्रप्रसाद हज़ारीबाग जेल से, ६ महीने की सज़ा भोगने के बाद छोड़ दिए गए। आप उसी दिन सन्ध्या-समय पटना पहुँच गए।

किसानों ने लगान देने से इन्कार किया —“ईवनिंग न्यूज़” के पूना के सम्बाद्धता की खबर से मालूम होता है, कि इंचाककरण जी स्टेट के आज़रे तालुका के किसानों ने कर देना बन्द कर दिया है। किसानों का कहना है कि जब तक उनकी शिकायतें दूर न की जायँगी, तब तक वे कर नहीं देंगे।

खबर है कि स्टेट के अधिकारियों ने किसानों का यह हरादा सुन कर, नोटिस निकाली, और उन्हें दवाने का यत्न किया। किन्तु इससे स्थिति और भी अधिक खराब हो गई है।

दिल्ली में पुलिस और जनता में मुठभेड़

—१६ वीं दिसम्बर को दिल्ली की पुलिस ने कई स्वयंसेवकों को १४४ दफ़ा की अवज्ञा करने के अपराध में गिरफ्तार किया। जब वे इन स्वयंसेवकों को हवा-लात की ओर ले जा रहे थे, वहाँ बहुत सी भीड़ इकट्ठी हो गई और जनता और पुलिस में मुठभेड़ हो गई। पुलिस ने जनता पर लाठियाँ चलाई, जिससे करीब १२ मनुष्य घायल हुए हैं।

पुलिस पर गोली चली

सारन (बिहार) के कलेक्टर का कहना है कि भोर थाने में, जब पुलिस एक गैरक़ानूनी सभा को हटा रही थी, उस पर गोली चलाई गई। पुलिस के पास भी बन्दूकें थीं और उन्होंने भी गोबरियाँ चलाईं। कई पुलिस के सिपाही तथा भीड़ में के मनुष्य घायल हुए।

—खबर है कि राँची जेल से अनशन करने वालों को बलपूर्वक भोजन बिछाने की कोशिश की जा रही है। इस बलप्रयोग के कारण, महादेव सुनार और हलकारी साहु बेहोश हो गए, और वे स्ट्रेचर पर अस्पताल पहुँचाए गए थे। कहा जाता है कि जेल सुपरिण्टेंडेंट ने अनशन करने वालों को पाँटने की धमकी दी है।

—खबर है कि गुजरात के जेलों के अधिकारी, जेल के भिन्न-भिन्न वर्गों में ताले लगावा देना चाहते हैं, जिससे राजनैतिक कैंदी, आपस में भेंट न कर सकें। इस प्रस्ताव की कड़ी आलोचना की जा रही है।

गवर्नमेण्ट पर कॉङ्ग्रेस का आतङ्क कॉङ्ग्रेस की शक्ति बढ़ रही है, हिंसात्मक क्रान्ति ज़ोर पकड़ रही है।

हाल ही में भिन्न-भिन्न प्रान्तों की राजनैतिक अवस्था पर एक साप्ताहिक सरकारी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, जिसमें कहा गया है कि ऑर्डिनेन्सों की अवधि समाप्त हो जाने से परिस्थिति चिन्ताजनक हो रही है। युक्त प्रान्त में कॉङ्ग्रेस का बल बढ़ता जा रहा है। बिहार और उड़ीसा में विकेटिङ्ग फिर चिन्ताजनक रूप धारण कर रही है। सी० पी० की अवस्था भी विशेष सन्तोषजनक नहीं है। पञ्जाब में कॉङ्ग्रेस वालों का बल कम है, तो भी सिक्खों का एक दल उरपात करने पर तुल्ला हुआ है। बङ्गाल की दशा भी असन्तोषप्रद है।

प्रेस-ऑर्डिनेन्स के समाप्त हो जाने से, देशी पत्र भी भयानक रूप धारण कर रहे हैं। प्रेस-ऑर्डिनेन्स के पहले जैसी स्वतन्त्रता से लिखा करते थे, फिर उसी प्रकार लिख रहे हैं।

कलकत्ते में किए गए हत्याओं से पता चलता है कि हिंसावादियों का भी एक दल है; जिसे बाज़ मौके पर सफलता मिल जाया करती है। पुलिस उनके अत्याचारों को मिटाने की भरसक कोशिश कर रही है।

दिल्ली जेल में २५० राजनैतिक कैदियों का अनशन

श्रीयुत और श्रीमती सेन गुप्ता भी अनशन कर रही हैं

दिल्ली का २२ दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के ज़िला जेल में ४८ महिलाएँ तथा ‘ए’ और ‘बी’ श्रेणी के स्त्री-पुरुष कैदी अनशन कर रहे हैं। मालूम हुआ है, वहाँ २४ महिलाएँ, साधारण कैदियों के साथ रखी गई हैं, इसी से अनशन किया गया है। अनशन करने वाली महिलाओं में, श्रीमती सेन गुप्त, पं० जवाहरलाल की सास श्रीमती राजपति कौल आदि प्रतिष्ठित महिलाएँ भी सम्मिलित हैं।

पुरुषों में श्रीयुत सेन गुप्त, के० डी० कोहिली, मौजाना शराफत अली, श्री० खडगबहादुर सिंह आदि २५० के लगभग सज्जन हैं। श्रीमती पन्नावई और श्रीमती कौशल्या देवी की हालत नाजुक है। अनेक महिलाओं को ज़ै आना शुरू हो गया है। अधिकांश स्त्रियाँ बोल तक नहीं सकती हैं। नगर में इस समाचार से बड़ी सनसनी फैल गई है।

यरवदा जेल में ५०० राजनैतिक कैदियों का अनशन

पूना का २१ वीं दिसम्बर का समाचार है कि यरवदा जेल के ५०० सत्याग्रही कैदियों ने अनशन शुरू कर दिया है। कहा जाता है कि जेल में भोजन बनाने और परोसने का तरीका ठीक नहीं है। इसी का प्रतिवाद करने के लिए वहाँ के सत्याग्रही कैदियों ने २० वीं दिसम्बर को भोजन करना अस्वीकार कर दिया।

जेल के सुपरिण्टेंडेंट के कहने-सुनने पर करीब आधे कैदियों ने रात में भोजन किया। २१ वीं दिसम्बर को १०० सत्याग्रहियों ने अनशन तोड़ा है। पर शेष अभी अनशन कर ही रहे हैं। जेल के सुपरिण्टेंडेंट फिर इस विषय की जाँच करेंगे।

—लाहौर का २१ वीं दिसम्बर का समाचार है कि पञ्जाब के गवर्नर ने ‘असहयोग का वृच और महारमा गाँधी’ नामक चित्र असन्तोष फैलाने की आशङ्का से ज़ब्त करने की आज्ञा दे दी है।

(शेष पृष्ठ ७ वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)

‘राष्ट्रीयता के प्रचण्ड वेग को रोकने का व्यर्थ प्रयत्न न करो’

तलवार के बल से भारत पर शासन असम्भव है

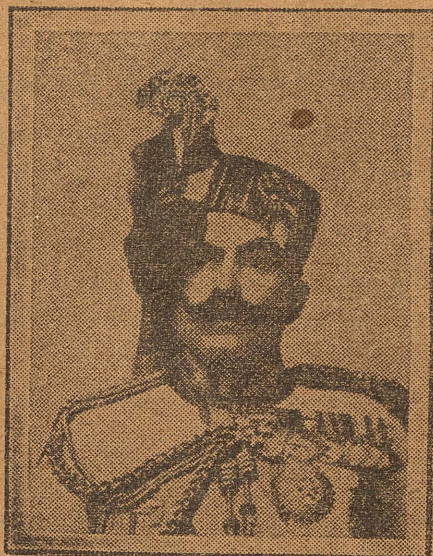
महाराजा बीकानेर का मि० चर्चिल को मुँहतोड़ उत्तर

लन्दन में मि० चर्चिल के भाषण के प्रत्युत्तर स्वरूप महाराजा बीकानेर ने १४वीं दिसम्बर को एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि सम्राट, साम्राज्य और भारत की सेवा के भाव से ही प्रेरित होकर रियासतों के और ब्रिटिश भारत के प्रतिनिधि, देशवासियों के विरोध करने पर भी, बहुत कुछ हानि उठा कर लन्दन आए हैं। विज्ञप्ति का सार नीचे दिया जाता है :—

“हमारा विश्वास है कि इस अवसर पर हमारा सब से बड़ा कार्य यह है कि हम भारत में शान्ति और सन्तोष फैलाने और उसे वैभव सम्पन्न बनाने का भरसक प्रयत्न करें। क्या कोई बुद्धिमान व्यक्ति इस बात पर विश्वास कर सकता है कि भारत का अधिकांश विचारवान जन-समुदाय नौकरशाही के स्थायी आधिपत्य से सन्तोषित रह सकता है या उसे तलवार और पशुबल के सहारे क़ानून में रक्खा जा सकता है? ऐसे स्वयं देखना राजनीति और ब्रिटिश उदारता के सर्वथा विरुद्ध है। अत्यन्त गूढ़ विचार के अनन्तर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि हमारे महान उद्देश्य की सिद्धि संयुक्त शासन (Federal constitution) प्रणाली की स्थापना द्वारा ही हो सकती है, जिसमें ब्रिटिश भारत और देशी रियासतें मिल कर एक वृहत भारत का रूप धारण कर लेंगी और दोनों प्रजा मिल कर एक ही से विचारों और कार्यों के सूत्र में बँध जायँगी। इसी महत् उद्देश्य की सिद्धि के लिए रियासतें अपनी सार्वभौम शक्ति का कुछ अंश संयुक्त गवर्नमेण्ट को देने के लिए तैयार हो गई हैं। क्योंकि उन्हें यह विश्वास हो गया है कि इसी प्रकार से वे शासन को सुरक्षित और स्थायी बना सकते हैं और सम्राट, साम्राज्य और देश की सेवा भी कर सकते हैं। हमारे ब्रिटिश-भारत के सहयोगी भी केवल ब्रिटिश भारत के लिए आदर्श शासन-प्रणाली की रचना का विचार त्याग कर विराट भारत का भाग्य निर्माण करने के लिए तैयार हो गए हैं, परन्तु हमसे कहा जाता है कि यदि हम अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सफल हो जायें, तो भारत पर कुछ ज़ज़्बाली लोग शासन करने लगेंगे, जो उसका क़र्ज़ बढ़ा करने से इनकार कर देंगे, क़ौज़ी हुकूमत द्वारा देश भर में आतङ्क फैला देंगे और इस प्रकार भारत में चीन-जैसे गृह-युद्ध का श्रीगणेश कर देंगे। मेरी समझ में नहीं आता कि कॉन्फ़ेरेन्स में उपस्थित विद्वान प्रतिनिधि कैसे कोई प्रणाली की रचना कर सकते हैं जिसके कारण साम्राज्य का पर्व हो जाय। सम्भव है ब्रिटिश व्यापार को आघात पहुँचे और उसका भारत के साथ सम्बन्ध चीण हो जाय। परन्तु हर एक देश का अस्तित्व और वैभव जितना आन्तरिक व्यापार पर निर्भर रहता है, उतना बाह्य व्यापार पर नहीं। यदि भारतीय क़र्ज़ बढ़ा करने से इनकार कर दें, तो इसमें भी उन्हीं की बलि होगी। उनके ऊपर अधिकांश में आन्तरिक क़र्ज़ और ब्रिटिश क़र्ज़ का बोझ है। और सचमुच में जिस समय हमारा सर्वस्व निष्ठावर हो रहा होगा, उस समय हमारी बुद्धि

और राजनैतिक योग्यता हमसे बिल्कुल कूच न कर जायगी। क्या यह बात तर्कयुक्त है, कि हम अपनी आँखें खोले हुए अपने देश को मट्टी में झोंक दें?

“हमसे यह भी कहा गया है कि यदि भारत की आकांक्षाएँ पूरी करने का प्रयत्न सफल कर दिया जायगा तो ब्रिटेन अपने राज्य-मुकुट में से एक अमूल्य रत्न खो देगा। यदि भारत को खोने का कोई सुगम मार्ग है तो वह एक विदेशी गवर्नमेण्ट के शासन की कोठरी के अन्दर भारतीय राष्ट्र की उन विराट और प्रलयङ्करी शक्तियों को कैद करना है, जिनकी



महाराजा बीकानेर

उत्ताल तरङ्गें भयङ्कर लहरें मार रही हैं। कॉन्फ़ेरेन्स को शक्तिशाली बनाने का इससे सरल उपाय नहीं है। यदि इन सङ्कीर्ण विचारों का प्रभाव बना रहा, तो केवल ब्रिटिश साम्राज्य ही अपनी आत्म-हत्या नहीं करेगा, बल्कि भारतीय रियासतों और ब्रिटिश भारत के राज्य-भक्तों को भी अपनी आत्म-हत्या करनी पड़ेगी।

“भारत को साम्राज्य के अन्तर्गत रखने का केवल एक ही मार्ग है, और वह यह है कि ब्रिटिश जनता, अपनी पार्लामेण्ट के सहारे अपने सब भय और सन्देह दूर कर दे और सभ्य और एक बड़े राष्ट्र की दूरदर्शी प्रजा की हैसियत से उसके उन सद्गुणों का अनुभव करे, जिनका बीज उसीने आरोपित किया है। और उसी भाव से प्रेरित होकर, जिससे साम्राज्य के स्तम्भ केनेडा और दक्षिण अफ़्रीका को शासनाधिकार दिए थे—भारत में स्थायी रूप से राष्ट्रीय तथा संयुक्त शासन की स्थापना कर भारतीयों को भी सन्तोषित करे।”

प्रधान-मन्त्री की मलहम-पट्टी

“मि० चर्चिल का भाषण शुरू से अखीर तक शैतानी से भरा है:: हम उन्हें अकेला छोड़ देंगे”

लन्दन का १२वीं दिसम्बर का समाचार है कि प्रधान-मन्त्री ने रीडिंग-टाउन-हॉल में भाषण देते हुए मि० चर्चिल के भाषण की धजियाँ उड़ाई हैं। उन्होंने कहा कि “मि० चर्चिल के कल के भाषण में बुद्धिमत्ता नहीं झलकती। हर एक व्यक्ति यह जानता है कि हमने भारतीयों को जो शिक्षा दी है, उन्हें जो राजनैतिक साहित्य—एडमण्ड बर्क के भाषण, मेकॉले के इतिहास, जॉन मॉले के राजनैतिक प्रबन्ध आदि—दिया है, उससे भारतीयों में जातीय, धार्मिक और भाषा सम्बन्धी भेद-भाव होते हुए भी, राजनैतिक जागृति उत्पन्न हो गई है और वे यह जान गए हैं, कि वे उस आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए ही, जो हमारी शिक्षा के कारण उनमें उत्पन्न हो गया है, अधिक शासनाधिकार माँगने के लिए बाध्य हुए हैं। ऐसे समय में, जैसा कि सदैव होता है, ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो बहुत जल्दी आगे दौड़ लगाना चाहते हैं। मेरी सम्मति से बहिष्कार अनावश्यक है। अभी तक जो राजनैतिक विद्रोह और क़ानून की अवज्ञा का आन्दोलन फैला हुआ है, उसने हमारे स्वराज्य देने के मार्ग में रोड़े अटकाए हैं। परन्तु यह सब होते हुए भी एक व्यावहारिक राजनीतिज्ञ सदैव शान्तिपूर्वक अपनी समस्याएँ हल किया करता है।

वे (गोलमेज़ के प्रतिनिधि) हमारे साथ राजनैतिक उत्थान के लिए परामर्श करने आए हैं। और भारत के अद्वितीय वायसराय, राजनीतिज्ञ की हैसियत से नहीं, बल्कि एक बुद्धिमान व्यक्ति की हैसियत से इस आन्दोलन का समर्थन करता है। वायसराय, जिसके हाथ में आज भारत के शासन की बागडोर है, मज़दूर-दल का नहीं है, वे ज़िबर-दल के भी नहीं हैं; वे अनुदार दल के हैं। और ऐसे अवसर पर, जबकि मुसलमान, सिक्ख, हिन्दू, अछूत, भारतीय ईसाई और ब्रिटिश व्यापारिक प्रतिनिधि गोलमेज़ के आस-पास बैठ कर अपनी माँगें पेश करने और विचार परिवर्तन करने में निमग्न थे, मि० चर्चिल ने एक ऐसा भाषण दिया है, जो शुरू से अन्त तक शैतानी से भरा हुआ है; जिसमें कोई योजना नहीं है और केवल अत्याचारी विजेताओं का विजितों पर वह अत्याचार चित्रित किया गया है जो वर्तमान राजनीति में कहीं दूँदे नहीं मिलता।

कॉन्फ़ेरेन्स को और उन लोगों को, जो गोलमेज़ कॉन्फ़ेरेन्स की असफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं और गत चार-पाँच सप्ताह से कॉन्फ़ेरेन्स की सफलता के कारण जिनका विद्रोह कम हो चला था, मि० चर्चिल ने फिर से वह अवसर प्रदान किया है, जिससे वे ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध भारत में फिर ज़हर उगलने लगेंगे। हम चर्चिल को अकेला छोड़ देंगे। मेरा विश्वास है कि हमने भारतीयों का इतना विश्वास प्राप्त कर लिया है कि मि० चर्चिल के इस भाषण का कोई असर नहीं हो सकता; परन्तु यदि वे हमारा उपदेश ग्रहण करने के लिए तैयार हैं तो हम यही कहेंगे कि अब वे कभी ऐसे भाषण की पुनरावृत्ति न करें।”

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

पंजाब गवर्नर पर गोलियों की वर्षा !

पुलिस अफसर की मृत्यु !! कई व्यक्ति घायल हुए !!!

लाहौर का २३वीं दिसम्बर का समाचार है कि जिस समय १ बज कर २० मिनट पर पंजाब के गवर्नर और पंजाब यूनीवर्सिटी के वायस चान्सेलर सर ज्योसेफ मायटमोरेन्सी यूनीवर्सिटी के उपाधि-वितरण उत्सव के उपरान्त सिनेट-हॉल से बाहर निकल रहे थे, उसी समय हॉल के अन्दर से अचानक छः गोलियाँ उनकी ओर दागी गईं। पहले निमन्त्रित व्यक्तियों और विद्यार्थियों ने समझा कि गवर्नर के स्वागत-स्वरूप किसी ने पटाझों के धड़ाके किए हैं, परन्तु शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि गवर्नर की हत्या करने के लिए उनकी ओर गोलियाँ छोड़ी गई हैं। इस भीषण काण्ड के घटित होते ही अन्दर के व्यक्ति अन्दर ही रोक लिए गए। जिस ओर से गोलियाँ छोड़ी गई थीं, उस ओर केवल विद्यार्थी थे। पुलिस ने पड़्यन्त्रकारी को उसी समय गिरफ्तार कर लिया। उसके साथ ही पुलिस ने एक विद्यार्थी को भी गिरफ्तार किया है। कहा जाता है पड़्यन्त्रकारी के पास एक रिवॉल्वर और कुछ फ्लाकी और भरे हुए कारतूस प्राप्त हुए हैं। गवर्नर को दो गोलियाँ लगी हैं एक पीठ में बाएँ पुट्टे के ऊपर, और दूसरी बाएँ हाथ में। पहला घाव केवल खूब पर हुआ है और दूसरा हाथ के गोश्त पर, गोली हड्डी तक नहीं पहुँची। गवर्नर शीघ्र ही पास के एक कमरे में चले गए, जहाँ कर्नल हार्पर ने मरहम-पट्टी कर दी। उसके बाद मोटर में वे मेयो अस्पताल गए और वहाँ पर उचित रूप से इलाज करने के उपरान्त वे मुँह में सिगरेट दाब कर गवर्नमेण्ट हाउस चले गए। दो पुलिस ऑफिसर भी, जो उत्सव के समय सिनेट-हॉल में उपस्थित थे, गोलियों से घायल हुए। सुक्रिया विभाग के इन्स्पेक्टर बुद्धसिंह वधवान के हाथ में गोली लगी, और वह हाथ को छेद कर दूसरी ओर निकल गई। सब-इन्स्पेक्टर चननसिंह के ऊपर और नीचे के दाँतों के बीच में से गोली पार हो गई और दाईं ओर के जबड़े में रुक गई। दिल्ली के लेडी हाइलैंड कॉलेज की लेडी डॉक्टर मैकडरमैट को भी एक गोली पुट्टे की मांस-पेशियों में लगी जो ६ बजे संध्या तक बाहर नहीं निकाली जा सकी। श्रीमती भटनागर को भी गोली से एक हल्की चोट आई। श्रीमती भटनागर को छोड़ कर शेष उसी समय मेयो अस्पताल भेज दिए गए। लेडी डॉक्टर मैकडरमैट और सब-इन्स्पेक्टर चननसिंह को सख्त चोटें आई हैं; उनमें से चननसिंह की ६½ बजे मेयो अस्पताल में मृत्यु हो गई।

गवर्नर को गोलियाँ ६ फुट की दूरी से मारी गई थीं। जिस समय अभियुक्त गोलियाँ छोड़ रहा था उसी समय तिब्बी पुलिस स्टेशन का सब-इन्स्पेक्टर अपनी जान हथेली पर रख कर बीच में रुक पड़ा और उसने अपनी ओर छोड़ी हुई दो गोलियाँ बचा कर अभियुक्त की कलाई पकड़ ली और अन्य सिपाहियों की सहायता से वे उसे अनारकली पुलिस-थाने में ले गए। वहाँ अभियुक्त ने बयानों में कहा है कि उसका नाम हरिकृष्ण है और वह सीमा प्रान्त स्थित मर्दन गाँव का रहने वाला है। सिनेट-हॉल में घुसने का कोई पास उसके पास नहीं था और न उसे उत्सव के अवसर पर कोई उपाधि ही मिली है। वह निमन्त्रित अभ्यागतों की

गैलरी में विदेशी कपड़े पहने बैठा था। उत्सव के अवसर पर पुलिस का कड़ा पहरा था और वे ही व्यक्ति अन्दर जा सकते थे, जिनके पास अन्दर जाने का पास था; परन्तु इतना इन्तज़ाम होने पर भी यह भीषण काण्ड हो ही गया।

रिवॉल्वर और बम का मसाला

रज्जु की खबर है कि वे चार बज्जाली, जो आग्स एक्ट के अनुसार गिरफ्तार किए गए थे, गत १६वीं दिसम्बर को ज़िला मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किए गए। इनमें मजूमदार-अताओं के सम्बन्ध में पुलिस के सुपरि-येण्डेण्ट ने कहा कि, गत २४ नवम्बर को उनके घर की तलाशी लेने पर एक पाँच नली रिवॉल्वर, बम के कई प्रकार के रासायनिक द्रव्य, और कुछ पुस्तकें पाई गईं। मामला फिर ५ जनवरी से आरम्भ होगा।

भरी पिस्तौल और गोलियाँ मिलीं

दूसरे मामले में, जिसमें ए० एम० बरुआ और एम० एल० बरुआ अभियुक्त हैं, पुलिस इन्स्पेक्टर ने कहा कि गत २४ नवम्बर को एक मकान की तलाशी लेने पर एक भरी पिस्तौल, कुछ गोलियाँ और कुछ चिट्ठियाँ पाई गईं।

ज़मीन में गड़ा हुआ तमश्चा मिला !

एक डमी मेशिनगन की चोरी के सम्बन्ध में पता लगाते हुए, सुक्रिया पुलिस को यह पता लगा है कि हुड्डा गाँव के समीप एक ६ नली पिस्तौल गाड़ी गई है। खोज करने पर वह मिल गई है।

स्यालकोट में बम

खबर है कि १८वीं दिसम्बर को स्यालकोट में, पुलिस को वाटर-वर्क्स के पास एक बम पड़ा मिला। पुलिस उसकी तहकीकात कर रही है। एक दूसरा समाचार है कि वहाँ के गवर्नमेण्ट हाई स्कूल के कुछ विद्यार्थियों को, मैशन में एक गोल चीज़ दिखाई दी। किसी ने उठा कर उसमें आग लगा दी। वह फट पड़ा और एक भारी धड़ाका हुआ।

अबो मुहम्मद नामक एक लड़के को कुछ चोट आई है। हेडमास्टर ने तुरन्त पुलिस को इस बात की खबर दे दी। पुलिस ने आकर स्कूल की इमारत को घेर लिया। जाँच करने पर स्कूल की लाइब्रेरी के पास भी कुछ ऐसी विस्फोटक चीज़ें पाई गई हैं। अभी पुलिस जाँच कर रही है।

ज़मींदार पर गोली दागी गई !

खुलना का १८वीं दिसम्बर का समाचार है कि सराय के एक ज़मींदार बाबू किरणचन्द्र दास, जब बाज़ार हाट छत्र से लौट कर आ रहे थे, उस समय खुलना रेलवे स्टेशन के पास किसी ने उन पर गोली चलाई। सौभाग्यवश गोली चूक गई और वे बच कर बिकल गए। अपराधी का पता नहीं है।

दिल्ली जेल में बम

नई दिल्ली का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के जेल में आड़ देते समय एक मेहतर को एक लाल रुमाळ मिली, जिसमें कुछ चीज़ें बँधी थीं। उसने उठा कर जेलर साहब की टेबल पर उसे रख दिया। पीछे

जाँच करने पर पता लगा कि उसमें बम बनाने की सामग्रियाँ थीं। पुलिस मामले की जाँच कर रही है।

—श्रीयुत कृष्णविनोद राय वकील, श्रीयुत अमरेन्द्र-नाथ घोष, और गोविन्दचन्द्र कुन्दु के विषय में जो विस्फोटक पदार्थ एक्ट, और आर्मस-एक्ट के अनुसार गिरफ्तार किए गए हैं, पुलिस ने यह गवाही पेश की है कि वे कुछ और लोगों के साथ (जो छोड़ दिए गए हैं) स्मृति-मन्दिर के समीप बातें कर रहे थे। तलाशी लेने पर उस मकान में कुछ विस्फोटक पदार्थ भी मिले थे, जो जाँच के लिए भेज दिए गए हैं। मामले की सुनाई १० जनवरी से फिर आरम्भ होगी।

बटुकेश्वर दत्त किस जेल में हैं ?

श्रीबटुकेश्वर दत्त, जिन्हें आज़न्म कालेपानी की सज़ा दी गई है, मुबतान जेल में रखे गए थे। किन्तु पता लगा है कि वे इस समय उस जेल में नहीं हैं। वहाँ से हटा कर किसी दूसरे जेल में भेज दिए गए हैं। १० तारीख तक तो जेल के कर्मचारियों को भी यह पता न था, कि वे हटाए जायेंगे। १६ तारीख को समाचार मिला है कि वे कलकत्ते भेज दिए गए हैं। फिर यह खबर मिली है कि वे मद्रास भेज दिए गए हैं। इसका अभी तक ठीक पता नहीं है कि वे किस जेल में रखे गए हैं।

सर्दार भगतसिंह की अपील

१८ जनवरी को प्रिवी-कौन्सिल में पेश होगी

लाहौर पड़्यन्त्रकेस के अभियुक्त श्री० भगतसिंह, श्री० शिवराम राजगुरु और श्री० सुखदेव की ओर से जो अपील प्रिवी-कौन्सिल में की जाने वाली थी, वह १८ जनवरी को दायर की जा जायगी। सरकार ने कहा था कि यदि १२ दिसम्बर तक अपील न की जायगी तो, अभियुक्तों को फाँसी दे दी जायगी। किन्तु लन्दन के सॉलिसिटर्स ने लिखा है कि, सरकार ने एक माह की मुहलत मंज़ूर कर दी है। इस कारण अब एक मास बाद अपील की जायगी।

सखर में बम का धड़ाका

दो आदमी सख्त घायल

हैदराबाद (सिन्ध) का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि २१ ता० की रात्रि को सखर में बम फटने के कारण दो राहगीर सख्त घायल हुए हैं। लगभग १० बजे रात्रि को वे अस्पताल भेज दिए गए। आहतों में एक गन्ना बेचने वाला है जो बाज़ार में फेरी लगा रहा था, और दूसरा एक मुसलमान है जो उसके पास खड़ा था। बम के धड़ाके से ज़मीन में एक बड़ा भारी छेद हो गया है।

(५वें पृष्ठ का शेषार्थ)

—बम्बई का २०वीं दिसम्बर का समाचार है कि गत बृहस्पतिवार की रात को दो स्वयंसेवकों की मृत्यु हो जाने से, नगर में हड़ताल मनाई गई। मिल-मजदूरों के भी हड़ताल कर देने से ४० मिलें बन्द रहें।

—लाहौर का २२वीं दिसम्बर का समाचार है कि सर सुन्दरसिंह मजीठिया के सभापतिव में एक सभा की गई थी जिसमें सभी दलों के सिक्ख सन्निहित हुए थे। सभा में गोबमेज़ कॉन्फ़ेन्स में सिक्ख सदस्यों में पूर्ण विश्वास होने का एक प्रस्ताव पास किया। सिक्खों ने अपनी माँगों की पूर्ति के लिए एक डेपुटेशन भेजने का विचार किया है। इसके लिए ११ सदस्यों की एक कमिटी बनाई गई है, जिसके अध्यक्ष सर सुन्दरसिंह मजीठिया और सेक्रेटरी श्रीयुत हरनामसिंह एडवोकेट हैं सभा ने यह भी विचार किया, कि यदि सिक्खों की माँगों की ओर ध्यान न दिया जाय तो गोबमेज़ कॉन्फ़ेन्स के सिक्ख सदस्य विरोध-स्वरूप फौरन वापस लौट आवें !

श्रीजगद्गुरु का फतवा

[हिज होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

उस दिन "कॉङ्ग्रेस और गोलमेज कॉन्फ्रेंस" शीर्षक एक उर्दू का 'सब्ज क्रदम' अर्थात् हरे कागज पर छपा हरतहार पढ़ कर हिज होलीनेस ऐसे फड़के कि मियाँ कलेजे को छटी का दूध याद आ गया ! साथ ही सखी नौकरशाही के हाले-ज़ार पर भी, क्रसम दोनो-ईमान की, बड़ा तर्स आया !

✽

बेचारी सती-साध्वी, बीस-बिस्वे की कुलीना और बूढ़े भारत पर हजार जान से निसार होने वाली नौकर-शाही, आज मितलब-वाजों के हाथों में पड़ कर जिस तरह बेहुरमत हो रही है, उस तरह बाबा शाहमदार किसी दुरमन को भी बेहुरमत न करें !!! भई, अपने राम का तो रो देने को जी चाहता है, बेचारी की दयनीय दशा देख कर !

✽

इसके साथ ही वह हरितहार लिखने वाला, माशा-अल्लाह, अज़ल का जीता-जागता पुतला भी मालूम होता है और श्रीजगद्गुरु के आशीर्वाद से अब की पहली जनवरी के उपाधि-वर्षा के दिन रायसाइबो, रायबहादुरी—या ऐसा ही कुछ सोधे स्वर्ग पहुँचाने वाला सामान—लेकर ही रहेगा । मजाल नहीं जो सखी बहानेबाजी कर सकें ।

✽

अपने 'सब्ज क्रदम' पर्व में, उसने सखी को चकमा देने के लिए, उनकी वशान्यता और सौजन्यता का पुल तो बाँधा ही है, साथ ही कॉङ्ग्रेस की निन्दा करके श्रीमती को नक़्क़ भी बनाया है । हाथ रे दुराशा ! हरतहार पढ़ कर सखी ने समझा होगा, कि दिल के दीवानों का बूझ अब कॉङ्ग्रेस को तलाक़ दे देगा और श्रीमती की गलियों में आकर 'स्वमेव माता च पिता स्वमेव' का मधुर राग अलापने लग जाएगा ।

✽

साबरमतो के लँगोटी-बाज को क्या कहा जाय, ऐसा जादू फेर दिया कि बेचारी सिर से पैर तक घबरा उठी है । न हित की पहचान है, न अनहित की ! घबराहट के कारण किसी बहते हुए तिनके का सहारा पा जाती है, तो उसी को लेकर भवसागर पार कर जाने के ब्यर्थ प्रयास में लग जाती है । उपर्युक्त सब्ज-क्रदम हरित-हार उसी घबराहट का नतीजा है । "बेवक्रूफ़ की भैंस बियानी और लोग मटुकी लेकर दौड़े" के अनुसार यारों ने सोचा होगा, चलो, अच्छे चहले में फँसी है । एक हरे रङ्ग का शिगूफ़ा छोड़ दो । लग गया तो तीर, नहीं तो तुफ़ान ही सही । और इन्हों की फ़िहरिस्त में नाम टँका रहेगा तो कभी न कभी काम ही देगा ।

✽

मगर यारों का तो यह कहना है कि "चीन्हल बाटू ए जानी, तू चीन्हल बाटू ना, तोरे नाके पै बाटे गोइनवाँ जा ।" कहिए, जब यहाँ तक लोगों को हुलिया मालूम है तो कौन अक्ल का अन्धा ऐसे हरतहारी चकम में आया ? कौन काबा नहीं जानता कि इस 'बुते काफ़िर' को न बोसा देना आता है, न दिख बहलाना आता है; आता है फ़क़त तरसाना और वादे करके मुकर जाना !

✽

ज़ैर, हज़रते-हरतहारबाज़ की राय है, कि लोग विदेशी का बहिष्कार न करें और देशी का नाम न लें ।

यही राय ईजानिब की भी है । क्योंकि जब कालों के चारे-पानी और लँगोटी के इन्तज़ाम का भार सखी ने अपने कोमल कन्धों पर ले ही रक्खा है तो फिर चिन्ता किस बात की है ? फ़क़त लोगों को चाहिए कि पिकेटिङ्ग-फ़िकेटिङ्ग के रूगड़े छोड़ कर आनन्द से भाँग-वूटी छाना करें और सखी के दम को ज़ैर मनाया करें । जिसकी सरपरस्ती स्वयं श्रीमती नौकरशाही कर रही हैं, उसे क्या पड़ी है, ब्यर्थ के झमेलों में फँसने की ?

✽

मगर कॉङ्ग्रेस दर्दमारी को क्या कहा जाए ! हमें तो मालूम होता है कि बुढ़ोली के कारण उसकी अक्ल पर पथर पड़ गया है, अथवा किसी अनाड़ी के पाले पड़ कर गहरी छान गई है, वरना बैठे-बिठाए यह आक्रुत क्यों मोल लेने जाती ? कहाँ तो इस कड़ाके की सर्दों में अँगोठी तापा काती और स्वादिष्ट सोडोरे से 'खर-मिठाव' करती, कहाँ पड़ी है, नाहक के झमेले में, न खुद चैन लेती है और न सखी को आराम से चाय-पानी पीने देती है । इसलिए अगर सुनासिब समझा जाए, तो हकीम किगुरी ज़ाँ से उसके दिमाग़ की दवा क्यों न करा लो जाए ? क्यों, क्या राय है आपकी ?

✽

लोग आराम से गुलामी के मजे ले रहे थे, चान्दा-यण कके भय-बन्धन से विमुक्त हो रहे थे, घर-घर दरिद्र-नारायण की सेवा का साधन मौजूद था; सखी नौकरशाही भी कभी शिमले की हवा खाती, तो कभी नैनीताल और बार्जिलिङ्ग के पुरलुरक नज़ारे के मजे लूती थी; बी वृत्तानियाँ बेकारी की विपत्ति से बरी थीं और मि० जॉनबुल पेग पर पेग चढ़ा रहे थे । इनने में यह बुढ़िया (कॉङ्ग्रेस न जाने कहाँ से लाठी टेकती आ गई और ऐसा बे-ताल-स्वर का अहिंसात्मक राग छेड़ा, कि सारा मज़ा ही किरकिरा हो गया । अब आप ही ईमान-धर्म से बताइए, बिना दिमाग़ ख़राब हुए कोई ऐसा काम कर सकता है ?

✽

कहावत है कि 'त्रिया चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यम् दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः ।' जेहाज़ा जिस रोज़ से सखी ने अपना बहुरूपियापन दिखाना आरम्भ किया है, उसी रोज़ से प्रातःस्मरणाय श्रीजगद्गुरु का भाग्य भी सातवें आसमान पर चढ़ बैठा है । अभी उपर्युक्त बहारदार हरितहार का मज़ा भूझने भी न पाया था, कि श्रीमान नशे के झोंक में भटकते हुए एक 'प्रेम-सभा' के किनारे जा पहुँचे और वहाँ जो नयन-तृप्तिर दृश्य देखने को मिला, उसके लगन में यहो कहना यथेष्ट होगा, कि "सो सोमा किमि कहउँ बखानी । गिरा अनयन नयन बिनु बानी !"

✽

एक देहाती 'सदरसे' के सामने प्रेम-सभा का जलसा था, बारहचोबी शायमियाने के नीचे कुछ छोटे-छोटे स्कूबी लकड़े और आधे दर्जन के करीब मुर्रिस साहबाब ऊपर को मुँह किए बैठे थे । इस प्रेम-सभा के उद्योक्ता थे सखी के परम प्रेमी एक भावी रायबहादुर, और प्रेज़ेण्ट थे सखी के पुराने नमक़शर एक भावी ऑफिशिएटिङ्ग क्लक़टर बहादुर ! देहात के ग़रीबों से पेंड कर काफ़ी दूध और दही लाने की आज्ञा पटवारियों को पहले से ही दे

दी गई थी । फ़क़त 'प्रेम-प्रसादी' की भी यथेष्ट व्यवस्था थी । परन्तु एक बिगड़े दिल छोकरे के बहकावे में आकर लोगों ने अन्त में 'महारामा गाँधो की जय' बोल कर सारा रङ्ग ही फीका कर दिया ! चरटों तक गज़ा फाड़-फाड़ कर बेचारे प्रेमियों ने जो प्रेम-प्रचार किया था, वह एक ही जयघोष में काफ़ूर हो गया !

✽

ज़ैर, सब से पहले प्रेम-प्रचार के लिए ठठे थे, प्रभु ईसा मसीह के एक पटु-शिष्य पादवी महोदय । भयभ्रान्त काले प्राणियों की दीन-दशा देख कर आपके दयाई दिल में प्रेम का तूफ़ान चल पड़ा था । इसलिए ठठने के साथ ही आपने प्रेम की गज़ा बहा दी । आपने फ़रमाया—“ख़दर जला दो, रुई में आग लगा दो, चर्खा तोड़ कर ताप ढाँको !!!” आपकी यह अलौकिक प्रेमवाणी सुन कर प्रेमी आनन्द-गदगद हो गए ! सारी सभा में मानो आनन्द का सागर उमड़ आया । सहृदय प्रेमियों ने आनन्दाश्रु विसर्जन करना आरम्भ कर दिया । आपको अमूर्त्य आनन्दवाणी सुन कर ओतु-मगड़ल निहाल हो गया !

✽

और, हिज होलीनेस ? न पूछो इस कमबख़्त की हालत । प्रेम की मस्ती में ऐसा आपाद-मस्तक़ दूबा, कि न सोंटे की सुच रही, न लँगोटी की ! आँख खुलने पर मालूम हुआ कि शिष्यों ने किसी तरह चसीट कर भोपड़ी तक पहुँचा दिया है और जगद्गुरुयानी अर्थात् हर होलीनेस अपने आसन्न सङ्क्राण्त सौभाग्य-सिन्दूर के लिए बिलख-बिलख कर रो रही हैं !

✽

मगर ईजानिब को ऐसी तुच्छ बातों पर विचार करने की फ़ुरत कहाँ थी ! सारा मस्तिष्क प्रेम में डूब कर लतफ़्त हो रहा था, और कानों में गूँज रही थी पादवी महोदय की प्रेमवाणी ! हज़रत ने झट लँगोटी सन्हाली और उठ बैठे । श्रीमती बोलों—“ठहरो, ठहरो !” जवाब दिया—“धत् ! यह ठहरने का समय है !”

✽

इसके बाद घट थोड़ा सा पयाल उठाया और उसे दियासलाई से धधका कर भोपड़ी की ओर हाथ बढ़ाया । बीबी चीख़ उठी—“हाँ-हाँ, यह क्या कर रहे हो ? दिमाग़ ठीक है या नहीं ?” राम-राम ! कमबख़्त की 'हाँ-हाँ' ने सारा प्रेम-प्रवाह ही रोक दिया । फिर हाथ थाम कर बोलों—“अभी उठो मत, तुम्हारी तबीयत अभी ठीक नहीं है । अभी-अभी यह क्या करने जा रहे थे ?” ईजानिब ने क्रुद्ध होकर कहा—बड़ी गँवार हो । ऐसे शुभ काम में भी कोई बाधा देता है ?

✽

“आख़िर इरादा क्या था ?” हर होलीनेस ने ज़रा सहम कर सवाल किया । “कुछ नहीं, प्रभु ईसा-मसीह के एक सगे उत्तराधिकारी की आज्ञा का पालन करने जा रहा था । भारत, भारतीयों, ब्रिटिश साम्राज्य के कल्याण के लिए ख़दर, रुई, चर्खा और घर-बार—सब में आग लगा देना बहुत ज़रूरी है, इसीसे इस शुभ काम में थोड़ा सा हाथ बँधा देना चाहता था । परन्तु तुमने बाधा देकर सारा गुड़ गोबर कर दिया ।”

✽

श्रीमती हँसते-हँसते लोट-पोट हो गई । चरटों के तिर-तोड़ परिश्रम के बाद हँसी रोक कर गम्भीर भाव से बोलों—“सचमुच वह ईसाई था ?” हिज होलीनेस ने कहा—“क्या तुम्हें सन्देह है ? ऐसा नायाब तुलज़ा क्या मजाल जो किसी दूसरे धर्मावलम्बी के दिमाग़ से निकल सके ।” हर होलीनेस ने दोघं निरवाल लेकर कहा—“प्रभु चमा करें, इन ईसा की भेड़ों को । कमबख़्तों ने सारी खुदाई का ही तबाह कर रक्खा है ।”

✽

✽

✽

स्वतंत्रता के अन्तिम-युद्ध का प्रारंभ

“वर्तमान सरकार की शक्ति का प्रतिविम्ब अत्याचारी, नृशंस और घूसखोर पुलिस है”

मि० ब्रेल्सफ़र्ड ने गाँवों में क्या-क्या देखा ?

किसानों की भयङ्कर दुर्दशा :: गरीबी का मूल कारण लगान है

“किसान अब तक चुप रहे हैं और उसका प्रधान कारण यह था कि अभी तक उनकी समझ में नहीं आया था, कि शासन में किसी प्रकार के परिवर्तन से उनके भाग्याकाश का सूर्य चमक सकता है। वर्तमान सरकार की शक्ति का प्रतिविम्ब अत्याचारी, नृशंस और घूसखोर देशी पुलिस है, जो सदैव किसानों से ज़मींदार का लगान और बनिफ़ का व्याज वसूल कराने में सहायक रही है; परन्तु महात्मा गाँधी का सन्देश अब उनके कर्ण-कुहरों तक पहुँच गया है और उनमें नई स्फूर्ति आ गई है। मेरे यह पूछने पर, कि ‘क्या स्व-राज्य में उनकी दशा सुधर जावेगी?’ उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया कि ‘हाँ, स्वराज्य हो जाने पर उन्हें लगान नाम-मात्र को देना पड़ेगा।’ इस विकट युद्ध में कॉङ्ग्रेस ने भारतीय जीवन के सम्पूर्ण दुःखों और धावों को नग्न रूप में रख दिया है। गवर्नमेण्ट से उसके लिए बिना स्वराज्य मिले समझौता करना असम्भव है और लगानबन्दी के आन्दोलन द्वारा ही वह गवर्नमेण्ट की कमर तोड़ेगी।”

मि० एच० एन० ब्रेल्सफ़र्ड ने हाल ही में एक लेख अमेरिका के ‘नेशन’ पत्र में प्रकाशनार्थ भेजा है, जिसमें उन्होंने संयुक्त प्रान्त के कुछ गाँवों के भ्रमण के अनुभव दिए हैं। भारत के पत्रों में भी वह प्रकाशित हो चुका है। उसी लेख में से हम पाठकों के मनोरञ्जनार्थ कुछ ज्ञातव्य बातें यहाँ देते हैं।

जैसे ही लन्दन में भारतवर्ष की आवाज़ पहुँचती है, वह राजनीति का लीज जामा पहिन लेती है, परन्तु यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि उसके इस उथल-पुथल का एक मात्र कारण आर्थिक है। बम्बई के धनी व्यापारी बिगड़े हुए राजस्व और विनिमय की दर बढ़ाने तथा उसके पक्षपातपूर्ण व्यवहार के कारण भारतीय गवर्नमेण्ट पर आक्रमण करते हैं और कॉङ्ग्रेस के साथ का भी अधिकांश में यही कारण है। परन्तु यह आन्दोलन शहरों के धनिकों तक ही परिमित नहीं है, उसका प्रचार तो जन-साधारण और गाँवों तक में हो गया है और जैसे ही जैसे समय व्यतीत होता जाता है, वैसे ही वैसे यह आन्दोलन अपढ़ किसानों की ऐसी सहायता पाता जाता है, जो शहर वालों की सहायता से अधिक प्रबल और सामूहिक है। किसानों में विद्रोह की आग फैल रही है। वह सफ़ेद क्रान्तिकारी टोपी की उपासना क्यों करता है? अपने बैल और ज़मीन तक ज़ब्त करवा लेने का साहस उनमें कहाँ से आया? बारदोली में मैंने लगानबन्दी का आश्चर्यपूर्ण आन्दोलन देखा था। वहाँ के किसानों पर बहुत वर्षों से महात्मा गाँधी का प्रभाव रहा है। वे अपने खेतों के मालिक हैं, धन और शिक्का की दृष्टि से वे अन्य प्रान्तों से आगे हैं। वे वीर हैं और उन्होंने अपने स्वतंत्रों पर विचार करना प्रारम्भ कर दिया है।

उन तीन गाँवों की दुर्दशा देखने का अवसर मुझे संयुक्त प्रान्त में आगरे के समीप के गाँवों में मिला, जो भारतीय ज़मींदारों के अधीन हैं। वहाँ अभी तक कॉङ्ग्रेस ने लगानबन्दी का आदेश नहीं दिया है। खेतों में घूमते हुए हम और हमारे साथी एक ज़मींदार से मिले

और उसके साथ ज़मींदारी-प्रणाली पर बातचीत की। ज़मींदारी-प्रणाली का प्रारम्भ मुग़लों के राज्य में ऐसे समय में हुआ था, जब जागीरदारों को आवश्यकता पड़ने पर, शाही फ़ौज के लिए कुछ घोड़े और आदमी देने पड़ते थे। ब्रिटिश काल में, इस सम्बन्ध का केवल आर्थिक रूप ही रह गया है। ज़मींदार लगान वसूल करता है और उसमें से ४५ प्रतिशत प्रान्तीय सरकार को दे देता है। ज़मीन पर सैनिक भी पंजी नहीं लगाता। किसान को ही कुँआ बनाना पड़ता है, उसी को उसकी उर्वरा-शक्ति बढ़ानी पड़ती है और वही अपने रहने के लिए अस्वस्थकर घरों में बनाता है। पुराने ज़माने के अभी भी कुछ चिन्ह शेष हैं, ज़मींदार अपने खेत जुतवाने के लिए किसानों को अभी भी मुफ़्त में बुला सकता है और किसानों से तीज-न्यौहार के समय मुफ़्त में दूध-दही वसूल करता है। चारा और भूसा भी लिया जा सकता है और बदले में वह उसे थोड़ी सी लकड़ी काटने की आज्ञा दे देता है। मैंने ज़मींदार से स्पष्ट रूप से पूछा कि लगान वसूल करने के बदले में वह किसानों की कौन सी सामाजिक सेवा करता है। उसका उत्तर भी उतना ही स्पष्ट था—“हमने अपने अधिकार मोल लिए हैं और किसानों के प्रति हमारा कोई कर्तव्य नहीं है। हम भी औरों की भाँति पेट भर रहे हैं।” वास्तव में अब पुराने प्रकार की जागीरदारी का अस्तित्व नहीं रहा। उनके स्थान में आने वाले नए लोग तो केवल लगान वसूल करने वाले हैं।

हम एक छोटे से गाँव में पहुँचे। घूरों और कूड़ों के ढेर और गन्दगी की राशि लगी थी और सूर्यास्त के अनन्तर दिन भर का कार्य समाप्त कर किसान एक नीम के पेड़ के नीचे चारों ओर बैठे थे। उनकी वास्तविक स्थिति का पता लगाने के लिए तीन बातें ध्यान में रख लेनी पड़े हैं। प्रत्येक किसान ऋणी था, प्रत्येक अपढ़ था, उस गाँव का कोई भी लड़का पढ़ता न था और व्याज की दर ३० प्रतिशत तक थी !! मैं गाँवों में घूमा, प्रत्येक स्थान

के लोग ऋण के भार से लदे थे। पद-पद पर किसानों को ऋण लेना पड़ता है, ऋण का बोझ हलका करने के लिए उसका घी-दूध सब बनियों के यहाँ चला जाता है और उसके बच्चों के लिए केवल मट्टा रह जाता है। फ़सल का अधिकांश भाग भी बनिफ़ के यहाँ चला जाता है और थोड़े दिनों बाद किसान वही अन्न अधिक मूल्य पर ले आता है। ऋण का मुख्य कारण है ज़मींदारी का लगान। सौभाग्य से ही किसान को कभी विवाह आदि उत्सवों के अवसर पर पड़ी खाने को मिल जाती है। भारतवर्ष में युवावस्था तक विवाह न होना बड़ा भारी सामाजिक पाप समझा जाता है, परन्तु मेरे सामने तीन युवक अविवाहित खड़े हैं। इस गाँव का सब से अच्छा समाचार यह था कि उसकी जन-संख्या घट रही है। जैसे ही हम लोग गाँव से चलने के लिए तैयार हुए, एक आदमी हमारे सामने अपने कपड़े दिखाने के लिए आया। उसका वस्त्र एक मात्र गन्दा और फटा हुआ कुर्ता था, जो उसकी लँगोटी से सटा हुआ था। वह किसान नहीं था, पास ही के रेलवे-स्टेशन पर ६ आना प्रति दिन पर काम करता था। इन ६ आनों के लिए १२ घण्टे परिश्रम करना पड़ता है और उसी कमाई पर उसका, उसकी स्त्री और दो बच्चों का निर्वाह अवलम्बित है! उसी में उसे अपने कुर्ते में चिथड़े लगवाने पड़ते हैं और उसी में ३० प्रतिशत के हिसाब से बनिफ़ का व्याज अदा करना पड़ता है! तिस पर भी किसान उसे ईर्ष्याभाव से देखते हैं, क्योंकि उन्हें उससे भी अधिक परिश्रम करने पर ३-४ आने से अधिक मज़दूरी नहीं मिलती। वहाँ बैठे हुए किसानों ने कहा कि उनसे मज़दूरों की दशा बहुत अच्छी है। मैंने पूछा—“फिर तुम खेती करते ही क्यों हो?” इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि “कोई अन्य स्थायी काम ही नहीं मिलता। साथ ही खेती करने वाले को ऋण मिल सकता है।” जब हम लोग गाँव से चलने लगे, तब अंधेरा हो गया था, परन्तु गाँव भर में कहाँ (रोष मैट्र ११वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

भारत की निर्धनता का करुण-चित्र!

प्रधान-मन्त्री के गुरु मरणासन्न-भारत की दशा देख कर रो पड़े!!

भारतीय किसानों का नारकीय जीवन

इंग्लैण्ड की इण्डिपेण्डेण्ट लेबर पार्टी के संस्थापक और प्रधान-मन्त्री रेमजे मेकडॉनल्ड के राजनैतिक गुरु केयर हार्डी ने सन्, १९०७ में भारत में, यहाँ की सच्ची परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए कुछ माह व्यतीत किए थे और उन्होंने यहाँ रह कर, भारत की समस्याओं का अध्ययन कर बहुत सी बातें और संख्याएँ एकत्र की थीं। अपने इस अध्ययन के उपरान्त उन्होंने 'भारत' नाम की पुस्तक लिखी थी, जो इण्डिपेण्डेण्ट लेबर पार्टी ने सन्, १९०८ में प्रकाशित की थी। नीचे उन्हीं की पुस्तक का एक अध्याय उद्धृत किया जाता है। यद्यपि इन पंक्तियों को लिखे २० वर्ष से ऊपर गुज़र चुके हैं, तिस पर भी वे इस समय भारत में अङ्गरेज़ी राज्य पर उसी प्रकार प्रहार करती हैं, जिस प्रकार २० वर्ष पहले करती थीं। भारत की दुर्दशा अब उस समय से और भी अधिक खराब हो गई है। इस अभाग्य देश के सम्बन्ध में केयर हार्डी की अपीलें का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे अनन्त में लीन हो गईं!

भारत के अतीत वैभव और समृद्धि की स्मृति लोगों के हृदय में अभी तक हरी-भरी बनी है। एक शताब्दी पहले, जब कि भारत के कुछ साधारण कुटुम्ब भी व्यापारिक उन्नति के कारण करोड़पति बन बैठे थे, तब हर एक सुँह पर भारत के ऐश्वर्य की ही चर्चा हुआ करती थी, परन्तु अब भारत के वैभव और उसके व्यापारिक ऐश्वर्य की चर्चा कम हुआ करती है। वास्तव में भारत के निवासियों पर जैसी आर्थिक आपत्ति इस समय पड़ी है, जिस प्रकार उसका रक्त इस समय सूखा गया है, उसका नमूना उसके इतिहास के समस्त पन्ने उलटने पर कहीं न मिलेगा।

अतिरिक्त किसानों को और भी बहुत से स्थानीय टैक्स देने पड़ते हैं। इस प्रकार बेचारे किसानों की ७५ प्रतिशत फसल केवल टैक्स अदा करने में चली जाती है!!

निर्धनता का साम्राज्य

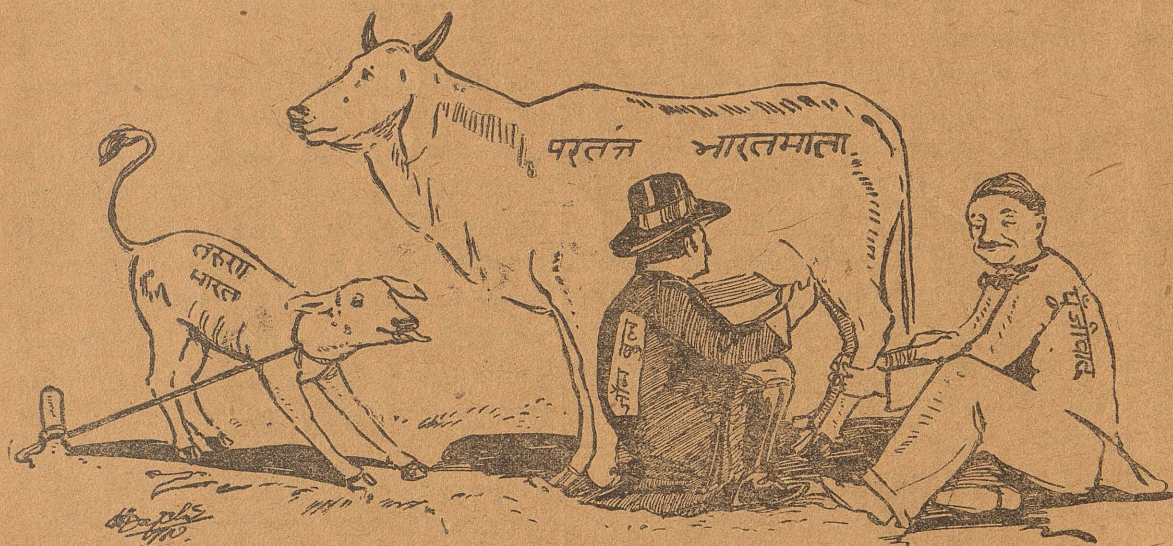
इंग्लैण्ड में आमदनी पर ५ प्रतिशत टैक्स लगाने से सारे देश में सनसनी फैल जाती है और जनता उसका विरोध करने पर तुल जाती है। ख़ूबी यह है, कि टैक्स ज़मीन की उपज पर नहीं, केवल मुनाफ़े पर लगाया जाता है। ऐसी दशा में उस देश की क्या

सकते हैं, परन्तु नीचे ऐसी कुछ संख्याएँ दी जाती हैं, जिनसे यह बात बिजकुल स्पष्ट हो जाती है।

जब बम्बई प्रान्त सन्, १८१० में ब्रिटिश राज्य में सम्मिलित किया गया, तब उसके शासकों ने अपने किसानों से केवल ८० लाख रुपया लगान में वसूल किया था। उस समय लगान वसूल करने की यह पद्धति थी, कि फसल का—चाहे वह अच्छी हो या खराब—चौथाई भाग लिया जाता था। इस प्रकार जब फसल ख़ूब अच्छी होती थी, तब गवर्नमेण्ट और प्रजा दोनों ही भरे पुरे रहते थे, और दोनों को एक ही प्रकार के लाभ रहते थे; और जब फसल खराब होती थी, तब दोनों ही हानि सहते थे। परन्तु अब तो चाहे फसल अच्छी हो या खराब—या बिजकुल ही न हुई हो, प्रति वर्ष एक निश्चित रकम वसूल की जाती है! सन् १८१० के बाद उपर्युक्त प्रकार से लगान ज़बरदस्ती वसूल करने की रीति चल पड़ी, जिसका परिणाम यह हुआ, कि सन् १८२३ में लगान की आमदनी ८० लाख से १ करोड़ २० लाख बढ़ गई, और सन् १८७५ में वह बढ़ कर ४ करोड़ ८० लाख हो गई!!!

जब गत शताब्दी के प्रारम्भ में सर टॉमस मुनरो मद्रास के गवर्नर नियुक्त किए गए थे, तब भी लगान के सम्बन्ध में इसी प्रकार की सफ़्तियाँ की गई थीं, और इसके परिणाम-स्वरूप समस्त प्रान्त से किसानों के भूखे मरने के समाचार आने लगे थे, और जाँच के उपरान्त गवर्नमेण्ट को २५ प्रतिशत लगान कम करना पड़ा था। उनके अधीन ऑफ़िसर पहले तो उनकी आज्ञा-पालन करने में आनाकानी करने लगे, परन्तु अन्त में उन्हें उनकी कड़ी

आज्ञा के सामने नत-मस्तक होना पड़ा। इस लगातार लूट-खसोट का परिणाम यह हुआ है कि उस देश की प्रजा इतनी गरीब हो गई है, जितनी संसार के किसी अन्य देश की नहीं है। सचमुच में सौ वर्ष के 'सभ्य' कहलाने वाले शासन के उपरान्त तो ऐसा गरीब और सुखमरा देश तो संसार के कोने में कहीं ढूँढ़े न मिलेगा! भारत की संख्या (Statistics) विभाग के डायरेक्टर-जनरल सर विलियम हयडर ने, जो भारत और उसके निवासियों के सच्चे हितैषी थे, लिखा है कि "भारत के चार करोड़ मनुष्यों को भर-पेट ख़ाना-सूखा भी खाने को नहीं मिलता"; और पञ्जाब के अर्थ-विभाग के कमिश्नर ने कहा था कि "भारत के ७ करोड़ किसान इतनी भयङ्कर गरीबी में हैं, कि किसी प्रकार के सुधार



दश-दशा

कुछ लहू तन में है बाँकी, वह लिए जाते हैं! जोंक वन-वन के मेरा खून पिए जाते हैं!!

अनुमान किया जाता है, कि भारत की रेलों, नहरों और अन्य प्रजा-हितैषी उद्योग-धन्धों में ब्रिटेन की २० करोड़ पौण्ड पूँजी लगी है। भारत को ५ प्रतिशत के हिसाब से उसका २५ करोड़ पौण्ड प्रति साल व्याज का देना पड़ता है। यह व्याज विजायत के बॉण्ड के धरि-दारों को दिया जाता है और इतनी बड़ी रकम से भारत का कोई उपकार नहीं होता। इसके साथ ही फ़ौजी अफ़सरों और सरकारी कर्मचारियों की पेन्शन और दूसरे खर्च जोड़ दोजिए; इसे मिला कर ३ करोड़ पौण्ड हर साल इंग्लैण्ड चले जाते हैं। भारत में ८० प्रतिशत टैक्स ज़मीन से वसूल किए जाते हैं! गवर्नमेण्ट जो टैक्स किसानों से वसूल करती है, वह उनकी उपज का २० से लेकर ६५ प्रतिशत तक होता है!! इसके

स्थिति होगी, जहाँ मुनाफ़े पर ५ प्रतिशत टैक्स नहीं लगाया जाता, बल्कि उपज पर ७५ प्रतिशत लगाया जाता है!! समय-समय पर लगान का रेट बढ़कता रहता है और यह केवल इसलिए, कि गवर्नमेण्ट इन कर्ज़ से लदे हुए किसानों से जितना अधिक पेंड सके पेंडे! लगान में ३० प्रतिशत की वृद्धि करना तो एक साधारण सी बात है; रजिस्ट्रों पर ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जहाँ यह लगान-वृद्धि ५०, ७० यहाँ तक कि १०० प्रति-शत तक की गई है। यह एक ऐसी बात है जिसके कारण भारत स्थायी रूप से गरीबी और दुर्भिक्ष का साम्राज्य हो गया है। प्रायः यह कहा जाता है, कि ब्रिटिश राज्य में किसानों को पुराने ज़माने के राजाओं से कम टैक्स देना पड़ता है। इस तर्क के कई प्रकार से उत्तर दिए जा

उनका कोई उपकार नहीं कर सकते।" इसी प्रकार के सैकड़ों उदाहरण प्राप्त हो सकते हैं।

मैं अपनी दलील के समर्थन में तीन विशेषज्ञों की सम्मतियाँ यहाँ और दूँगा, जिनमें से किसी पर भी यह ज़ान्ज़न नहीं लगाया जा सकता, कि वह भारतवासियों से अनुचित सहायुभूति रखता है। सन्, १८८२ में वर्तमान लॉर्ड क्रोमर ने यह घोषणा की थी, कि प्रत्येक भारतवासी की औसत आमदनी ३६ शिल्लिंग है। सन्, १८९४ में भारत के उस समय के सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट लॉर्ड जॉर्ज हेमिल्टन ने प्रत्येक भारतवासी की औसत आमदनी दो पौण्ड बतलाई थी और उनके बाद में लॉर्ड कर्ज़न ने भारतीय किसान की औसत वार्षिक आमदनी १ पौण्ड १२ शिल्लिंग ६ पेन्स बतलाई थी। दूसरे देशों से मिलान करने पर भारतवर्ष की गरीबी और स्पष्ट हो जाती है। ग्रेट-ब्रिटेन के प्रत्येक मनुष्य की औसत आमदनी ४२ पौण्ड वार्षिक और रूस के किसान की औसत आय ११ पौण्ड वार्षिक है।

भारत के सच्चे हितैषी अमेरिका-निवासी डॉ॰ सगडरलेण्ड ने लिखा है कि "भारत में यूरोपियन और एङ्ग्लो-इण्डियन ऑफिसर प्रति वर्ष १,३६,३०,४२४ पौण्ड वेतन पाते हैं, परन्तु वे १,३०,००० भारतीय राज-कर्मचारी साल भर में केवल ३२,८४,१६३ पौण्ड वेतन पाते हैं; इन ऑफिसरों में वे भारतीय भी सम्मिलित हैं, जो

नवयुवकों के प्रति—

[श्री॰ आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

ब्रह्मचर्य पालन करे पचीस वर्ष तक,
बाद उसके करे सुभावना भवन की।
धन का शुभार्जन करे तब, परन्तु रहे—
धुन उसको विलास-वाञ्छा के दमन की।
पावे यश, पर उसे चाह यश की न रहे,
चाह रहे देश के सुहित की लगन की।
आपही हो भारत की उन्नति, जो होवे यौही—
गति प्रति भारतीय युवक के मन की।

राज्य के बड़े-बड़े पदों पर हैं।" यदि यूरोपियनों की वेतन-वृद्धि के सम्बन्ध में यह दलील पेश की जाय कि यूरोपियन भारतीयों से अधिक योग्य होते हैं तो उत्तर में मैं केवल इतना ही कहूँगा, कि ये सब बातें थोथी हैं, उनमें सचाई का लेश भी नहीं है!

हम इस बात का अभिमान करते हैं कि हमने भारत में शिचा का प्रचार किया है; परन्तु इसमें भी अधिकांश मिथ्या-सत्य है। भारतीय-भारत और ब्रिटिश-भारत दोनों में मिला कर स्कूलों में जाने वाले बच्चों की संख्या केवल २० लाख के लगभग है और भारतीय गवर्नमेण्ट शिचा में जो खर्च करती है, वह एक बच्चे के पीछे हर साल डेढ़ पेन्स (डेढ़ आने के लगभग) से अधिक नहीं पड़ता! परन्तु इसके विपरीत गवर्नमेण्ट फ़ौज की रचा में जो खर्च करती है, उसका औसत टैक्स प्रत्येक भारतवासी पर बारह आने के हिसाब से पड़ता है। सुप्रसिद्ध वेदज्ञ मैक्समूलर ने सरकारी रिपोर्ट और एक मिशनरी रिपोर्ट के आधार पर बज़ाल की शिचा के सम्बन्ध में लिखा है कि "ब्रिटिश शासन के पहले बज़ाल में ८० हजार स्कूल थे, अर्थात् वहाँ के ४०० निवासियों के लिए एक स्कूल था।" अपने ब्रिटिश भारत के इतिहास में लडलो ने लिखा है कि "मुझे इस बात का निश्चित रूप से पता लगा है कि हर एक हिन्दू गाँव में, जहाँ उसकी पुरानी पद्धतियाँ प्रचलित रह सकी हैं, बच्चे

साधारणतः पढ़-लिख लेते हैं, परन्तु जहाँ ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ग्राम-पद्धति नष्ट करने में सफल हुई है, वहाँ उसके साथ ही गाँवों के स्कूल भी नष्ट हो गए हैं।" सर टॉमस मुनरो ने भी निम्न शब्दों में अङ्गरेजों के पहले के भारत का अच्छा चित्र खींचा है—“यदि खेती की सुचारु पद्धति, कला-कौशल की अद्वितीय योग्यता, ऐश-आराम से लेकर साधारण आवश्यकताओं की चीज़ें उत्पन्न करने की शक्ति, हर एक गाँव में गणित और लिखने-पढ़ने के लिए स्कूलों की स्थापना, आतिथ्य-सत्कार, परस्पर दान करने की बान, और महिला-मण्डल के साथ पूर्ण विश्वास, आदर और नम्रता का व्यवहार, ऐसे चिन्हों में से हैं, जिनसे मनुष्य के सभ्य होने का पता चलता है—तो हिन्दू यूरोप के किसी राष्ट्र से हीन नहीं हैं और यदि सभ्यता का मतलब भारत और इङ्ग्लैण्ड का केवल व्यापारिक सम्बन्ध है, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि इङ्ग्लैण्ड भारत से माल मँगा कर अधिक लाभ उठा सकेगा।”

विदेशियों की आँख में भारत

“यदि मुझ से संसार भर में किसी ऐसे देश का पता लगाने के लिए कहा जावे, जो प्रकृति के अनन्त वैभव, सौन्दर्य और शक्ति से सम्पन्न हो—जो इस भौतिक संसार का स्वर्ग हो—तो मैं भारत की ओर इशारा करूँगा।

“यदि मुझसे यह पूछा जावे, कि किस देश के वायु-मण्डल में मानसिक विकास की ऐसी विभूतियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिन्होंने जीवन के गूढ़-तम रहस्यों पर विचार किया है और उन रहस्यों का पता लगाया है, जिनके अध्ययन की प्लेटो और केण्ट के परिडित्तों को भी आवश्यकता है—तो मैं भारत की ओर इशारा करूँगा!!

“और यदि मैं स्वयं अपनी आत्मा से पूछूँ कि ऐसा कौन सा साहित्य है, जिससे हम यूरोप में, जो केवल ग्रीकों और रोमनों की और यहूदी जाति की विचार-धारा में पले हैं, वे उपदेश ग्रहण कर सकते हैं, जो हमारे जीवन को नैतिक दृष्टि से पूर्ण और अधिक विस्तृत बना सकते हैं; वास्तव में जो उसे आदर्श मनुष्य बना सकते हैं, जो उसे केवल संसार के सच्चे सुख ही नहीं, बल्कि आत्मा के अनन्त आनन्द का रहस्य बता सकते हैं—तो मैं फिर भी भारत की ही ओर टकटकी लगाऊँगा!!!”

—मैक्समूलर

हम यह सर्वथा भूल जाते हैं कि आदर्श सभ्यता का जन्म भारत में हुआ था और भारत ही में वह पाखी-पोसी गई है और यूरोप की सभ्यता केवल उसके अङ्कुर मात्र हैं। एक ऐसा राष्ट्र, जिसने भूत में जर्म, विज्ञान, कला और साहित्य आदि सभी बातों के ज्ञान का सञ्चार संसार के हर एक देश में किया है, अविकसित जङ्गलियों के से व्यवहार के योग्य नहीं है; और तिस पर भी भारत में हमारी गवर्नमेण्ट केवल इस विचार पर स्थित है कि या तो भारतीय स्वराज्य के योग्य नहीं हैं, और या विश्वासपूर्वक उन्हें उसके साधारण अधिकार भी नहीं सौंपे जा सकते। एक बड़ी विचार सभ्य मनुष्यों के अस्तित्व में अङ्गरेजों के विरुद्ध क्रान्तिकारी विचार उत्पन्न करता है और उसके हृदय के टुकड़े-टुकड़े किए डालता है!!

(१६वें पृष्ठ का शेषांश)

लाकटेन न थी, जिसके प्रकाश की सहायता से हम खेतों में चल सकते।

गाँवों में कॉङ्ग्रेस आन्दोलन के प्रचार का कारण आर्थिक है। ज़मींदारों को राज्य-भक्त बनाए रखने के लिए गवर्नमेण्ट ने संसार की अत्यन्त घृणित और अन्याय-पूर्ण ज़मीन-प्रणाली को कायम रहने दिया है। साधारण काल में इस बन्दोबस्त का अर्थ है गरीबी, परन्तु ऋण-भाव गिर जाने के कारण यह ज़मीन-प्रणाली नष्ट होती सी दिखाई पड़ती है। फ़सल उत्पन्न न होने पर सरकार लगान माफ़ नहीं, मुस्तवी करती है। और यह महाभारी सर्व-व्यापी है। बज़ाल के जूट पैदा करने वालों और उत्तरी भारत के गेहूँ उत्पन्न करने वालों पर वह एक ही सा आघात करती है। सरकार आन्दोलन के प्रारम्भ से ही पुलिस पर जो अन्धाधुन्ध खर्च कर रही है, वह अपनी आमदनी के इसी द्वार के आधार पर ही तो कर रही है!

कॉङ्ग्रेस की नीति विशिष्ट है। अब लगानबन्दी का प्रचार संयुक्त प्रान्त तक हो गया है और वह इला-हाबाद के आस-पास लगानबन्दी का आन्दोलन सञ्चित कर रही है। कॉङ्ग्रेस ने किसानों को ज़मींदारों को आधा लगान, इस शर्त पर देने का आदेश दिया है कि वे सरकार को उसमें से एक पाई न दें। ज़मींदारों में इतनी सामर्थ्य नहीं है, राष्ट्रीयता उनसे कोसों दूर है। इस वर्ष की समाप्ति के पहले ही युद्ध छिड़ जावेगा। पर क्या सरकार सब गाँवों को बेदखल कर सकती है? और यदि वह ऐसा करे, तो क्या वह इस रीति से लगान वसूल कर सकेगी? ऐसे आन्दोलन दावानल की भाँति शीघ्रता से फैलते हैं। जब किसानों में लगान देने की शक्ति ही नहीं, तो उन्हें लगान न देने के लिए भड़का देना कोई कठिन कार्य नहीं है। जेलें भर जावेंगी और सदैव की भाँति पुलिस की निष्ठुर लाठी के प्रहार होंगे। परन्तु लाठी चलाना भी आशङ्कापूर्ण है, क्योंकि किसानों में बहुत से राजपूत भी हैं, जो जात्याभिमान के कारण इस प्रकार की निष्ठुरता को पाप समझते हैं!

मैं यह कहने की छुट्टा नहीं करता, कि किसानों की भाषा से अनभिज्ञ होते हुए भी मैं किसानों के हृदय की थाह ले सका हूँ; परन्तु इसमें अत्युक्ति नहीं, मैं उनके साथ मिल कर बहुत कुछ अनुभव लाभ कर सका हूँ। वे अब तक चुप रहे हैं और उसका प्रधान कारण यह था कि अभी तक उनकी समझ में यह नहीं आया था कि शासन में किसी प्रकार के परिवर्तन से उनके भाग्याकाश का सूर्य चमक सकता है। वर्तमान सरकार की शक्ति का प्रतिबिम्ब अत्याचारी, नृशंस और घूसखोर देशी पुलिस है, जो सदैव किसानों से ज़मींदार का लगान और बनिष् का व्याज वसूल कराने में सहायक रही है! परन्तु अब महात्मा गाँधी का सन्देश उनके कर्ण-कुहरों तक पहुँच गया है और उनमें नई स्फूर्ति आ गई है। उनमें से बहुतों ने स्वयं महात्मा गाँधी के दर्शन किए हैं। मेरे यह पूछने पर कि क्या स्वराज्य में उनकी दशा सुधर जावेगी? उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया कि “हाँ, स्वराज्य हो जाने पर उन्हें लगान नाम मात्र को देना पड़ेगा।” इस विकट युद्ध में कॉङ्ग्रेस ने भारतीय जीवन के सम्पूर्ण दुःखों और घावों को नम्र रूप में रख दिया है। गवर्नमेण्ट से उसके लिए बिना स्वराज्य के, समझौता करना असम्भव है और लगानबन्दी के आन्दोलन द्वारा ही वह गवर्नमेण्ट की कमर तोड़ेगी। नमक-ज्ञानूर-भङ्ग और शराब और वज्र-बहिष्कार तो विराट आन्दोलन की केवल तैयारियाँ थीं। भारतीय स्वतन्त्रता का वास्तविक युद्ध तो अब छिड़ रहा है, जिसका अन्त किसानों के विप्लव में होगा!!

*

*

*

*

*

*

भविष्य की नियमावली

- १—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।
- २—किसी खास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं ॥
- ३—लेखादि काराज के एक तरफ़, हाशिया छोड़कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।
- ४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।
- ५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्बाद-दाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छपा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।
- ६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।
- ७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिए।
- ८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वगैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!
- ९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।
- १०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर



सम्पादकीय विचार



२५ दिसम्बर, सन् १९३०

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अखबार देख कर !!

भारत के नए वायसराय

लन्दन में १९वीं दिसम्बर को एक सरकारी विज्ञप्ति द्वारा घोषणा कर दी गई है, कि लॉर्ड वैलिङ्गटन, लॉर्ड इर्विन के स्थान पर भारत के नए वायसराय नियुक्त किए गए हैं।

लॉर्ड वैलिङ्गटन केनेडा उपनिवेश के वर्तमान गवर्नर-जनरल हैं और भारत के बम्बई और मद्रास प्रान्तों के गवर्नर रह चुके हैं। वे भारत में सन् १९१३ से १९२४ तक रहे। सन् १९१६ तक बम्बई के गवर्नर रहने के उपरान्त वे मद्रास के गवर्नर नियुक्त किए गए थे। लॉर्ड वैलिङ्गटन, यद्यपि माण्टेग्यू-चेम्सफ़र्ड के द्वैध शासन (Dyarchy) के विरुद्ध थे, परन्तु उसे सफल बनाने में उन्होंने कुछ ठठा न रक्खा था।

पाठकों को स्मरण रखना चाहिए, कि लॉर्ड वैलिङ्गटन राजनैतिक क्रान्ति के सदैव विरुद्ध रहे हैं और वे वही व्यक्ति हैं, जिन्होंने असहयोग आन्दोलन के समय महात्मा गाँधी को गिरफ़्तार करने की बड़े ज़ोरों से सिफ़ारिश की थी और यहाँ तक उन्होंने धमकी दी थी कि यदि मेरा यह प्रस्ताव स्वीकृत न हुआ, तो इसे मेरा इस्तीफ़ा समझा जाय।

राष्ट्रपति का अनशन

राजनैतिक क़ैदियों को कोड़े लगाने के विरोध में

मालूम हुआ है कि इलाहाबाद के नैनी सेक्टरल जेल में राष्ट्रपति जवाहरलाल नेहरू, डॉ० सैयद महमूद, सरदार नर्मदाप्रसाद सिंह, पण्डित मोतीलाल जी के दामाद श्री० आर० एस० पण्डित और श्री० गोविन्द मालवीय ने उन राजनैतिक क़ैदियों से सहानुभूति दिखाने के लिए, जिन्हें संयुक्त प्रान्त की जेलों में कोड़ों से पीटा गया है, १८वीं दिसम्बर से तीन दिन तक अनशन व्रत किया है। यह भी मालूम हुआ है, कि दिसम्बर के प्रारम्भ में पण्डित जवाहरलाल और उनके साथियों ने जेल के उच्च पदाधिकारियों के पास एक पत्र भेजा था, जिसमें उन्होंने यह लिखा था, कि उन्हें राजनैतिक क़ैदियों को कोड़ों की सज़ा और जेल के नियम भङ्ग करने पर उस सज़ा की धमकी देने के समाचारों से अत्यन्त दुःख हुआ है और उसके कारण उन्हें जेल के नियम पालन करने के सम्बन्ध में पुनः विचार करना पड़ा है। उसमें यह भी लिखा था, कि जब तक यह स्पष्ट न कर दिया जायगा, कि या तो उन्हें ग़लत सूचना मिली है और या गवर्नर-मेण्ट उपर्युक्त नीति के विरुद्ध है और उसकी पुनरावृत्ति न की जायगी, वे जेल के नियमों से सत्याग्रह करेंगे। कहा जाता है कि पण्डित मदनमोहन मालवीय ने भी इस सम्बन्ध में यू० पी० के गवर्नर सर जॉर्ज लेम्बर्ट को पत्र लिखा था; परन्तु न तो पत्र की पहुँच की रसीद ही आई और न उसका उत्तर ही। इसके बाद जेल-सुपरिण्टेण्डेण्ट को एक दूसरा पत्र भेजा गया, जिसमें उन्हें इस बात की इत्तला दी गई थी, कि वे उन क़ैदियों से सहानुभूति दिखाने के लिए १८वीं दिसम्बर से ७१ घण्टे का उपवास प्रारम्भ कर देंगे, और यदि थोड़े दिनों के अन्दर उनके पत्र का कोई उत्तर न दिया जायगा, तो वे जेल के नियमों के विरुद्ध सत्याग्रह भी प्रारम्भ कर देंगे।

*

*

*

वेड़ियों का संगीत

[सुपसिद्ध रूसी लेखक मोशिए एन लिफशको द्वारा लिखित—
अनुवादक श्री० दीनानाथ जी, एम० ए०]

बन्दी अलेग्ज़ी एनिकानोव को पुरानी वेड़ियाँ पहिनाई गई थीं। वे पहिले किसी दूसरे अपराधी के पैर में रह चुकी थीं और रंगब से चिकनी तथा चमकदार हो गई थीं। वेड़ियों को जने कई वर्ष हो गए थे। यह सब पता अलेग्ज़ी को साइबेरिया के जेल में मिला। एक रोज़ बाहर जाने समय उसे एक बुढ़े कैदी ने रोका। वह अलेग्ज़ी के पैरों की ओर मुका और वेड़ियों पर धीरे-धीरे अपना हाथ फेर कर हर्ष से चिल्ला उठा—अहा, कभी हन वेड़ियों को मैं पहिना करता था। मैं तो उन्हें उनकी आवाज़ ही से पहिचान गया था। उनकी आवाज़ मुझे कुछ परिचित-सी आलूम हुई। क़रीब पन्द्रह वर्ष पहिले कुशाय में वे मेरे पैरों में थीं। उस वक्त वे नई थीं, खुरदरी थीं। मेरे पहिले ये एक जिआर्जिया के बन्दी को पहिनाई गई थीं। वह जेल से निकल गया था और इन्हें जेल ही में छोड़ दिया गया था। जब मुझे दण्ड दिया गया, तब ये मेरे पास आईं। माँका पाकर एक रोज़ मैं अपने पैरों में लावुन लगा कर इनसे छुटकारा पाने का प्रयत्न करने लगा। वेड़ियों के खुरदरी होने के कारण मेरे पैरों से खून निकलने लगा, पर मैंने उस पीड़ा पर ध्यान न दिया। किसी तरह इन्हें खींच निकाला और जेल से बाहर निकल भागा। केवल मैं ही नहीं—मेरे साथ तीन और अपराधी एक साथ निकल भागे थे। वे कैसे अच्छे दिन थे!

दिन दूब गया था। रजनी की कालिमा अपने विशाल अञ्चल से धीरे-धीरे पृथ्वी को ढँक रही थी। कुछ-कुछ अंधेरा हो चला था। अपने पुराने जीवन का स्मरण करके वृद्ध बन्दी उन्मत्त-सा हो उठा। सन्ध्या के धुंधले प्रकाश में उसकी आँखें तारों की तरह चमक उठीं। कुछ देर बाद वह अलेग्ज़ी के कंधे पर हाथ रख कर बोला—तुम अभी युवा ही हो, पर तुम्हें भाग्य से वेड़ियाँ अच्छी मिली हैं। तुम मेरा मतलब समझ गए न?

* * *

यह खबर धीरे-धीरे सब कैदियों तक पहुँच गई। सबका ध्यान उनकी ओर गया। उनका इतिहास सब ने सुना, सब यही सोचने लगे, कि आखिर इन वेड़ियों को कौन बनाता होगा? लोगों को बन्दी रखने का यह साधन किसने ढूँढ़ निकाला होगा? जेल के कारखानों में ज़ाज़ीर, वेड़ियाँ तथा कफ़न बनाने वालों को जेल के बन्दी योंही हरदम कोसा करते हैं। फिर हाल ही में इस ओर विशेष ध्यान आकर्षित होने के कारण कई कैदी और भी कोषित हो उठे। दूसरे लोगों के हृदय दुःख से भर आए, उनका हृदय काँप उठा। उनकी आँखें एकदम खुल गईं; उन्होंने सत्य को पा लिया—“हम लोग आपस में ही अपने बन्दी-गृहों की रचना करते हैं, आपस में ही अपनी वेड़ियाँ बनाते हैं, आपस में ही गोली मारते हैं और फाँसी लगाते हैं। यह सब कार्य हम लोग आपस में ही करते हैं। इसके लिए किसी बाहर वाले की आवश्यकता नहीं होती है। ये अधिकारी केवल हमारी मूर्खता से लाभ उठाते हैं।”

२

जेल के एक कमरे में एक मोमबत्ती टिमटिमा रही थी। सामने एक लकड़ी के मोढ़े पर एक नवयुवक गम्भीर भाव से कुछ लिख रहा था। उसके मुख की सुन्ना बार-बार बदल रही थी, मालूम होता था, उसके विशाल वक्षस्थल में बहुत कड़वे तथा उत्तेजनापूर्ण भाव उठ रहे हैं। अलेग्ज़ी अपने वृद्ध पिता को पत्र लिख रहा था। उसने पत्र समाप्त किया और जेल के अधिकारियों से छिपा कर उसे अपने पिता के पास भेज दिया।

अलेग्ज़ी का पिता मैटवी एक कारखाने में काम करता था। वह स्वभाव से उदास तथा चुप रहने वाला व्यक्ति था। उसने पत्र को तीन बार पढ़ा। उसमें लिखी हुई बातें पढ़ कर उसका हृदय उत्तेजित हो उठा। जब वह कुछ शान्त हुआ, तब उसने अपने सब से ज्येष्ठ पुत्र वैसली से इसका उत्तर देने के लिए कहा। सामान्यतया मैटवी पत्रों की ओर ज़्यादा ध्यान न देता था। पर इस बार उसकी दशा विपरीत थी। वह वैसली से बोला—पत्र में मेरे लिए भी कुछ जगह छोड़ देना। और सब बातें तुम लिख दो, मैं कुछ विशेष सन्देश भेजना चाहता हूँ।

पत्र में वैसली ने घर की कुशलता, कारखाने तथा मित्रों आदि के सम्बन्ध में लिख कर मैटवी की ओर घूम कर पड़ा—अच्छा आपकी तरफ से क्या लिख दूँ?

मैटवी कुर्सी पर से उठा। उसका सारा शरीर काँप-सा रहा था। ऐसा मालूम होता था, मानो उसके हृदय के टुकड़े-टुकड़े हुए जा रहे हों। उसने अपने सुगठित हाथों से मेज़ का सहारा लिया, फिर बहुत प्रयत्न करने के बाद भराई हुई आवाज़ में बोला :—

“पत्र में यह लिखो—तुम्हारे पिता की यह इच्छा है, कि तुम उन वेड़ियों को फेंकना मत.....। वेडा अलेग्ज़ी, उसकी यह तीव्र इच्छा है, कि यदि तुम उन्हें किसी तरह यहाँ भेज सको तो भेज दो उन्हें भेजो, वे तुम्हारी यादगार होंगी.....।”

वैसली के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, वह अपने पिता की ओर कुछ देर तक एक देखता रह गया। मैटवी की स्त्री, उसकी पतोहू, लकड़ी, सब उसकी ओर ताकने लगीं। कमरे में एकदम सन्नाटा छा गया। मानो सबके हृदय में एक धक्का-सा लगा।

अलेग्ज़ी की माता आँखों में आँसु भर कर बोली—हम लोगों का जीवन योंही अति दुःखमय हो रहा है, योंही दिन बिताना कठिन हो रहा है; फिर उस पर तुम एक और दुःख मोल ले रहे हो।

“आग का जवाब आग है, समझीं! आग का जवाब आग!” वृद्ध मैटवी की उत्तेजना का कुछ ठिकाना नहीं था। फिर वह वैसली की ओर घूम कर बोला—“तुम क्या देख रहे हो, जो मैं कहता हूँ, वह लिखा या नहीं?”

वैसली ने उसका सन्देश लिख दिया।

३

जेल का जीवन बहुत ही कष्टमय था; परन्तु तब भी अलेग्ज़ी हिम्मत न हारा। पहिले ही जब उसे जेल-दण्ड की आज्ञा सुनाई गई, उसने अपने मन में सोचा—

“अलेग्ज़ी साहस मत छोड़ो! दुखी मत हो।” वह अपने इस दृढ़-निश्चय पर स्थिर रहा। जेल के असह्य कष्टों के झेलने पर भी वह यह सोचता था, कि अभी तो मेरी आयु केवल बाइस वर्ष की है और अभी जीवन का बहुत सा भाग बाकी पड़ा है। उसमें मैं अपने आदर्शों को प्राप्त कर सकता हूँ, अपनी इच्छाएँ पूर्ण कर सकता हूँ। सोच क्यों करूँ? वह एक बात हर समय याद रखता था। वह बात, जो बहुमूल्य है, पर जिसे लोग प्रायः भूल जाते हैं। “रोने से किसी का जीवन बेहतर नहीं हो सकता—रोने से किसी के कष्ट हलके नहीं हो सकते। न रोकर कोई अपने साथियों को ही ज़्यादा दुखी कर सकता है। रोने का फल तो बिलकुल इसके विरुद्ध होता है। रोकर तुम दूसरों के जीवन को दुःखमय बनाते हो और स्वतः अपने स्वास्थ्य का नाश करते हो।”

वह जेल में इस तरह रहता था, मानों अभी जीवन का आरम्भ ही नहीं हुआ है। मानो बन्दी-जीवन तथा हथकड़ी-वेड़ियाँ जीवन-संग्राम की एक तैयारी मात्र हैं। जेल के कुछ लोग समझते थे, कि वह हरदम अपने सुख-स्वप्नों में ही डूबा रहता है। वह जेल की कठिनाइयाँ तथा गन्दगी को अपनी असीम कल्पना के अनाध-समुद्र में डूबा देता है। वह इस तरह प्रसन्न रहता था, मानो उसके चारों तरफ न जेल की दीवारें थीं, न उसके पैरों में वेड़ियाँ थीं!

उसके शरीर को अधिकारियों ने बाँध रक्खा था परन्तु उसका मन स्वतन्त्र था। वह हरदम अपने आत्म-बल को तौलने का प्रयत्न करता था। “क्या मैं अपने कार्य को पूर्णरूप से कर सकूँगा? क्या मैं अपने उद्देश्य में सफलता पा सकूँगा? या मैं इन दुःखों के बोझ से हथ कर अपने उच्च विचारों से गिर जाऊँगा? अपने आदर्शों तक न पहुँच सकूँगा?”

वह अपने साथियों के साथ अच्छा बर्ताव सदा करता था, पर जेल-अधिकारियों द्वारा किए गए अपमान को ज़रा भी सहन कर सकना उसकी शक्ति के बाहर था। बहुधा वह उत्तेजित हो उठता था और इसीलिए अँधेरी कोठरी में बन्द कर दिया जाता था। वह बहुत पीटा भी जाता था, पर उसकी शक्ति का अविचल स्रोत और उसके दृढ़-निश्चय का सवेगमय प्रवाह इन सब पीड़ाओं तथा कष्टों को तिनकों की तरह बहा ले जाता था—वह अपने निश्चय से तिल भर भी हटने को तैयार न था।

बन्दी-गृह की अवधि बीत जाने पर निर्वासित रहने का समय आया। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, दुर्बलता के कारण देह की नसों तक दिखने लगी थीं, पर उसकी आँखों का तेज तनिक भी मन्द न पड़ा था।

जेल से मुक्त करते समय, जब उसकी अन्तिम तलाशी ली गई, तब जेलर ने उससे पूछा—अलेग्ज़ी, आखिर तुमने अपनी अवधि काट ही ली?

“जी हाँ।”

“देखो दूसरी बार यह नहीं हो सकेगा, दूसरी बार तुम अवश्य निरसाहस हो जाओगे।”

“मैं दूसरी बार फिर इसी तरह साहस दिखाऊँगा।”

जेलर ने उसे आश्चर्य-भरी दृष्टि से देखा। अलेग्ज़ी अपने हाथों में वेड़ियाँ लिए था। उसने ये वेड़ियाँ उससे माँग ली थीं।

कुछ चिढ़ कर जेलर बोला—अच्छा, मालूम होता है, अबकी बार तुम अपनी ही वेड़ियाँ पहन कर आओगे। शायद इसीलिए इन्हें ले जा रहे हो।

अलेग्ज़ी से न रहा गया, वह बोला—ये वेड़ियाँ तो मैं नमूने के लिए ले जा रहा हूँ। मैं अब जेल से निकल कर वेड़ियाँ बनाने का ही काम करूँगा। कौन कह सकता है, किसको इनकी ज़रूरत पड़े।

जेल्मर उसका मतलब समझ गया। उसकी आँखें अनादर एवं क्रूरता से चमक उठीं।

४

इतवार को वैसली पोस्ट ऑफिस से एक छोटा सा सन्दूक छुड़ा लाया। यह सन्दूक अलेग्जी के पास से आया था।

घर के सब लोग मेज़ के चारों तरफ़ एकत्रित हो गए। वैसली ने ऊपर का ढक्कन अलग किया और वेदियों को बाहर निकाला। वे उसके हाथ से छूट गईं और मेज़ पर से तुलक कर खनखनाती हुई ज़मीन पर गिर पड़ीं। उसकी आवाज़ से सबके हृदय में ठेस-सी लगी—सबका हृदय काँप उठा।

उन्होंने वेदियों को उठाया। धीरे-धीरे हाथ फेरा और आँखें फाड़-फाड़ कर वे उसे देखने लगे। माँ सिसकने लगी!

वैसली का सारा शरीर रोमान्चित हो उठा। अपने भावों को छिपाने के लिए उसने वेदियों को उठाया और बोला—“अच्छा इनको मैं पहिन कर देखता हूँ।” उसने अपने पैर खोले और उनमें वेदियाँ पहन लीं। इन बोड़े के टुकड़ों की शीतलता उसके गरम पैरों में होकर सारे बदन में फैल गई और उसका हृदय एकदम काँप-सा उठा। वह किसी तरह से चलने का प्रयत्न करने लगा—“अच्छा, तो अलेग्जी इस तरह से चलता होगा।” वैसली को हलाई-सी आने लगी। वह सोचने लगा, कि यदि वह ऐसी ज़रूरतों में बाँध दिया जाता तो एक दिन भी शान्ति से नहीं बिता सकता था। पीड़ा से चिन्ना कर वह सारे जेल के अधिकारियों को आक्रामक में डाल देता। पर अलेग्जी ने इन ज़रूरतों को इतने दिन पहिना, फिर भी माँ को पत्र में लिखा—“वेदियों से मुझे ज़रा भी कष्ट नहीं होता है। मैं बहुत आनन्द से हूँ।”

कमरे भर में सजाटा छाया था। सब अपने-अपने विचारों में मग्न थे। सब सोच रहे थे कि अलेग्जी की क्या दशा होगी। पीछे से किवाड़ खुलने की आहट आई। मैटवी दरवाज़े पर आया। उसने वैसली की ओर घूर कर देखा व उत्तेजित होकर बोला—तुम समझ रहे हो कि यह खिलौना है। पहिले वेदियाँ पहिनने का काम तो कर दिखाओ, फिर इनको पहिन कर घूमना।

वैसली का सिर लज्जा से नीचे झुक गया। वेदियाँ निकाल कर उसने मेज़ पर रख दीं।

मैटवी धीरे-धीरे मेज़ की ओर बढ़ा, उसने वेदियाँ अपने हाथ में उठा लीं और उसके मुँह बार-बार खोलने और बन्द करने लगा। पर उसका चित्त इस कार्य में नहीं लगा था, वह अलेग्जी के विषय में सोच रहा था। “अलेग्जी ने अपने मज़दूर भाइयों की स्वतन्त्रता व भलाई के लिए एक धनाढ्य पूँजीपति तथा बलिष्ठ सरकार का सामना किया। अलेग्जी, जो जेल जाने और मार खाने पर भी अपने सत्य-सिद्धान्तों पर अटल है; जो सत्य की रक्षा के लिए, अपने दीन-दुखी भाइयों के लिए, जेल के कष्ट भोग रहा है”—सोचते-सोचते मैटवी की आँखों में पानी आ गया। अलेग्जी की कैद की सज़ा से मैटवी के बालों पर सफ़ेदी छा गई थी। उसकी चाँद गज़ी हो चली थी। उसके हृदय में सदा एक ज्वाला-सी धधकती रहती थी। कभी-कभी रात को वह शोक से रोने लगता और फिर अपनी कायरता का स्मरण करके दाँत पीसने लगता था। “मैं क्यों रोता हूँ, मेरा पुत्र सत्य पर डटा है, वह वीर है।” वह हृदय की भीतरी अग्नि को दबाने का प्रयत्न करता था, पर प्रायः वह उसे दबाने में असफल होता था।

५

फ़्रेक्टरी में अलेग्जी की वेदियाँ आने की खबर लग गई। सब लोग मैटवी से उन्हें फ़्रेक्टरी में लाने के लिए अनुरोध करने लगे, पर वह हरदम उन्हें निराश करता रहा। हमेशा यही उत्तर देता रहा—“उन्हें देख कर क्या करोगे? उन्हें यहाँ लाने से क्या फ़ायदा?” इत्यादि। कुछ महीनों के बाद वह मान गया। उसने उन्हें फ़्रेक्टरी की वार्षिक “धन्यवाद” (ईश्वर को धन्यवाद) वाली सभा में उन्हें लाने का वचन दिया।

६

हेमन्त ऋतु का आगमन हुआ। सारे पेड़ फलों से लदने लगे। फलों में रस का सञ्चार होने लगा। खेतों में सुनहलापन छा गया। पकी घास से एक विशेष सुगन्धि निकलने लगी। वायु भी मन्द हो गई। प्रकृति की हर एक वस्तु में मन्दता और अलसता की साँस थी, फ़्रेक्टरी का सभा-गृह भरा हुआ था। सान्ध्य-सूर्य की अन्तिम किरणें अपनी ज़ालिमा से कमरे की सारी वस्तुओं को लाल कर रही थीं। ऊपर दीवार पर “वरजिन गेरी” (महात्मा ईसा की माता) का चित्र बना हुआ था। चारों ओर पादरी प्रार्थना कर रहे थे, दूसरी ओर भजन हो रहे थे। सब मज़दूर उसमें भाग ले रहे थे; पर वह सज़ीत तथा शोर मात्र था। आवाज़ से कमरे के सारे शीशे थर्रा रहे थे, चारों ओर से प्रतिध्वनियाँ आ रही थीं। इस उत्सव में फ़्रेक्टरी के डाइरेक्टर भी उपस्थित थे। अपने कपड़ों से, शृङ्गार से बर्ताव तथा बातचीत से वे और लोगों से भिन्न मालूम होते थे। उनके सामने से जितने मज़दूर इत्यादि निकलते थे, सब बड़े आदर के साथ उनका अभिवादन करते थे। उत्तर में डाइरेक्टर भी कभी-कभी अपना सिर हिला देते थे। भजन ख़तम हुए। सभागृह में एकदम शान्ति छा गई। पर एकाएक ख़ब से आवाज़ आई, सब उस स्थान की ओर बढ़े। मीढ़ में मैटवी के दुर्बल हाथों से अलेग्जी की वेदियाँ छूट कर गिर पड़ी थीं। शीघ्र ही चारों ओर मीढ़ लग गई। “मुझे दिखाओ” “मैं नहीं देख पाया” की आवाज़ें आने लगीं। अन्त में एक विशालकाय युवक उन वेदियों को हाथ में उठाए हुए एक टेबुल पर चढ़ गया। सबने अलेग्जी की वेदियों को देखा। युवक अपना वक्तव्य देने लगा—“ये अलेग्जी की वेदियाँ हैं। वह हमारी मज़दूर-सभा का एक नेता था। ये वेदियाँ उसने हमारी रक्षा के लिए जेल में जाकर पहिनी हैं। अब वह निर्वासित अवस्था में साह-वेरिया में है। शायद वह शीघ्र ही लौटेगा, समझे, वह फिर लौटेगा।” उसने फिर वेदियाँ खनखनाईं और मीढ़ में कूड़ पड़ा। वेदियों की झनकार से सारी सभा में बिजली-सी दौड़ गई। डाइरेक्टर के हृदय में तो एक बाण-सा लग गया।

चारों तरफ़ से फ़्रेक्टरी के अधिकारी टेबुल की ओर दौड़े। “हटो-हटो! ये कौन बोल रहा था? वह क्या दिखा रहा था? वह कहाँ भाग गया?” इत्यादि। उस युवक ने उन वेदियों को अपने बगल वाले के हाथ में देकर कहा—“आगे बढ़े चलो!” वे वेदियाँ झनझना कर हाथों-हाथ बाहर पहुँच गईं। वहाँ उन्हें एक युवक ने अपने कपड़ों में छिपा लिया। उनका सज़ीत बन्द हुआ।

अधिकारी चारों तरफ़ जाँच करने लगे। उन्हें वह युवक मिला गया, जिसने वेदियाँ दिखाई थीं, पर उन्हें यह पता न चला कि वेदियाँ कहाँ गईं?

७

वेदियाँ दिखाने वाला नवयुवक मध्य रात्रि में गिर-फ़्तार कर जेल में बन्द किया गया। रात भर सवारों ने मज़दूर-सभा के मुख्य सदस्यों के घर में घुस-घुस कर तलाशियाँ लीं। मैटवी के घर में भी कई सवार पहुँचे। सबको हाथ पकड़-पकड़ कर बिस्तरे के बाहर खींचा

गया। ताजे तोड़-तोड़ कर सब चीज़ें बाहर निकाल कर फेंक दी गईं। मेज़-कुर्तियाँ बलट दी गईं, हर चीज़ की तलाशी ली जाने लगी। मैटवी अचौर हो उठा, वह उत्तेजित होकर बोला—“वेदियाँ यहाँ नहीं हैं।” एक भीमकाय सवार उसकी ओर बढ़ा और बड़ी आशा से पूछने लगा—“हाँ तो बत्ती बलाओ, वह व्यक्ति कहाँ है, जिसके पास वेदियाँ हैं?”

“यह मैं हरगिज़ नहीं बता सकता।”

सवार गरज कर बोला—तुम्हें बताना पड़ेगा।

मैटवी ने फिर उत्तर दिया—“मैं हरगिज़ नहीं बता सकता।” सवार क्रोध से लाल हो गया, उसने बूढ़े मैटवी को ज़मीन पर ढकेल दिया और कहा—“बदमाश, लोग तो वहाँ प्रार्थना के लिए इकट्ठे हुए थे और तू वहाँ वेदियाँ दिखाने पहुँचा।”

मैटवी ने अपने महान क्रोध को दबा कर रुकती हुई आवाज़ से दाँत पीस कर कहा—इन वेदियों का आविष्कार मैंने थोड़े ही किया है। यह तो औरों का कार्य है! वे दूसरों को वेदियों में बाँधते हैं और अपना गुलाम बनाते हैं! मैं तो केवल उन्हें लाया था, फिर उन्हें क्यों छिपाता?

“फिर तू क्यों छिपाता है?”

मैटवी अब अपने को न संभाल सका, वह चिल्ला उठा—मैं छिपाऊँगा, सत्तर ताबों के पीछे छिपाऊँगा!

“छिपा के क्या करेगा? क्या वेदियाँ भी लाल या जवाहर हैं?”

“वे लाल-जवाहर से बढ़ कर हैं। ज़रा ठहरो, जब तुम्हारे लड़के को ज़न्जीरों पहिनाई जावेंगी, जब उसके पैरों में वेदियाँ डाली जावेंगी, तब तुम्हें पता चलेगा।”

सवार कुछ कह न सका, उसका सिर झुक गया।

८

दूसरे दिन, दिन भर मज़दूरों ने कारख़ाने में वेदियों के विषय में तथा गिरफ़्तारियों और तलाशियों के विषय में बातचीत की। मैटवी तो प्रश्नों के उत्तर देते-देते थक गया, छुट्टी होने के बाद मैटवी को एक नवयुवक मिला। उसने मैटवी से कहा—“अलेग्जी की वेदियाँ मेरे पास हैं। हमने अलेग्जी की सहायता के लिए कुछ धन भी इकट्ठा किया है। उसे आप अलेग्जी के पास भिजवा दीजिए।” मैटवी के हर्ष का ठिकाना न रहा। पहले तो वह यह आर्थिक सहायता लेने से इनकार करता रहा, पर आखिर को मान गया। वह उस युवक मज़दूर से बोला—“उन वेदियों को ज़रा संभाल कर रखना, नहीं तो तुम्हारे ऊपर भी कुछ आपत्ति आ पड़ेगी। मेरे बुढ़ापे पर रहम मत खाना। जब देखो कि तुम्हें वेदियाँ रखने से त्रुटसान पहुँचेगा, उन्हें मुझे दे देना। मैं उनके लिए सब आपत्तियाँ भेज सकूँगा।”

नवयुवक ने बड़े साहस के साथ कहा—“आपको यह सब नहीं करना पड़ेगा। अभी हम सब मौजूद हैं।” यह कह कर वह बड़े वेग से चला दिया। मैटवी कुछ देर तक उसकी ओर देखता रहा। उसका हृदय प्रेम और हर्ष से भरा हुआ था। वह सोचने लगा—“आखिर ये लोग अलेग्जी को भूलने नहीं हैं।”

९

नए वर्ष के उत्सव के दिन फिर एक बार वेदियों की झनकार सुनाई दी। नए साल के नाच की तैयारी थी। कमरे में चारों तरफ़ लोग जोड़ियाँ बना-बना कर खड़े थे। बाजों का बजना आरम्भ हुआ और सब कमरे के चारों ओर नृत्य करने लगीं। एकाएक सबकी दृष्टि एक जोड़ी पर पड़ी। उनके पैरों से वेदियों की झनकार निकल रही थी, पीठ पर ‘अलेग्जी’ लिखा था। सब लोग उसी तरफ़ दौड़े। गड़बड़ी के कारण वाद्यादि बन्द कर दिए गए। सब लोगों को मालूम हो गया कि एक नव-

युवक अलेग्ज़ी की बेड़ियाँ पहिने नाच रहा है। इसी हर्ष में एक बार फिर बाच हुआ, फ़ैक्टरी के मालिकों को पता चला। उन्होंने सरकारी अधिकारियों से तलाशी देने के लिए प्रार्थना की। कारख़ाना घेर लिया गया, सवार अन्दर घुस पड़े। पर वह जोड़ी पहिले ही अन्तर्धान हो चुकी थी।

१०

अलेग्ज़ी को उसके पिता का पत्र मिला। जिसमें इन सारी बातों का वर्णन किया गया था। उसे अपने पिता के आन्तरिक परिवर्तन पर बहुत ही आश्चर्य हुआ। वही मनुष्य अलेग्ज़ी के स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचारों से घृणा करता था, उसकी पुस्तकें फेंक देता था और सदा घर से बाहर निकाल देने की धमकी दिया करता था। एकाएक उसमें इतना परिवर्तन हुआ, उसके सिद्धान्त तक बदल गए। अलेग्ज़ी अपने पिता से तलाशियों, गिरफ़्तारियों तथा बेड़ियों के मधुर सङ्गीत का समाचार सुन कर बहुत ही हर्षित हुआ, पर साथ ही साथ उसे क्षणिक दुःख भी हुआ। वह एक बन्दी था, निर्वासित अवस्था में था, पर बेड़ियाँ घर पहुँच चुकी थीं और स्वतन्त्रता का आनन्द लूट रही थीं। वे अत्याचार, पीड़ा तथा स्वतन्त्रता का आशा-पूर्ण सङ्गीत सुना रही थीं, वे लोगों को जगा रही थीं। उनके गान में तिरस्कार भरा था—“उठो-उठो! तुमने बहुत समय खो दिया है। क्या अब सोते ही रहोगे?”

*

*

*

फ़ैक्टरी में जब वसन्तोत्सव के लिए तैयारियाँ हो रही थीं, मैटवी ने सुना कि अलेग्ज़ी निर्वासित अवस्था से निकल भागा है। उसे उसके विषय में बहुत चिन्ता रहने लगी। घर के सब लोग चिन्ता में डूब गए। हर एक को उसके एकाएक घर आने की प्रतीक्षा रहने लगी। कई रातें उन्होंने जाग कर बिताईं। मार्ग में ज़रा सा खटका होने पर वे सब के सब चौकचे हो जाते थे और प्रतीक्षा में दरवाज़ा खोलने के लिए तैयार होकर बैठ जाते थे, पर उनकी आशा पूर्ण न हुई। “शायद वह फिर से पकड़ लिया गया। तब तो वे उसे बहुत मारेंगे, उसे बहुत कष्ट देंगे।”—इस विचार से उनका हृदय काँप उठता था। मैटवी ने अलेग्ज़ी को छिपा रखने के लिए एक जगह ठीक कर ली थी। वह हरदम मज़दूरों से आगन्तुकों का पता लगाए रहता था, पर यह कुछ भी काम न आया। एक दिन सन्ध्या समय एक मनुष्य मैटवी के नाम एक पत्र लाया और चुपचाप कान में बोला—“यह पत्र आपके लड़के ने दिया है।”

वह कमरे में गया और बत्ती जला कर पत्र पढ़ने लगा। इतनी ही देर में हज़ारों कल्पनाएँ उसके मस्तिष्क से होकर निकल गईं। “शायद यह पत्र जेल से आया है या वह आ रहा है। नहीं, वह पकड़ लिया गया है।” इत्यादि। पर पत्र का समाचार बहुत ही आनन्दजनक था। अलेग्ज़ी स्वतन्त्रावस्था में था, वह एक फ़ैक्टरी में काम कर रहा था। आनन्द के मारे वृद्ध पिता की आँखें चमकने लगीं।

११

अन्त में रुस की सन् १९१७ की राज्य-क्रान्ति हुई। ज़ार के राज्य का अन्त हुआ। स्वतन्त्रता का समाचार सुन कर मैटवी की माता के आँखों में हर्ष के आँसू भर आए। “मैं कभी विश्वास नहीं कर सकती, कि मेरे दुःखों का अन्त हो गया है। मैं तो समझती थी कि इस शुभ अवसर के आने तक मैं कभी जीवित न रह सकूँगी।”

मैटवी जुलूस के साथ शहर में गया। ऊपर एक झण्डा लगा था। सन्ध्या की मन्द-मन्द वायु में वह बहुरा रहा था। आज उसकी विजय का दिवस था। अभी तक यह छिपा कर रखा जाता था। आज वह गौरव से हज़ारों मनुष्यों के सिरों पर बहुरा रहा था।

मैटवी ने पुराने अधिकारियों को हटाने तथा नए राज्य की स्थापना करने में बहुत सहायता दी। परन्तु तब भी वह सैनिकों को तथा अन्य अधिकारियों को अविश्वास की दृष्टि से देखता था; पर धीरे-धीरे उसका भ्रम जाता रहा। उसने अलेग्ज़ी की बेड़ियाँ निकाल कर उसकी तस्वीर पर टाँग दीं और उनसे बोला—“अब तुमने काफ़ी क़ैद भोग ली, अब तुम्हें स्वतन्त्रता मिली है।” उस दिन से हज़ारों लड़के तथा नवयुवक उसके यहाँ आया करते थे, वे बेड़ियों के पास आकर उनकी ओर आशापूर्ण दृष्टि से देखते थे, मानो वे इन बन्धन-रूपी बेड़ियों का रसास्वादन करना चाहते हों।

दिन में जब केवल छियाँ घर में रह जाती थीं, बहुधा बच्चे आकर दरवाज़ा खटखटाते थे और कहते थे—“भाई, हमें अन्दर आने दो। केवल एक बार देख लेने दो।” वे चित्र को देखते थे, डरते-डरते बेड़ियों को छूते थे और आपस में धीरे-धीरे कुछ कहते थे। बहुधा अलेग्ज़ी की माता इनसे तज़ा आ जाती थी और कहती थी—“बच्चो, भागो अब बहुत हो गया, इन मूखों को तो एक नया तमाशा मिल गया है।”

उनके पड़ोसी मैटवी से कहा करते थे—“मालूम होता है कि वहाँ तुमने एक नया गिरजा बना दिया है।”

“रहस्यमयी”

‘भविष्य’ के आगामी अङ्क से श्री० ऋषभ-चरण जैन लिखित ‘रहस्यमयी’ शीर्षक एक क्रान्तिकारी उपन्यास धारावाही रूप से प्रकाशित होगा। पाठकों को स्मरण रखना चाहिए कि असाधारण माँग के कारण इस समय “भविष्य” की एक भी प्रति कार्यालय में शेष नहीं बचती और न १५,००० कॉपियों से अधिक इस समय छापना ही सम्भव है। अतएव जो पाठक इस उपन्यास का रसास्वादन करना चाहें और जो फ़ाइल रखने के शौकीन हों, उन्हें अभी से ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लेना चाहिए, नहीं तो पछुताना पड़ेगा।

उत्तर में मैटवी कहता था—“उँह! देखने दो, अलेग्ज़ी घर लौटेगा तब वह आप ही इन सबकी चिन्ता करेगा।”

१२

स्वतन्त्रता की घोषणा होने के एक सप्ताह बाद अलेग्ज़ी घर लौटा। उसमें कितना परिवर्तन हो गया था। वह कितना बड़ गया था। विशालकाय शरीर और चमकती हुई आँखें देख कर मैटवी का हृदय हर्ष से फूला नहीं समाता था। आखिर ये बेड़ियाँ उसकी शारीरिक वृद्धि को नहीं रोक सकीं, उसकी जीवन-ज्योति को मन्द नहीं कर सकीं। इस मिबाप में आँसू भी बहे, छोटी से छोटी बातें भी कह डाली गईं। एकाएक अलेग्ज़ी की दृष्टि दीवार पर टंगी हुई बेड़ियों पर पड़ी। और वह बोला—“अच्छा, ये अभी तक हैं?” मैटवी ने उत्तर दिया—“हाँ, हैं। उन्होंने भी तुम्हारी तरह अपने कारावास की अवधि हाल ही में ख़तम की है।”

पिता-पुत्र दोनों एक साथ हँस पड़े। सारा कमरा उनके हर्षपूर्ण अट्टहास से गूँज उठा। मैटवी ने उनका सारा इतिहास कह सुनाया। बस इसके बाद तो अलेग्ज़ी समाज-सेवा में लग गया। सभा, जुलूस, व्याख्यान इत्यादि से उसे कभी छुटी ही नहीं मिलती थी। मैटवी

के घर में सदा आनन्द था। उनका नाम सबकी ज़बान पर था। आज मैटवी का सिर ऊँचा हो रहा था। एक दिन वह अपनी स्त्री से बोला—आज हम कितने सुखी हैं, कितने धन्य हैं! पर यदि यह सब कुछ पहिले हो सकता तो हमारी दशा कितनी भिन्न होती। शायद मेरी कमर इतनी न झुक जाती, तुम इतनी वृद्ध न देख पड़ती, घर की लड़कियों की जीवन-ज्योति इतनी लीण न हो जाती!

मार्च के अन्त में अलेग्ज़ी अपनी सभा का प्रतिनिधि बन कर राजधानी गया। गाड़ी छूटने के पहिले दौड़ कर वह अपने घर पहुँचा। जल्दी-जल्दी उसने सब से प्रेम-विदा माँगी। मैटवी और वैसली उसे स्टेशन तक पहुँचाने गए। गाड़ी आई, वह जल्दी से एक डिब्बे में चढ़ गया। कुछ ही मिनट के बाद गाड़ी स्टेशन से बाहर चली गई। यह अलेग्ज़ी की अन्तिम भाँकी थी। मैटवी के गृहजन फिर उसे न देख सके। उन्हें समाचार मिला कि वह केन्द्रीय सरकार से अप्रसन्न होकर युद्ध में भरती होकर सीमा की ओर चला गया, वहाँ उसने अपने सैनिक भाइयों को युद्ध की ख़राबियाँ बताईं तथा उन्हें युद्ध छोड़ देने के लिए प्रोत्साहित किया। इस पर अधिकारियों ने उसे गोली मार दी!!

*

*

*

कुछ ही दिनों में मैटवी के बचे हुए काले बालों पर सफ़ेदी छा गई, उसकी आँखों की ज्योति मन्द पड़ गई। वह बहुत दुबला हो गया, और एकदम चुप रहने लगा। अबदूबर में दूसरी राज्यक्रान्ति हुई। सारी सत्ता मज़दूरों तथा सैनिकों के हाथ में आ गई; इस पर भी मैटवी में कुछ परिवर्तन नहीं हुआ। वह कभी भी घर के बाहर नहीं जाता था, चारों ओर पागलों की तरह ताकता और सबको अविश्वास की दृष्टि से देखता था।

युद्ध के अन्त हो जाने के बाद उसका दुःख और भी बढ़ गया; जहाँ देखो वहाँ युद्ध से लौटे हुए सैनिक दिखाई पड़ते थे। पर उनमें उसका अलेग्ज़ी न था!

१३

नवीन क्रान्ति की बहर सारे देश में फैल रही थी। धनी अपने मकानों से निकाले जा रहे थे। दूकानें, गोदाम, कारख़ाने, रेलगाड़ियाँ, पाठशालाएँ तथा अन्य संस्थाएँ मज़दूर सभाओं के अधिकार में आ रही थीं। अधिकारियों का रोब नष्ट होता जा रही था। हर वस्तु में अधिक स्वतन्त्रता तथा सादगी मालूम होती थी। ऐसा प्रतीत होता था, कि यदि ज़रा और धैर्य से काम लिया गया तो शीघ्र ही देश अपने आदर्श तक पहुँच जावेगा। परन्तु लकड़ी, कोयला, रोटी, तेल आदि चीज़ों की कमी पड़ने लगी। साम्यवाद के सिद्धान्तों के डर से लोगों ने अपनी चीज़ें छिपाया आरम्भ कर दिया। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में नवीन राज्य-पद्धति की सफलता के विषय में शङ्का होने लगी। भविष्य में अन्धकार-सा प्रतीत होने लगा। चिन्ता तथा निराशा से मज़दूर अशान्त हो उठे। उन्होंने एक सभा की, जिसमें मज़दूर-सभा तथा साम्यवादी सरकार का घोर विरोध किया। उन्होंने कहा कि इन नेताओं ने हमें धोखा दिया है। इनकी कही हुई एक भी बात सच नहीं निकली है। हम लोग भूख से मर रहे हैं, आगे और क्या होगा? हम लोगों को चाहिए कि इन नेताओं का अन्त कर दें। उनका हृदय क्रोध से भरा था, उनकी आँखों से पीड़ा झलकती थी। मैटवी ने यह सब देखा, पर वह पहिले इस सब का मतलब ही न समझ सका। अभी थोड़े दिन पहिले ये अलेग्ज़ी के नाम पर मरने को तैयार थे। उसकी पूजा करते थे। अब उसी के अनुयायियों को गाँजी दे रहे हैं। इतना परिवर्तन क्यों? इससे वह एकदम उत्ते-

जित हो उठा; उससे यह न देखा गया, वह दौड़ कर घर आया और उसने दीवार पर से बेड़ियाँ उतारी और जल्दी-जल्दी सभा में पहुँच कर चिल्ला उठा—“मैं कुछ कहना चाहता हूँ।”

“तुम क्या कहना चाहते हो? धका क्यों देते हो?”—बगल वाले व्यक्ति ने चिल्ला कर कहा।

“मैं मैटवी, हूँ कुछ कहना चाहता हूँ।”

सब चिल्ला उठे—“अच्छा, मैटवी को जगह दो। उसे बोलने दो।”

कुछ देर में सभा में एक नया दृश्य दिखने लगा। मैटवी एक ऊँची जगह पर चढ़ गया और वह बेड़ियाँ निकाल कर खनखनाने लगा। जनता में एकदम शान्ति छा गई। मैटवी बोला—“आप लोगों ने ये बेड़ियाँ देखीं?” किसी ने उत्तर नहीं दिया, मालूम होता था कि जनता पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा! मैटवी निराश हो चला था, वह क्रोधित होकर फिर चिल्लाया—“आप सबने ये बेड़ियाँ देखीं?” एक कोने से आवाज़ आई—“हाँ देख लीं।” फिर सब एक स्वर से बोल उठे—“देख लीं, देख लीं।” मैटवी बोला—“जरा अपनी ओर देखो, तुम आपस में कुत्तों की तरह लड़ रहे हो। क्या तुम इनमें बन्द होना चाहते हो? यदि इसी तरह आपस में लड़ते रहे, तो अवश्य तुम इनके अधीन हो जाओगे। वे तुम्हें ज़ज्जीरों में बाँध कर गुलाम अवश्य बना लेंगे। तुममें से प्रत्येक व्यक्ति को अपने वश में कर लेंगे।” वह बार-बार कहता रहा—“यह याद रखो, कि वे तुम्हारी स्वतन्त्रता छुड़ा कर तुम्हें ज़ज्जीरों में बस लेंगे।”

वह चुप हो गया, जनता की सारी अशान्ति मिट गई। उन्हें अपनी मूर्खता पर लज्जा-सी मालूम होने लगी। वे आपस में कहने लगे—“हम लोग अलेग्ज़ी का उपदेश भूल गए। अपने दुखों का नाश हमें स्वतः करना पड़ेगा, अपनी राष्ट्रीय समस्याओं को स्वयं हल करना पड़ेगा।” बेड़ियों के उस स्वर्गीय सङ्कोत ने उन्हें फिर से ठीक मार्ग बताया। वे अपने-अपने कार्य में लग गए।

१४

ज्योत्सना अपने निर्मल धवल-प्रकाश से पृथ्वी को प्रकाशित कर रही थी। मन्द-मन्द वायु में खेतों में लगी हुई ऊँची घास लहरा रही थी। पर इस सारी सुन्दरता की अवहेलना करके अभागे रूसी गृह-कलह द्वारा अपना नाश कर रहे थे! रूस में गृह-युद्ध छिड़ा हुआ था। शत्रुओं ने मैटवी के शहर पर छावा किया था। कारखाने का भौंपू बज रहा था, जो अपनी पुकार द्वारा आगामी भयङ्कर भविष्य की सूचना दे रहा था। शहर भर के निवासी शख लेकर इधर-उधर दौड़ रहे थे। लोग अपनी-अपनी चीज़ें सँभाल रहे थे। शहर के युवक मज़दूर शत्रु का सामना करने गए थे।

मैटवी इन सब में नहीं था। वह अस्वस्थता में घर में पड़ा था। कारखाने का भौंपू सुन कर वह वहाँ जाने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु वह उठ ही नहीं सकता था। उसने वैसली को बुलाया और उससे कहा—“वैसली, तुम वहाँ जाओ। जल्दी जाओ, देर मत लगाना। बहुत जल्दी जाओ.....देखो तुम देर कर रहे हो..... मुझे क्रोध मत दिलाओ। शायद हम लोग अब न मिल सकेंगे, पर जाओ।”

रात भर गोलियाँ चलीं, रास्तों में लोग चिल्लाते रहे, दौड़ते हुए घोड़ों की टापों की आवाज़ें आती रहीं, पर मैटवी ने यह सब नहीं सुना, वह उर से वेदोश पड़ा रहा। सवेरे वह कुछ अच्छा हुआ।

लड़की ने आकर कहा—“उन्होंने शहर को अपने कब्जे में कर लिया है। सब सड़कें और कारखाने घेर लिए

गए हैं। वे प्रत्येक घर की तलाशी ले रहे हैं और उनका सामना करने के लिए भरती किए गए लोगों को पकड़-पकड़ कर बाज़ार में ले जा रहे हैं। शायद वहाँ उन्हें फाँसी देंगे। वैसली अभी घर नहीं लौटा है।

माता लड़की से बोली—“बस चुप रहो! यह सब बातें इनसे न कहो, चलो हम लोग इन्हें छिपा दें।”

मैटवी बोला—“तुम मुझे छिपाने जा रही हो? मैं कभी न छिपूँगा।”

“प्रत्येक व्यक्ति छिप रहा है।”

“वे सब मूर्ख हैं।”

वैसली की स्त्री एकदम दौड़ती-दौड़ती कमरे में आई और उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया। दौड़ने से उसकी साँस फूल रही थी, वह जल्दी-जल्दी बोली—“वे यहाँ आ रहे हैं, किसी ने उनसे हम लोगों के विषय में कह दिया है। एक अधिकारी आ रहा है और उसके साथ तीन सैनिक भी हैं।”

अलेग्ज़ी की माता अधीर हो उठी, वह दुःख से सिसकने लगी। “सब चुप होकर बैठ जाओ। हे ईश्वर! तुम्हीं हम लोगों को इन दुष्टों के हाथ से बचाओ।” सब चुप बैठ गईं। मैटवी ने अपनी आँखें बन्द कर लीं, पर उसे बेड़ियों का ध्यान आया, वह एक बार ही चिल्ला उठा—“अलेग्ज़ी की बेड़ियाँ! उन्हें छिपा लो, नहीं तो वे ले जावेंगे।” लड़की उस तरफ़ दौड़ी, पर उसी समय बाहर सैनिकों के पैरों की आहट सुनाई दी। वह चबरा कर वहीं बैठ गई।

एक अधिकारी तथा तीन सैनिक कमरे के अन्दर आए—“यह किसका घर है? अच्छा तो मैटवी तुम्हीं हो। तुम्हीं सभा में बेड़ियों का सङ्गीत सुनाते हो, अच्छा तो इस घर की तलाशी लो।”

सैनिक सारी चीज़ें उथल-पुथल करने लगे। इधर-उधर फँसने लगे। उस अधिकारी ने बेड़ियाँ ढँगी देखीं और उनकी ओर झपटा। बेड़ियों की झङ्कार सुन कर मैटवी चौंक पड़ा, उसमें न जाने कहाँ से शक्ति आ गई। वह बिस्तरे पर से उठ कर बैठ गया और क्रोधित होकर बोला—“उन्हें वहीं रख दो! खबरदार उन्हें मत छुओ!!”

अधिकारी लाल हो गया—“क्या कह रहा है? क्या तू भी फाँसी पर चढ़ना चाहता है?”

“मुझे फाँसी दे दो, पर वे बेड़ियाँ न छुओ, वे इसलिए नहीं हैं।” पर उसने इस पर ध्यान न दिया, तलाशी प्रतप्त हुई। बेड़ियों के अतिरिक्त घर में और कुछ भी नहीं मिला। वे जाने लगे। मैटवी भी चिल्लाता हुआ उनके पीछे भागने लगा, पर उसकी लड़की तथा स्त्री ने उसे पकड़ लिया। दोपहर के करीब वह नज़र बचा कर भाग निकला और कई अधिकारियों से मिला। वह सब से बड़ी पूछता था कि “वह अधिकारी कहाँ गया, जो मेरी बेड़ियाँ ले गया है। वे मेरी हैं, मेरे लड़के की हैं।”

१५

रात का समय था, एक सवार फेरी पर चला जा रहा था। किसी झीज़ पर उसका पैर पड़ा, वह तुरन्त घोड़े पर से उतरा। एक बूढ़ा वेदोश सड़क पर पड़ा था। उसकी कनपटी पर बन्दूक की छोट का निशान था। थोड़ी दूर पर कोई एक छोटी सी वस्तु पड़ी हुई थी। उस पर सुबहली धूल लग रही थी। सवार ने उसे उठाया, वे बेड़ियाँ थीं। “तो यह मैटवी है और वे अलेग्ज़ी की बेड़ियाँ हैं?” सवार कुछ सोचने लगा, फिर उसने एक बार बेड़ियों को खनखनाया। उसका सारा शरीर रोमाञ्चित हो उठा। रात का सन्नाटा छाया था, बेड़ियों की झङ्कार एक बार चारों ओर गूँज गई!

तरलाग्नि

[प्रोफेसर चतुरखेन जी शाखी]

(११ वीं संख्या से आगे)

ज्वालामुखी—

देखने में अप्रदाय, किन्तु अगाध तक उसका गर्भ-विस्तार था, ऊपर से प्रशान्त और सुहावना दीखता था, किन्तु भीतर तरलाग्नि की असह्य और दुर्धर्ष ज्वालामुखी का समुद्र उमड़ रहा था। विश्व के दुखियों की वेदना-मय हाथ की निःस्वास—उसे लुहार की मरी हुई खाल की धोंकनी की तरह भड़का रही थी। सत्ता का भीषण उत्ताप उसे सख्त न था।

उसका गगनस्पर्शी, प्रशान्त, छुद्र मुख, एकटक अनन्त आकाश से कुछ कह रहा था।

आकाश में पूर्ण अवकाश था।

अपरिमित ज्वालाग्राही द्रव-सत्त्व संग्रह हो रहे थे।

जगत के पाप, दुःख, वेदना, पीड़न और परितापों की ज्वाला नदियों का, भूगर्भ मार्ग से चुरचाप उस अग्नि-समुद्र में सङ्गम हो रहा था।

अकरमात्—

*

*

*

अकरमात्—

स्फोट हुआ।

प्रथम एक अकल्पित सूक्ष्म धूम-रेखा उठी, और सातों आकाश तक चण भर में पहुँच गई।

व्यवसाय-व्यस्त जनों ने देखा और अपने धन्धे में लगे।

अच्छी तरह देखने और समझने का किसी को भी अवसर न था। वह सीण धूम-रेखा धीरे-धीरे पुष्ट होकर एक भीमकाय स्तम्भ हो गई।

जिसका एक सिरा भूदोह में, और दूसरा स्वर्लोक में था, इसके बाद ही।

आरक्त पीत ज्वाला की लहरें दीख पड़ीं।

प्रतिक्षण वे वृद्धिजल होती थीं।

दूर से देखने में मन-मोहक थीं।

सर्प-सौन्दर्य की तरह वे अतिशय मनोमोहक थीं।

मृदु श्वेत-वर्ण ने देखा।

और हँस कर कहा—

क्या मनोरम क्रुदरत का खेल है।

उसने सत्ताओं के मूल अवयवों को एकत्र कर अपना अवशिष्ट कौशल समाप्त किया।

दुर्धर्ष चोभ हुआ।

*

*

*

दुर्धर्ष चोभ हुआ—

सहस्र उत्क्रापात की तरह, नेत्रों की ज्योति को निष्प्रभ करता हुआ, ज्वालाभयौ धारा का एक वेगवान् प्रवाह—एक बार अतर्क्य गति से आकाश के अधोपट तक उन्नत होकर—जगत पर बरस गया। जगत की जातियाँ स्तब्ध खड़ी होकर देखने लगीं।

लोहू और लोहे का घमासान पागल सा हो गया।

श्वेत-वर्ण की आकाश तक चढ़ी हुई मूर्ख अस्त-व्यस्त हो गई!!

वह तरलाग्नि,

(क्रमशः)

*

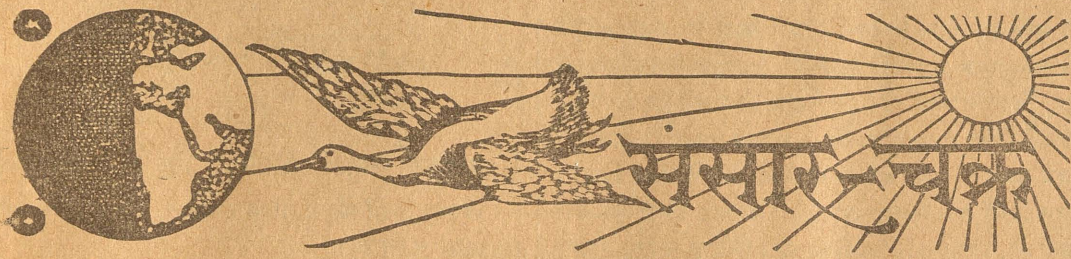
*

*

*

*

*



मिश्र का स्वाधीनता-संग्राम

[मुन्शी नवजादिक लाल जी श्रीवास्तव]

(शेषांश)

गत १९२०-२१ में, जिस समय भारत में अहिंसात्मक असहयोग की दुन्दुभी बज उठी थी; साधक-श्रेष्ठ महात्मा गाँधी स्वाधीनता-प्राप्ति के अभिनव उपाय की परीक्षा में लगे थे, ठीक उसी समय मिश्र-वासियों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन आरम्भ करके ग्रेट-ब्रिटेन के धुरन्धर राजनीतिज्ञों को स्तम्भित कर दिया था। समस्त जगत आश्चर्य-विभूषण नेत्रों से यह अभावनीय दृश्य देख रहा था। वीर मिश्रियों के अटल स्वाधीनता-प्रेम के सामने ग्रेट-ब्रिटेन के पशुबल को मत्था टेकने के लिए बाध्य हो जाना पड़ा। उस समय ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध समस्त संसार में असन्तोष फैला हुआ था। इङ्गलैण्ड में बेकारी की समस्या प्रबल हो उठी थी। रूस, इटली, फ्रान्स, तुर्किस्तान, ईरान, अफ़गाणिस्तान, जापान, चीन और हिन्दोस्तान आदि कोई देश ऐसा न था, जहाँ ब्रिटेन के प्रति अनास्था का भाव न उत्पन्न हुआ हो। उसी समय तुर्किस्तान में कमालपाशा ने और चीन में कर्मवीर सनघातसेन ने ब्रिटेन की साम्राज्य-लिप्सा के विरुद्ध तुमुल आन्दोलन आरम्भ किया था। जापान, रूस, इटली आदि ब्रिटेन को सन्देह की नज़रों से देखने लगे थे। भारत में महात्मा गाँधी का असहयोग आन्दोलन एक अपूर्व नवयुग की सूचना दे रहा था। गर्जें कि उस समय ब्रिटेन पर वास्तव में विपत्ति की घनवटा घहरा रही थी।

परन्तु हम तो ब्रिटिश-भूतंश के क्रायल हैं। शह-जोरों से दबने और कमजोरों को पीसने में संसार की कोई जाति इज़रत जॉनबुल का मुकाबला नहीं कर सकती। जब ये देखते हैं, कि इनके न्याय और उदारता का पर्दा फ्राश हो रहा है, यहाँ अब स्वार्थपरता को छोड़े बिना काम न चलेगा, तो वे झट शान्तिपूर्ण समझौते का आश्रय लेकर संसार की आँखों में धूल झोंक देते हैं। उस समय वे फ़ौरन 'कॉन्फ़ेन्स' या 'कमीशन' का अमोघ फन्दा फेंकते हैं। इससे उनके स्वार्थों की भी सिद्धि होती है और संसार को घपले में डाल देने का भी मौका मिल जाता है। मिश्र के सम्बन्ध में भी अज़रेज़ों ने अपने उसी विर-अभ्यस्त उपाय का अवलम्बन किया। जब उन्होंने देखा कि शान्ति और शृङ्खला की रक्षा की दुहाई देकर आन्दोलनकारियों को पीसने से काम न चलेगा, तो झट श्रीमान मिलनर महोदय की अध्यक्षता में एक रॉयल कमीशन, मिश्र की राजनीतिक अवस्था की जाँच के लिए भेज दिया। परन्तु मिश्र वाले इस चालबाज़ी से वाकिफ़ थे। फलतः भारतीय रॉयल कमीशन के सूत्रधार श्रीमान साहमन महोदय की तरह मिलनर साहब को भी मिश्र में 'स्याह स्वागत' ही नसीब हुआ। एक भी मिश्रवासी उस रॉयल कमीशन के सामने अपना दुःख निवेदन करने अथवा गवाही देने न गया! मिलनर साहब को अपना-सा सुँह लेकर अपने घर लौट जाना पड़ा। अपने प्यारे मिश्र को दायित्व-ज्ञान-हीन दुष्ट

आन्दोलनकारियों के पञ्जों से निकालने के लिए अज़रेज़ों ने चेष्टा तो बहुत की, परन्तु मिश्र की बदकिस्मती ने कुछ भी न होने दिया।

अस्तु, जब उन्होंने देखा कि कमबख्त किसी तरह मानते ही नहीं, तो एक 'सीमाबद्ध स्वाधीनता' (?) देकर उन्हें फुसलाने की चेष्टा की गई। श्रीमान लॉयड जॉर्ज की उदार-हृदय सरकार ने इस अमूल्य दान के एवज़ में थोड़ी समता अपने हाथों में रख लिया। अर्थात् केवल बाहरी शत्रुओं से मिश्र की रक्षा करने का भार, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और आर्थिक प्रबन्ध अपने अधिकार में रख कर बाक़ी सब कुछ (?) उसे सौंप दिया गया! इसके साथ ही यह व्यवस्था भी कर ली गई कि अगर कहीं ब्रिटेन के आर्थिक व्यापार को ठेस लगने की सम्भावना दिखाई पड़ेगी, तो मिश्र की अभ्यन्तरीय नीति में वह दखल दे सकेगा। फलतः स्वाधीनता प्राप्त कर लेने पर भी मिश्र को राजनैतिक, अर्थनैतिक और अन्तर्जातीय व्यापार में ब्रिटेन के चरणों का ही आश्रय लेना पड़ा।

परन्तु मिश्रवासियों के हृदयों में स्वतन्त्रता की जो भीषण ज्वाला धधक रही थी; वह इन पानी के छोटों से बुझने वाली न थी। श्री० ज़गलुलपाशा और उनके अक्लान्त सहकर्मी-वृन्द स्वाधीनता के इस ओस-कण से सन्तुष्ट न हुए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर दी कि हमें आंशिक स्वतन्त्रता नहीं चाहिए। हम तो जब तक जीवित रहेंगे, तब तक पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए लड़ते रहेंगे। फलतः उन्होंने पूर्ण उत्साह के साथ अपना आन्दोलन जारी रखा। देखते-देखते फिर वही दावाधि धधक उठी। चारों ओर एक अपूर्व उत्साह दृष्टि-गोचर होने लगा। स्वाधीनता लाभ करने की प्रबल आकांक्षा ने समस्त जाति के दिल में विजली का सञ्चार कर दिया। अज़रेज़ों द्वारा अनुमोदित जातीय पार्लामेण्ट का निर्वाचन आरम्भ हुआ। पूर्ण स्वाधीनतावादी बहुत से मिश्री उसके सदस्य बने। पार्लामेण्ट पर राष्ट्रीय प्रभाव डाल कर देश को पूर्णरूप से स्वाधीन कर देने के लिए परम स्वाधीनतावादी ज़गलुलपाशा प्रथम प्रधान-मन्त्री बने। इसी समय ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल भी बदल गया। मि० मेकडॉनल्ड प्रथम बार ब्रिटेन के प्रधान-मन्त्री पद पर नियुक्त हुए। उनकी अर्थात् मज़दूरों की सरकार ने मिश्र के साथ एक समझौता कर लेने का विचार प्रकट किया। वार्तालाप आरम्भ हो गया, परन्तु ब्रिटेन के साम्राज्यवाद सम्बन्धी विचारों में कोई परिवर्तन परिलक्षित नहीं हुआ। इधर ज़गलुल ने भी अपना पूर्ण स्वाधीनता वाला दावा कायम रखा। परन्तु उनकी आकांक्षा की पूर्ति का पथ कष्टकाकीर्ण ही रह गया। वह चाहते थे, मिश्र को एक पूर्ण स्वाधीन राष्ट्र के रूप में परिणत करना और मि० मेकडॉनल्ड चाहते थे, उसे साम्राज्य के शिकंजे में कसे रखना। फलतः समझौते की बातचीत विफल होकर रही।

मेकडॉनल्ड की सरकार के पतन के बाद इङ्गलैण्ड का शासन-सूत्र पुनः कज़रवेटिव दल के हाथों में चला गया। मि० वाट्सोन ने नवीन मन्त्री-सभा का सज़्जन किया। इसके साथ ही इङ्गलैण्ड की राजनीतिक अवस्था में भी विशेष परिवर्तन हुआ। इस दल की चेष्टा से फ्रान्सीसी और अज़रेज़ों ने अपनी पुरानी प्रतिद्वन्द्विता भूल कर उत्तरीय अफ़्रीका (मोरको और मिश्र) पर अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित रखने का दृढ़ सङ्कल्प किया। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए इटली, फ्रान्स और इङ्गलैण्ड एकता-सूत्र में आवद्ध हुए। इङ्गलैण्ड ने मिश्र के राष्ट्रीय दल को सम्पूर्ण रूप से कुचल डालने की इच्छा से भयङ्कर दमन आरम्भ कर दिया। उस समय भी मिश्री पार्लामेण्ट का मन्त्रित्व ज़गलुलपाशा के अधिकार में था। उन्होंने विदेशियों के अत्याचार से मिश्र को बचाने के लिए एक नया क़ानून बनाने का विचार किया। अज़रेज़ों को इस बात की ख़बर मिली तो उन्होंने मिश्रवासियों को धमकाना आरम्भ किया। परन्तु दृढ़-हृदय पाशा महोदय ऐसी धमकियों से विचलित होने वाले न थे। अज़रेज़ों ने उन्हें लिखा कि अगर वे अपना सङ्कल्प परिस्थान नहीं करेंगे, तो हम मिश्र पर गोले बरसा कर उसे भून डालेंगे। इस समय बम्बई के भूतपूर्व लाट लॉर्ड लॉयड मिश्र में ब्रिटेन की ओर से हाई कमिश्नर थे। उन्होंने ज़गलुलपाशा को लिखा कि आप मन्त्रित्व परित्याग कर दें, नहीं तो हम मिश्र के विरुद्ध युद्ध-घोषणा करेंगे। देश-भक्त ज़गलुलपाशा ने देखा कि प्रबल ब्रिटिश शक्ति के साथ प्रस्थान रूप से लोहा लेने में देश का कल्याण नहीं है। स्वार्थ पर ब्रिटेन अगर मिश्र पर चढ़ाई कर देगा, तो वह बहुत दिनों के लिए पराधीनता की ज़न्जीर में बँध जायगा। इसलिए उन्होंने मन्त्रित्व से इस्तीफ़ा दे दिया। परन्तु मातृ-भूमि को इस सङ्कटावस्था में छोड़ कर निश्चिन्त रूप से बैठ जाना भी महामना पाशा के लिए कठिन था। मन्त्री-पद से अलग होते ही उन्होंने मिश्री पार्लामेण्ट के विपक्षियों का नेतृत्व ग्रहण किया।

महात्मा ज़गलुल स्वाधीनता-कामी मिश्र के दीक्षा-गुरु थे। सन् १९०६ से सन् १९२७ तक उन्होंने अपनी मातृ-भूमि को शृङ्खला-मुक्त करने के लिए जो घोर परिश्रम किया था, उसकी तुलना नहीं हो सकती। इस नर-केसरी की बदौलत मिश्र में नवजीवन का सञ्चार हुआ था। देश के लिए मिश्रियों ने जो अलौकिक त्याग स्वीकार किया था, उसका सारा श्रेय एकमात्र स्वर्ग-वासी ज़गलुलपाशा को है। बारम्बार अज़रेज़ों द्वारा लाञ्छित और अपमानित होकर भी पाशा कभी हतोत्साह नहीं हुए थे। मातृ-भूमि के चरणों पर उन्होंने अपना सारा जीवन उत्सर्ग कर दिया था। राज-शक्ति ने उन्हें गिराने में कोई दक्कीका बाक़ी नहीं रक्खा था, परन्तु अपने असीम आत्मबल और त्याग द्वारा उन्होंने अपने देशवासियों के दिलों में घर कर लिया था। जीवन के अन्तिम काल में शासन-तन्त्र से संयुक्त रह कर भी वे सदा-सर्वदा अपने देश को विदेशियों के चङ्गुल से विमुक्त करने में ही लगे थे। सन् १९१९ ई० में अज़रेज़ी सरकार ने उन्हें तथा उनके कई साथियों को देश-निकाबे की सज़ा देकर मालटा भेज दिया था। परन्तु इस निर्वासन का नतीजा अज़रेज़ों के लिए अच्छा नहीं हुआ। पाशा के हटते ही सारे मिश्र में राजविद्रोह की भीषण आग धधक उठी। अपने देश-प्रिय नेता के निर्वासन का समाचार पाकर सारा मिश्र खलबला उठा। चारों ओर मार-काट और खून-ख़राबी का बाज़ार गर्म हो उठा। इसलिए अन्त में झूठ मार कर अज़रेज़ों ने पाशा को मुक्त कर दिया। पाशा महोदय की अक़ान्त चेष्टा से ही मिलनर कमीशन का सफलतापूर्ण बहिष्कार हुआ था। इसी सिलसिले में वे कई बार इङ्गलैण्ड गए और

ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री को बारम्बार समझाया कि मिश्र स्वाधीन होकर ही रहेगा, परन्तु इसका कोई फल नहीं हुआ। इसी समय मिश्र के मॉडरेट लीडर, हमारे देश के सर सप्र और जयकर आदि की तरह केवल व्याख्यानबाजी के भरोसे देश का कल्याण-साधन करने वाले, आदिल पाशा आदि ने उन्हें कई बार मिश्र के प्रधान मन्त्रि-पद पर प्रतिष्ठित करने का ह्रादा किया, परन्तु जगलुल ने स्वीकार नहीं किया। वह किसी तरह भी अपने आदर्श को परिस्थान करना नहीं चाहते थे। प्रथम निर्वासन से लौटने पर उन्होंने चण भर के लिए भी विश्राम न करके अपनी सम्पूर्ण शक्ति द्वारा स्वाधीनता-आन्दोलन चलाना आरम्भ कर दिया। ब्रिटेन के राजनीतिज्ञ पाशा की शक्ति के कायल थे। वे अच्छी तरह जानते थे कि यह महान पुरुष जो चाहे वही कर सकता है। अङ्गरेजों ने बारम्बार पाशा को निर्वासित करके, नज़रबन्द करके और जेल देकर उनकी शक्ति की पूरी जाँच की थी। सिसली और एडेन में नज़रबन्दी के दिन व्यतीत करने पर सन् १९२२ में पाशा महोदय निर्वासित करके जिवराल्टर भेजे गए। वहाँ जाने पर उनका स्वास्थ्य अत्यन्त खराब हो गया था। उस समय अङ्गरेजों ने उनकी धर्म-पत्नी को उनके साथ रहने की अनुमति प्रदान की थी। परन्तु वह वीराङ्गना भी किसी तरह कम न थी। उस समय वह पति के अचूरे कार्यों की पूर्ति में लगी थी। इसलिए लोगों के कहने पर भी वह कार्य छोड़ कर जिवराल्टर जाने को प्रस्तुत न हुईं। अन्त में स्वास्थ्य की खराबी के कारण, सन् १९२३ ई० में पाशा मुक्त होकर अपने देश लौट आए। उनके पक्षार्थ करते ही एक बार फिर मिश्र जाग उठा। उसी समय नवीन शासन-संस्कार की भी प्रतिष्ठा हुई, जगलुल ने मन्त्रि-पद ग्रहण किया। इसके बाद उनके इस्तीफा देने की नौबत आई, जिसका जिक्र हम ऊपर कर चुके हैं।

महात्मा जगलुल के जीवन का लक्ष्य था मिश्र को स्वाधीन करना, इसलिए वे जब तक जीते रहे, तब तक बराबर इसके लिए संग्राम करते रहे। उनके जीवन का मूल-मन्त्र था—'कार्यम् वा साधयामि शरीरं वा पातयामि।' यद्यपि वे अपने जीवन-काल में ही मिश्र को पूर्ण स्वाधीन नहीं देख सके, परन्तु उन्होंने अपने देशवासियों को जो महान मन्त्र प्रदान किया है, उसकी शक्ति अमोघ है। उस महामन्त्र की बदौलत आज न सही, कल मिश्र अवश्य ही एक सम्पूर्ण स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में दिखाई देगा। ईश्वर की कृपा से महात्मा जगलुल को धर्मपत्नी भी वैसी ही मिल गई थी। इस पुण्यवती महिला के संसर्ग ने पाशा के जीवन को और भी उज्ज्वल बना दिया था। देश-सेवा के कार्यों में छाया की भाँति उन्होंने पति का साथ दिया था। उनके बन्दी या द्विषान्तरित होने पर कई बार उन्होंने उनके कार्यों को सँभाल कर अपनी कार्यदक्षता का परिचय दिया था। जिस समय जिवराल्टर में पाशा का स्वास्थ्य खराब हो गया था, उस समय लोगों ने बहुत कहा कि आप पाशा के पास चली जायँ, आपकी शुश्रूषा से उनका स्वास्थ्य ठीक हो जायगा; परन्तु पाशा ने तो उन्हें पहले से ही राष्ट्र-सेवा का महान कार्य सौंप रक्खा था। उन्होंने पत्नी को जिवराल्टर आने की आज्ञा नहीं दी।

महात्मा जगलुलपाशा के जीवन का इतिहास वास्तव में मिश्र की स्वाधीनता का इतिहास है। पाशा का त्याग, आदर्श कर्मनिष्ठा और देश-प्रेम की तुलना नहीं हो सकती। बहुतों की धारणा है कि अगर सन् १९२७ में पाशा की मृत्यु न हो जाती और वे कम से कम दो वर्ष भी और जीवित रह जाते, तो मिश्र पूर्ण रूप से स्वाधीन हो जाता। परन्तु किसी ने सच कहा है कि—“मेरे मन बहुत और है कर्ता के कलु और!”

अस्तु, महात्मा जगलुल के इस्तीफा देकर अलग

हो जाने पर श्री० सरवत पाशा मिश्र के प्रधान-मन्त्री नियुक्त हुए। अङ्गरेजों ने अपने स्वार्थों की रक्षा करते हुए, मिश्र के साथ फिर नए सिरे से समझौता करने का विचार किया। इस सम्बन्ध में सरवत पाशा से बातचीत करने का भार सर ऑस्टिन चेम्बरलेन ने ग्रहण किया। बहुत दिनों तक लिखा-पढ़ी हुई। शायद दोनों एक बार मिले भी, परन्तु कोई नतीजा नहीं निकल सका। अङ्गरेज अपने स्वार्थों को तिल भर छोड़ने को भी प्रस्तुत न हुए। फलतः सरवत पाशा भी अपने पूर्ण स्वाधीनता के सिद्धान्त पर डटे रहे। उस समय मिश्र की पार्लामेण्ट में राष्ट्रीय दल की ही प्रधानता थी। इसलिए ब्रिटिश हाई-कमिश्नर की सलाह से मिश्र के राजा फ़ाद ने पार्लामेण्ट को तोड़ दिया। फिर नवीन पार्लामेण्ट का सङ्गठन हुआ और महमूद नए मन्त्री चुने गए। अङ्गरेजों ने महमूद पाशा के साथ भी सन्धि की चर्चा आरम्भ की। इङ्ग्लैण्ड की वर्तमान मज़दूर-सरकार ने एक लम्बा-चौड़ा प्रस्ताव लिख भेजा, जिसका सार-मर्म नीचे दिया जाता है :—

(१) मिश्र से ब्रिटिश फ़ौज हटा ली जायगी, (२) दोनों देशों में परस्पर मित्रता का सम्बन्ध रहेगा, (३) मिश्रस्थ विदेशी प्रजा की जान और माल की रक्षा का दायित्व मिश्र की सरकार पर रहेगा, (४) मिश्री सेना को अगर विदेशी राष्ट्रों से वैदेशिक शिखागत सहायता लेने की आवश्यकता होगी तो ब्रिटिश सरकार से अनुमति लेने की आवश्यकता होगी, (५) स्वेज़ नहर की रक्षा के लिए मिश्र में एक ब्रिटिश सेना मौजूद रहेगी, (६) मिश्र के जो अफ़सर विदेशों में नियुक्त होंगे, वे अङ्गरेज होंगे, (७) हाई-कमिश्नर के स्थान पर दोनों देशों में एक-एक राजदूत रहेंगे, (८) सुडान का शासन-कार्य सन् १९१९ की सन्धि के अनुसार होता रहेगा, परन्तु इस सम्बन्ध में नवीन सुधार करने का अधिकार इङ्ग्लैण्ड को रहेगा, (९) इस समझौते के कारण विश्वराष्ट्र-सङ्घ अथवा केलग के समझौते में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ेगी, (१०) यह केवल २५ वर्ष तक जीवित रहेगा।

इन शर्तों के सम्बन्ध में महमूद पाशा के साथ अङ्गरेजों का जो पत्र-व्यवहार हुआ है, उससे मालूम हुआ है कि मिश्री सेना को ब्रिटिश प्रणाली से शिखा दी जाएगी और उसका भार इङ्ग्लैण्ड पर रहेगा। स्वेज़ की रक्षा के लिए जो फ़ौज मिश्र में रहेगी, बिना भाड़ा के ही रहेगी। ब्रिटिश और मिश्र के सिवा कोई हवाई जहाज़ स्वेज़ के ऊपर तेरह मील से अधिक नहीं जा सकेगा। मिश्र के विचार और राजस्व विभाग में जो अङ्गरेज अफ़सर नियुक्त हैं, वे कुछ दिनों तक अपने पदों पर बदस्तूर कायम रहेंगे।

परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिघटतों का कथन है कि उपर्युक्त शर्तें भी चालवाजी से फ़ाली नहीं हैं। अङ्गरेज किसी तरह मिश्र को पूर्णरूप से स्वाधीन नहीं रहने देंगे।

अस्तु, जिस समय इन शर्तों पर दोनों दलों के नेता विचार कर रहे थे, उस समय मिश्र के राष्ट्रीय दल वालों ने इसका तीव्र विरोध किया था। उन लोगों ने घोषणा की कि मिश्र का वर्तमान शासन-तन्त्र न्यायानुमोदित नहीं है, इसलिए जब तक पार्लामेण्ट का पुनः निर्वाचन न हो, तब तक इस सन्धि के सम्बन्ध में कोई बातचीत नहीं होनी चाहिए। परन्तु इङ्ग्लैण्ड की वर्तमान मज़दूर-सरकार को यह आशा है कि अन्त में मिश्र का राष्ट्रीय दल राजी हो जायगा। क्योंकि उसे यह मानना ही पड़ेगा कि इङ्ग्लैण्ड के अनुदार दल की सरकार इतना देना भी स्वीकार नहीं करेगी। इधर इङ्ग्लैण्ड का अनुदार दल भी इस सन्धि का घोर विरोध कर रहा है। देखना चाहिए ऊँट किस करवट बैठता है।

रजत-रज

[संग्रहकर्ता—श्री० लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल]

ईश्वर उन्हीं का सहायक होता है, जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं।

पिञ्जरे में गाने वाली चिड़िया विस्तृत पर्वत-राशियों में आकर अपना राग भूल जाती है।

पुस्तक मस्तिष्क को अलंकृत करने के लिए है; आलमारी की शोभा बढ़ाने के लिए नहीं।

पृथ्वी के पुष्पालंकृत यौवन को देख कर अपने नेत्रों को सफल करने की लालसा से शीतकाल दवे पाँव बसन्त के समीप आता है।

दीवार के भी कान होते हैं।

युवावस्था आश्रय की उपेक्षा करती है; वृद्धावस्था आश्रय की खोज।

काठ की हॉडी बार-बार नहीं चढ़ती; धोखे का व्यापार एक ही बार होता है।

गुलाम का कोई धर्म नहीं होता है।

संसार की कोई वस्तु स्थिर नहीं, किन्तु पाप की कालिमा अमर और अमिट है। कीर्ति और वश कालान्तर में मिट जाते हैं, परन्तु पाप का धब्बा नहीं मिटता।

मन की बात आदर्मी के मुख से अनायास ही निकल जाती है। सावधान होकर अपने भावों को हम छिपा लेते हैं।

किसी को धोखा देना अपने आपको धोखा देना है।

एक छट कहता है—मैं अपनी फूल की छोटी कुटिया में बैठ कर तेरी उपासना करूँगा। तेरे मन्दिर की विशालता अपनी सुन्दरता द्वारा मेरी उपासना में बाधक होती है।

ईश्वर इस छटता से प्रसन्न होता है।

शत्रु से अपनी निर्बलता कहने वाले को हम क्या कहेंगे ?

विधवा का लाल उसका लाड़ला बेटा ही नहीं, उसके पति की निशानी भी है।

परमात्मा पूजा का नहीं, प्रेम का भूखा है।

बन की निर्जनता में कोई पाप करो, तुम देखोगे कि तुम्हारे नीचे की घास, हरे-भरे वृक्ष, निर्जीव पत्थर तुम्हारे ऊपर अभियोग लगाएँगे।

पेट की ज्वाला पत्ती को जाल में फँसाती है।

जो जितना ही लोगों के लिए अधिक चिन्तित है, वह उतना ही बड़ा देश-भक्त है।

लेनिन और गाँधी

[श्री० त्रिवेणीप्रसाद जी, बी० ए०]

लेनिन और गाँधी उन दिव्य महात्माओं में से हैं, जिन्होंने स्वार्थ को तिलाञ्जलि देकर मानव जाति के उपकार के लिए अपना सर्वस्व उस्सर्ग कर दिया है। हम बुद्ध और ईसा के विषय में जानते हैं; हम जानते हैं कि मानव जाति का उद्धार करना ही बुद्ध और ईसा का उद्देश्य था। उन्होंने मानव जाति के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर दिया था। यदि हम कहें, कि लेनिन और गाँधी त्याग में बुद्ध और ईसा से कम नहीं हैं, तो अत्युक्ति न होगी।

लेनिन और गाँधी आज मनुष्य-मात्र के लिए पूज्य हैं। इनकी दिव्य प्रभा किसी देश-विशेष तक ही परिमित नहीं है, बल्कि संसार का कोना-कोना इनके महान त्याग से जगमगा उठा है। सचमुच बहुत दिनों के बाद संसार को लेनिन और गाँधी-जैसे लालों को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ज़रा देखें तो संसारोद्यान के इन दो पुष्पों में क्या विशेषताएँ हैं !

लेनिन

लेनिन के विषय में कुछ जानने के पहले उसके जन्म के पूर्व रूस की परिस्थिति कैसी थी, इस पर विचार करना आवश्यक है। अस्तु

लेनिन के जन्म के बहुत पहले ही पीटर-महान ने रूस में पारचाय सभ्यता—विशेषतया वहाँ के आविष्कारों का प्रचार करना चाहा था। उनका उद्देश्य था अपनी शक्ति को बढ़ाना; और इसलिए यूरोपीय आविष्कारों की सहायता अनिवार्य रूप से आवश्यक थी। यद्यपि पीटर-महान का उद्देश्य कुछ दूसरा ही था, तो भी भविष्य के लिए उन्होंने रूस का मार्ग साफ़ कर दिया। एक बार सुयोग मिल जाने पर रूस पर पाश्चात्य विद्वानों के विचारों का प्रभाव पड़ने लगा। हम जानते हैं कि यूरोप क्रान्ति का केन्द्र रहा है। फ़्रांस की राज्य-क्रान्ति ने जिन विचारों का उद्घाटन किया था, वह सारे यूरोप में फैल चुका था। अब रूस भी इन्हीं विचारों को अपनाने के लिए आगे झुका।

ऐसी दशा में जो होना चाहिए था, वही हुआ। रूस दो दलों में विभक्त हो गया। सामाजिक क्रान्ति करने के लिए एक दल पश्चिम की ओर और दूसरा पूर्व की ओर देखने लगा। सुधार की आवश्यकता दोनों को जान पड़ने लगी, किन्तु उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे भिन्न-भिन्न उपायों का अवलम्बन करना चाहते थे। भला एक भ्यान में दो तलवारें कैसे रह सकती हैं ! दोनों दलों में तना-तनी बढ़ती ही गई। इसी समय मानों किसी दैवी शक्ति ने इस समस्या को हल करने के लिए लेनिन के रूप में अवतार ग्रहण किया।

लेनिन ने रूस में एक नई जान डाल दी। वह पक्का साम्यवादी था। वह साम्यवाद की नींव पर एक नए रूस की इमारत खड़ा करना चाहता था। यों तो यूरोप में भी अनेक प्रकार के साम्यवादी विचार फैले हुए थे, जिनका उद्देश्य पूँजीपतियों का नाश करना था। किन्तु वे पूँजीपतियों का नाश कर मध्यम श्रेणी के लोगों को सारे अधिकार दिलाने के पक्ष में थे। किन्तु लेनिन का विचार कुछ दूसरा ही था। वह पूँजीपतियों और मध्यम वर्ग के लोगों—दोनों को हटा कर केवल एक जनता का साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। यूरोप वाले (कार्ल

मार्क्स के अनुयायियों को छोड़ कर) तीन श्रेणियों के स्थान पर दो श्रेणियाँ स्थापित करना चाहते थे। किन्तु लेनिन केवल एक ही चाहता था। हम एक शब्द में कह सकते हैं कि वह मज़दूरों का राज्य स्थापित करना चाहता था। वह कार्ल मार्क्स का कट्टर अनुयायी था। यद्यपि रूस के तत्कालीन नेता लोग उसके विचारों के तथ्य में सन्देह प्रकट किया करते थे, किन्तु लेनिन ने जो सफलता प्राप्त की है वह प्रत्यक्ष है।



रूस के क्रान्तिकारी नेता मोशिफ़ लेनिन

[यह सन् १९१७ का वह ऐतिहासिक चित्र है, जिसकी अनेक प्रतियाँ पुलिस वालों को मोशिफ़ लेनिन को गिरफ्तारी के लिए बाँटी गई थीं]

जो बातें कल असम्भव सी जान पड़ती थीं, वे ही आज सम्भव हो गई हैं। किसी को भी ऐसा विश्वास न था कि लेनिन रूस में शरीरों का राज्य स्थापित करने में सफल हो सकेगा; किन्तु लेनिन के कार्यों ने संसार को सचमुच स्तम्भित कर दिया है।

लेनिन ने अपनी मृत्यु के पहले ही रूस में पाश्चात्य औद्योगिक प्रगल्भी की नींव दृढ़ कर दिया था। कल-कारखाने खुलने लगे थे, बिजली की बत्तियाँ देहातों तक में जलने लगी थीं और कृषि-सम्बन्धी नए-नए पाश्चात्य

औज़ार आने लगे थे। इतना ही नहीं, लेनिन ने यूरोप के नामी-नामी इन्जीनियरों और कारीगरों को भी रूस में बुला कर उनसे अनेक प्रकार की सहायताएँ लीं, जिससे रूस औद्योगिक उन्नति में, आज यूरोप के किसी भी देश से पीछे नहीं है।

लेनिन ने रूस को मज़दूरों का राष्ट्र बना दिया सही, किन्तु पारचाय सभ्यता के आधार पर। आज वहाँ बड़े-बड़े कारखाने हैं। कुछ कारखाने ऐसे बन रहे हैं, जो शायद संसार में सब से बड़े कारखाने होंगे। इतने ही से पता चल सकता है कि लेनिन का लगाया हुआ पौधा कैसा बड़लहा रहा है।

जब लेनिन की इन सफलताओं पर दृष्टिपात करते हैं, तो हमें आश्चर्य होता है, कि इस एक व्यक्ति ने थोड़े समय में इतने बड़े राष्ट्र में किस प्रकार उथल-पुथल मचा दिया। किन्तु आश्चर्य की बात नहीं है। लेनिन में नेपोलियन की शक्ति थी। नेपोलियन का व्यक्तित्व लेकर

वह आया था। उसकी बातों में नेपोलियन की बातों का सा असर था। रसियन मज़दूरों को इस तरह उसने अपने वश में कर लिया था, जैसे कोई सँपेरा साँप को अपने वश में कर लेता है। सीधो-सादी बात यह है कि वह इतना निःस्वार्थ था, मज़दूरों की खलाई में इतनी दिलचस्पी लेता था कि उनका इसके वश में आ जाना स्वाभाविक ही था। उसके मित्रों का कहना है, कि न तो वह लम्बी-लम्बी स्पीचें फ़ाड़ता था, न अकड़ारपूर्ण शैली में लेख ही लिखता था और न उसकी पोशाक ही में कुछ

तड़क-भड़क थी। देखने में भी वह कुछ ऐसा नहीं था, कि उसके चेहरे का कुछ प्रभाव पड़े। वह बहुत सीधा-सादा व्यक्ति था। वह औरों की अपेक्षा मजदूरों के लिए अधिक परिश्रम करता था, औरों की अपेक्षा वह अधिक निःस्वार्थ था तथा औरों से अधिक परिस्थिति समझने की क्षमता उसमें थी। इन्हीं गुणों के कारण उसने कुछ ही दिनों में रूस के मजदूर राष्ट्र को संसार के बड़े राष्ट्रों की पंक्ति में बिठा दिया।

लेनिन धार्मिक था, किन्तु महात्मा जी की तरह अहिंसावादी नहीं था। उसने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए हिंसा और अहिंसा का विचार नहीं किया। उसका धर्म था क्रान्ति करना, रूस को ज़ारशाही के पन्जे से विमुक्त करना। उसकी समझ में बिना क्रान्ति की आग लगाए, बिना भयानक उथल-पुथल किए रूस के लिए ज़ारशाही से छुटकारा पाना असंभव था। वह कार्यदत्त था, भारतीय दार्शनिक नहीं! वह कूटनीति में निपुण चाणक्य था, कोरे ज्ञान और अध्यात्म पर विचार करने वाला भोला-बाबा नहीं।

गाँधी

लेनिन ने बुद्ध और ईसा की तरह मानव जाति के उपकार के लिए आत्मोत्सर्ग किया है; किन्तु गाँधी ने

किन्तु भारत के विषय में वैसा बात नहीं है। भारत कभी सभ्य देशों का शिरमौर था। उसे अपनी पुरानी बातें अभी तक याद हैं, जिन्हें वह कभी भूल नहीं सकता। यदि कोई भारत की पुरानी सभ्यता को मिटा कर एक नई सभ्यता का महल यहाँ खड़ा करना चाहे, तो उसे निश्चय ही असफलता मिलेगी। न जाने कितनी विदेशी जातियाँ यहाँ आईं, और यहाँ की सभ्यता में इस प्रकार विलीन हो गईं कि आज उनका पता लगाना तक कठिन है। पठानों और मुगलों का प्रभुत्व यहाँ लगभग ८०० वर्षों तक रहा, किन्तु नाना प्रकार के अत्याचारों के होते हुए भी, भारत अपनी पुरानी सभ्यता को किसी न किसी रूप में कायम रख सका है। अज़रेजों के राज्यकाल में भी यद्यपि भारत का शिष्टित समुदाय अज़रेजी सभ्यता की ओर कुछ अंशों में झुक पड़ा है, तो भी साधारण जनता अभी इससे कोसों दूर है। इसी से पता चल सकता है कि रूस और भारत में क्या अन्तर है। भारत के अनेक नेताओं का मत है कि भारत अपनी पुरानी सभ्यता के बल पर ही फिर खड़ा हो सकेगा। यूरोपीय सभ्यता इसके लिए विप है। जब भारत के लिए एक आधार-स्तम्भ वर्तमान है, तो उसे दूसरी ओर देखने की क्या आवश्यकता हो सकती है? जब उसकी पुरानी नींव अभी तक ज्यों की त्यों बनी हुई है, तो दूसरी नींव खोदने की क्या आवश्यकता? महात्मा गाँधी का मूल-मन्त्र यही है। वे भारत को भारतीय सभ्यता के रङ्ग में ही रँगना चाहते हैं, यूरोपीय सभ्यता के विपक्षे रङ्ग में नहीं!

महात्मा जी की समझ में यूरोपीय सभ्यता भारत के लिए हानिकर सिद्ध हुई है। पाश्चात्य आविष्कारों द्वारा भी भारत को बहुत हानि सहनी पड़ी है। रेल, मोटर और ट्राम ने भारत के कोमल कलेजे को दल दिया है। इतना ही नहीं, अज़रेजी शिष्टा ही हमारी गुलामी का कारण है।

भारत की वास्तविक जनता कलकत्ते और बम्बई में आपको नहीं मिलेगी। वह देहात के ओपड़ों में निवास करती है, बम्बई और कलकत्ते के महलों में नहीं। ज़रा उन देहाती ओपड़ों की ओर नज़र उठा कर देखिए, फिर कलकत्ते और बम्बई जैसे शहरों की ओर मुख फेरिए; देखिए तो कितना अन्तर है! ये शहर केवल थोड़े से पूँजीपतियों की रङ्गभूमि हैं, जहाँ इन्हीं बेचारे गरीबों का रक्त चूसा जाता है!

महात्मा जी फिर भी लेनिन की तरह पूँजीपतियों का नाश करना नहीं चाहते। वे केवल पूँजीवाद का रूप बदल देना चाहते हैं। इस प्रकार महात्मा जी लेनिन के सिद्धान्तों के विरोधी हैं। इतना ही नहीं, बोलशेविज्म के वे कट्टर विरोधी हैं। लेनिन ने स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए हिंसा-मार्ग को ग्रहण किया था; किन्तु महात्मा जी का मार्ग दूसरा ही है। यहाँ हम फिर एक बार प्राचीन ऋषियों का उपदेश सुन रहे हैं—‘अहिंसा परमो-धर्मः।’ अहिंसा, मन से, वचन से, और कर्म से!! महात्मा जी के सिद्धान्तों का शुरु से आज तक यही मूल-मन्त्र रहा है।

महात्मा जी के अहिंसा का अर्थ साधारण अर्थ से बहुत ऊँचा है। इसका सच्चा अर्थ है, आत्म-दमन। यदि कोई दुष्ट हमारी बहू-बेटियों की वेष्टितता करने पर उतारू हो जाय, तो उस समय हम अपने को असमर्थ समझ कर यदि ‘अहिंसा व्रत’ पालन करें, तो महात्मा जी के विचार से यह अहिंसा नहीं है, बल्कि यह कायरता है। अहिंसा का भाव कायरों के हृदय में नहीं आ सकता। वह तो शुद्ध, सार्विक और बलवान हृदय का गुण है!

इस प्रकार हम देखते हैं कि लेनिन और गाँधी के सिद्धान्तों में बहुत अन्तर है। लेनिन क्रान्तिकारी था और उसने क्रान्ति किया—तखवार की सहायता से। तखवार ही की सहायता से, उसने ज़ारशाही की जड़ खोदी। बुद्ध और ईसा की शक्ति रखते हुए भी वह उनसे बहुत भिन्न था। किन्तु यहाँ गाँधी में हम दूसरा ही नज़ारा पाते हैं। ‘अहिंसा परमो-धर्मः’ का मन्त्र फिर आकाश तक गूँज उठा है। महात्मा जी की क्रान्ति का यही शब्द है! मालूम होता है, बुद्ध ने फिर अवतार ग्रहण किया है; अथवा ईसा फिर अपने इप उपदेश की “यदि कोई तुम्हारे एक गाल में तमाचा मारे तो उसकी ओर दूसरा गाल भी फेर दो” शिष्टा देने के लिए संसार

फुरियादे “विस्मिल”

[कविवर “विस्मिल” इलाहाबादी]

जब कहने पर आते हैं तो क्या-क्या नहीं कहते!

भूले से कभी मुझको वह अचछा नहीं कहते!!
वे सबब बेफ़ायदा सर अपना यों धुनते नहीं,

सबकी सुनते हैं, हमारी बात वह सुनते नहीं!
समझ वाले यह कहते हैं, जमाना क्या समझता है,
वह है सब से बुरा, अपने को जो अचछा समझता है!
अशक आँखों में भरे रहते हैं फ़रते-गम से,

मुफलिसो क्रौम की देखी नहीं जाती हमसे!
खिलाफ अपने से हो कर मुल्क में वह जाबजा चमके,
चमकना यह नहीं अचछा, जो यों चमके तो क्या चमके?
बात यह मुझको पसन्द आई जनावे पोप की,

इस जमाने में हुकूमत रह गई है तोर की!
नज़म में योंही जा अलफाज तराशी होगी,
बिलयक्रीं आपक भी खानातलाशो होगी!

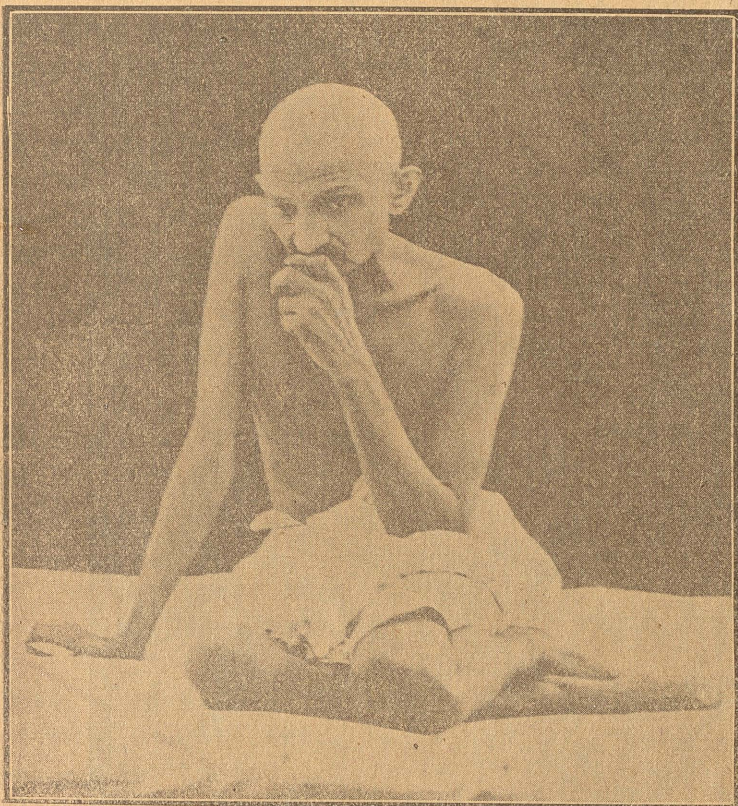
क्या बताऊँ क्या जताऊँ; क्या कहूँ क्या चीज़ हूँ,
नाम है “विस्मिल” मेरा, मैं बन्दए नाचीज़ हूँ!

में आए हैं। किन्तु नहीं, बुद्ध और ईसा दोनों की शक्ति लेकर गाँधी पैदा हुए हैं।

दो महापुरुषों की तुलना नहीं हो सकती है। अपने-अपने क्षेत्र में वे अतुलनीय हैं। हम केवल उनके सिद्धान्तों में अन्तर दिखा सकते हैं। किन्तु इससे कोई यह सिद्ध नहीं कर सकता कि अमुक महापुरुष, अमुक महापुरुष से ऊँचे या नीचे हैं। इसी प्रकार लेनिन और गाँधी भी अपने-अपने क्षेत्र में अद्वितीय हैं। संसार के इतिहास में दोनों का नाम अमर रहेगा। दोनों के सिद्धान्तों में अन्तर अवश्य है, किन्तु यह अन्तर स्वाभाविक भी है। यह सम्भव है कि जो बात एक देश के लिए लागू है, वह दूसरे देश के लिए लागू न हो। परिस्थिति भिन्न-भिन्न होने से भिन्न-भिन्न उपायों का भी अवलम्बन करना ही पड़ता है।

यही कारण है कि लेनिन और गाँधी का उद्देश्य एक रहते हुए भी, उपायों में अन्तर देख पड़ता है। वास्तव में वे एक ही उद्यान के दो मनोरम पुष्प हैं, जिनकी सुगन्ध सारी मानव जाति के हृदय में नया उत्साह, नया जीवन और नई भावनाएँ भरती रहेंगी।

* * *



महात्मा गाँधी

बुद्ध और ईसा बन कर आत्मोत्सर्ग किया है! महात्मा जी ने जिस मार्ग को ग्रहण किया है, वह लेनिन के मार्ग से भिन्न है; इसका कारण भी है।

पहली बात तो यह है कि रूस को अपने प्राचीन इतिहास से कुछ सीखना नहीं था। वहाँ का प्राचीन इतिहास कुछ ऐसा गौरवपूर्ण भी नहीं था, कि वहाँ वाले उसे आदर्श मान कर, उसी की नींव पर नवीन रूस का महल खड़ा कर सकते। लेनिन ने मानो एक नए क्षेत्र में—जो पहले कभी अच्छी तरह से जोता नहीं गया था—उर्वरा-शक्ति उत्पन्न कर बीज बोया था! इसके पहले न तो यह क्षेत्र कभी अच्छी तरह जोता ही गया था, और न कोई जानता ही था कि कौन बीज किस प्रकार बोना चाहिए। यही कारण है कि रूस में साम्यवाद का बीजारोपण करने का उसे मौका मिला। उसने नई नींव पर रूस की इमारत खड़ी कर दी।

कुछ प्रमुख व्यक्तियों की चित्रावली



मिस्टर एस० साको

आप हाल ही में जापान की ओर से भारत में एलची
(Consul General) नियुक्त हुए हैं।



सय्यद मोहम्मद पादशा साहब बहादुर
जो हाल ही में कौन्सिल ऑफ़ स्टेट के
सदस्य चुने गए हैं।



मि० सी० एफ़० ल्या

आप चीन की प्रजातन्त्र सरकार की ओर से भारत में
एलची (Consul General) नियुक्त हुए हैं।



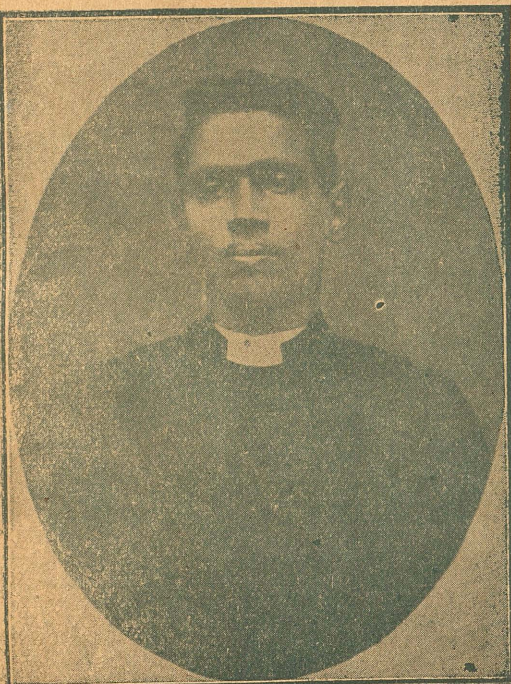
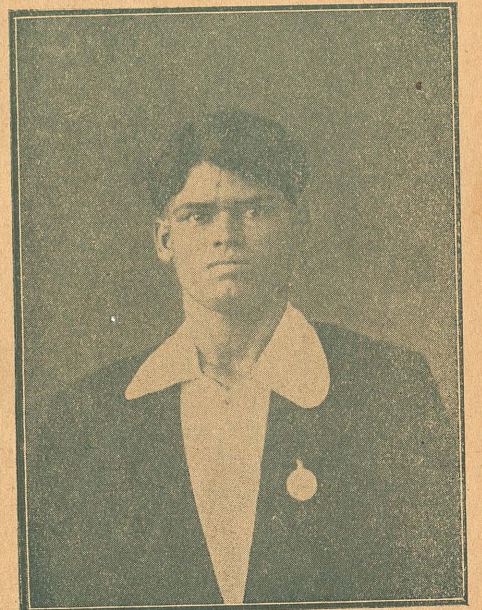
श्री० बी० जी० खापर्डे

आप मध्य-प्रान्तीय लेजिस्लेटिव कौन्सिल के उप-प्रधान
और नेशनलिस्ट पार्टी के अगुआ थे। आपने सरकार
की वर्तमान दमन-नीति के विरोध स्वरूप
अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया है।



मि० वी० चेल्लिया पीटर

आप सेण्ट जोन्स कॉलेज, पालमकोटा (मद्रास) के
छात्र हैं। खेलों में सर्वोत्तम सिद्ध होने के उपलक्ष में
आपको "ब्रिग मेमोरियल" नाम का स्वर्ण-
पदक प्रदान किया गया है।



रेवरण्ड टी० जे० जोज़फ़

आप कोज़ेनचेरी (द्रावनकोर) के एक प्रतिष्ठित सीरियन
'डीकन' हैं। आप उच्च कोटि की धार्मिक शिक्षा ग्रहण
करने के अभिप्राय से टोरण्टो के ट्रिनिटी कॉलेज
में गए हैं। आपको छात्रवृत्ति भी दी गई है।



श्री० आर० के० राणादिवें, एम० ए०

आप बड़ोदा स्टेट के राजनैतिक विभाग के सुयोग्य मैनेजर
हैं। आप अच्छे इतिहासज्ञ भी हैं।



महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धी संस्थाएँ



बम्बई सेवा-सदन के अनाथ-भवन की कुल स्त्रियाँ तथा बच्चे



बम्बई सेवा-सदन के मराठी ट्रेनिङ्ग क्लास का अध्यापन-विभाग और छात्राएँ

आज भारत में क्या कर रही हैं ?

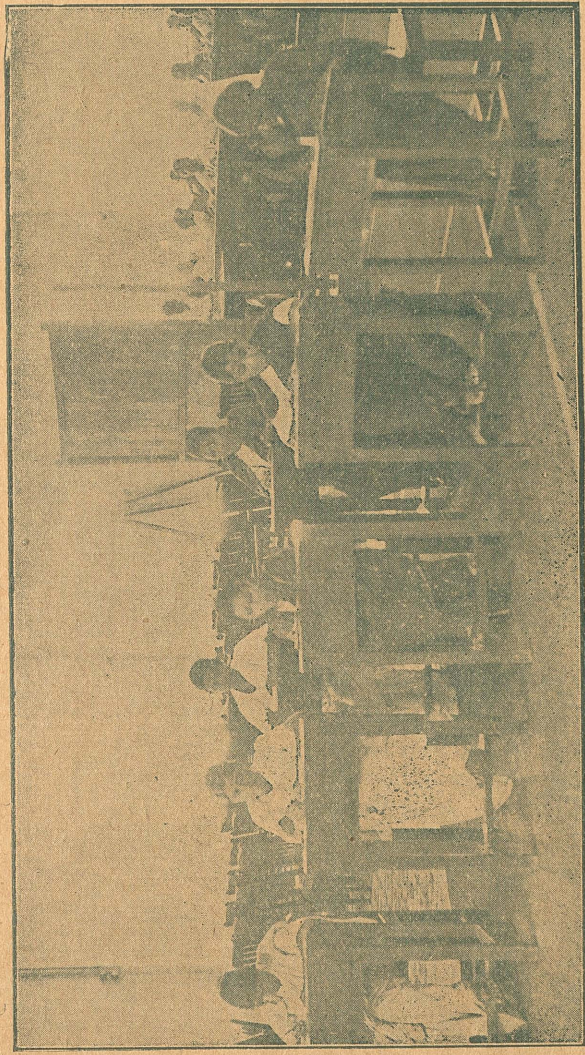


बम्बई सेवा-सदन के आश्रम (Training Home) की महिलाएँ

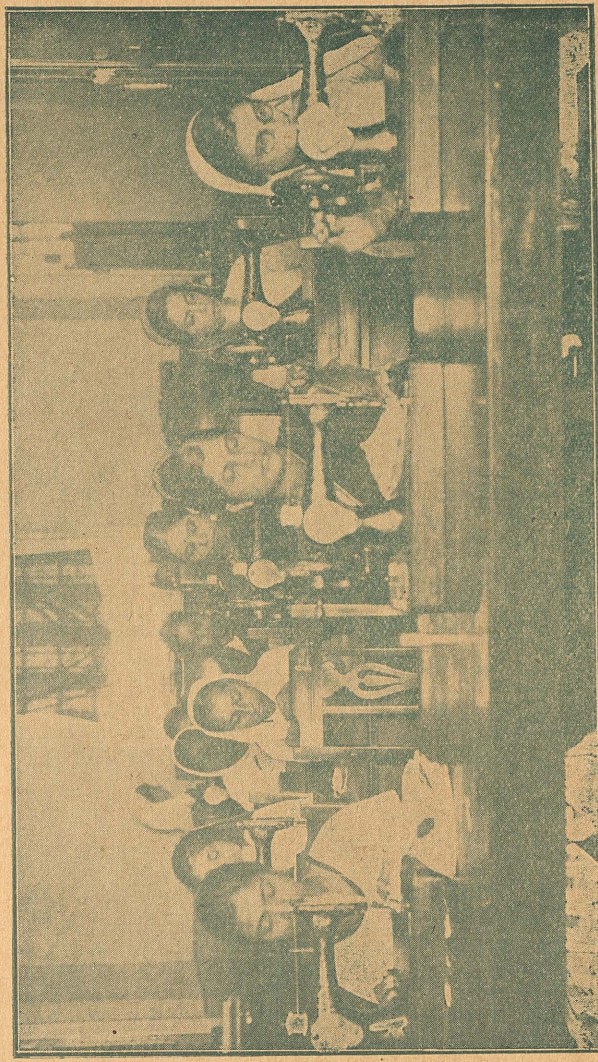


बम्बई सेवा-सदन की गृह-पाठशाला की अभ्यापिकाओं व छात्राओं का ग्रुप

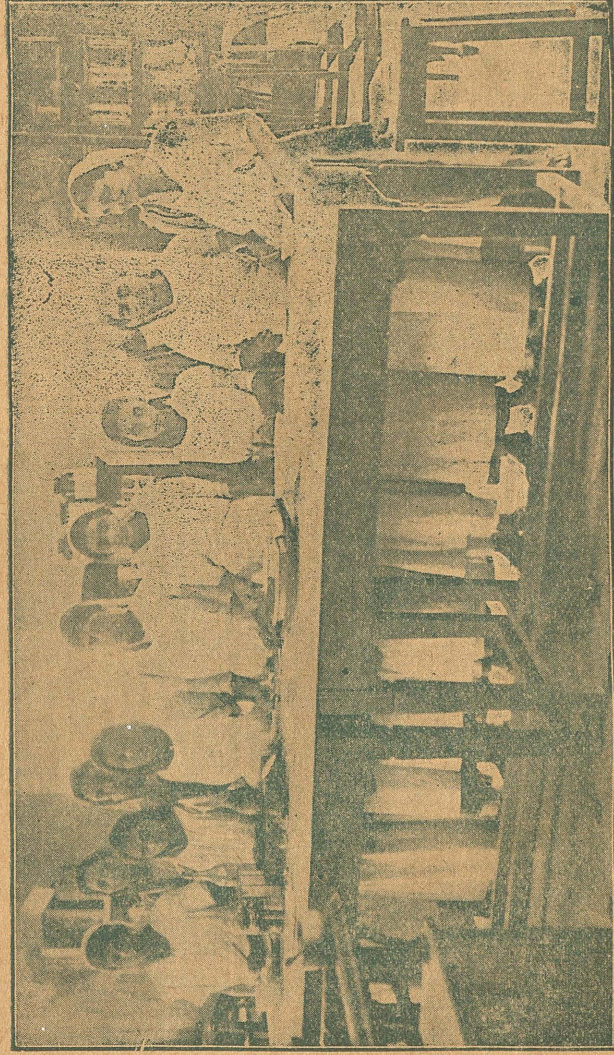
बम्बई के सेवा-सदन की शिक्षा के कुछ महत्वपूर्ण नमूने



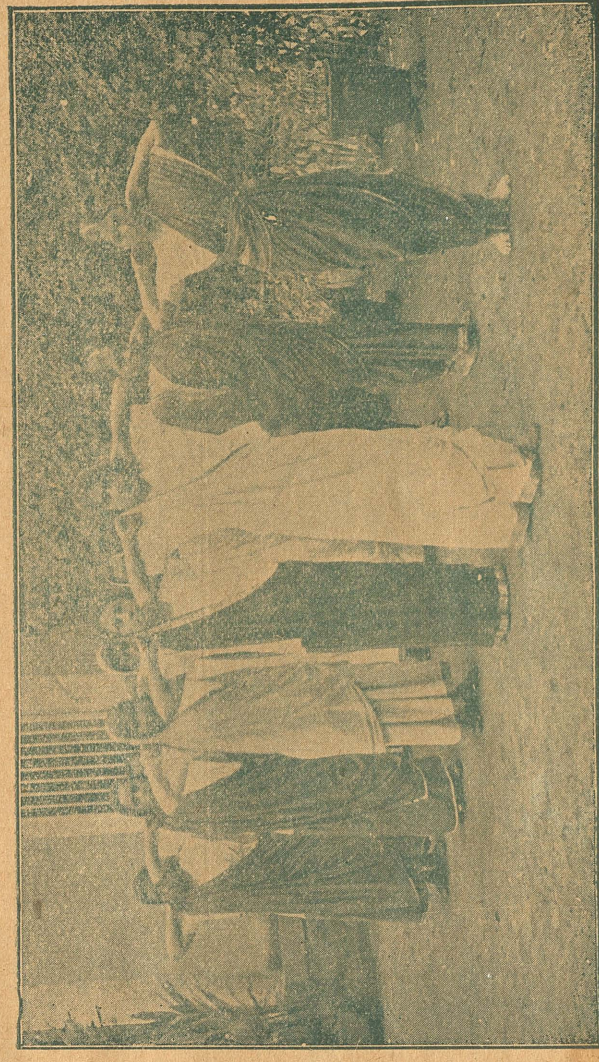
सेवा-सदन की डॉइङ्काल



सेवा-सदन की छात्राएँ सिलाई का काम सीख रही हैं



सेवा-सदन की छात्राएँ भोजन बनाना सीख रही हैं



सेवा-सदन की छात्राएँ डिल (कवायद) कर रही हैं

केसर की क्यारी

देते हो क्यों सज़ाएँ तुम, मुजरिमे-इश्क़ जान कर !

दिल में तो आरजू नहीं, दर्द-जिगर को क्या करूँ ?

रात ही रात में तमाम, तै हुए उम्र के तमाम,

हो गई ज़िन्दगी की शाम, अब मैं सहर, को क्या करूँ ?

अहले-नज़र कोई नहीं, इसलिए खुद-पसन्द हूँ,

आप ही देखता हूँ मैं, अपने हुनर को क्या करूँ ?

—“हफ़ीज़” जालन्धरी

*

*

*

इनके तो ढङ्ग हैं वही, इनके तो रङ्ग हैं वही,

आहे फ़लक^१ शिगाफ़^२ के, जज़बो असर को क्या करूँ ?

ज़िद तो यह है, जो मैं कहूँ, वह न हो और न हो कभी,

हाले-दिल इससे क्या कहूँ, दर्द-जिगर को क्या करूँ ?

राह पर आही जाएँ वह, हो जो न शह रक़ीब^३ की,

क्योंकि दिल उसका हूँ बदल, उसकी नज़र को क्या करूँ ?

—“कैफ़ी” देहलवी

*

*

*

जुलमते^४ यास^५ है वही, दाग़े-जिगर को क्या करूँ,

ग़म की घटा न खुल सकी, आहे-सहर को क्या करूँ ?

अशके^६ रवाँ^७ न एक दिन, दिल की लगी बुझा सके,

गिरयए^८ ग़म से क्या मिला, दीदए^९ तर को क्या करूँ ?

जलवए^{१०} बर्क़े^{११} हुस्न है, दुशमने ख़िरमने^{१२} करार,

दिल को बचाऊँ किस तरह, ज़ौके-नज़र को क्या करूँ ?

—“मरहूम” बाहौरी

*

*

*

लुत्फ़ो-करम^{१३} का शुक्रिया, अब मगर इससे फ़ायदा,

पहलू में दिल नहीं तो फिर, तीरे-नज़र को क्या करूँ ?

हज़रते ‘डारविन’ से कल, पूछ रहे थे “दोज़ख़ी”

आपका मोतकिद^{१४} तो हूँ, दुम की कसर को क्या करूँ ?

—“दोज़ख़ी” साहब

*

*

*

उनके सितम^{१५} का माजरा, ज़व्त में किस तरह रहे,

नालए-दिल को थाम लूँ, उड़ती ख़बर को क्या करूँ ?

वाज़^{१६} तो मैंने सुन लिया, अब यह मुझे बताइए,

आएँ अगर वह सामने, ज़ौके-नज़र को क्या करूँ ?

सुबहे शबे-विसाल का, उनको यज़ीन हो चला,

मुग्गे-सहर की जान लूँ, नूरे-सहर^{१७} को क्या करूँ ?

सोज़े^{१८} दुख़^{१९} के सामने, किसको मजाले-दुशमनी,

और तो सबको फूँक दूँ, दीदे-तर को क्या करूँ ?

—“जोश” मलसियानी

ज़व्ते फ़ुगाँ^{२०} तो कर लिया, सीने पे सङ्ग^{२१} रख लिया,

सोज़िशे ग़म तू ही बता, दीदे-तर को क्या करूँ ?

देते हो क्यों सज़ाएँ तुम मुजरिमे इश्क़-जान कर,

दिल में तो आरजू नहीं, दर्द-जिगर को क्या करूँ ?

कोशिशे दिल तो है यहो, देखूँ न हुस्ने-आरज़ी^{२२}

जलवा मगर नज़र में है, अपनी नज़र को क्या करूँ ?

—“रौशन” पानीपती

*

*

*

ताब नहीं है ज़व्त की, यार इन्हें है सत्र का,

दिल पे तो ज़ब्र कर भी लूँ, आहे-सहर को क्या करूँ ?

आना तेरा मुहाल^{२३} है, यह तो मुझे ख़याल है,

दर पे जमी हुई है यह, अपनी नज़र को क्या करूँ ?

—“श्याम” बाहौरी

*

*

*

पार किसी के दिल से हो, इससे कभी न हो सका,

आहे-जिगर ख़राश^{२४} के, उल्टे असर को क्या करूँ ?

रोकूँ मैं लाख फिर भी यह, महवे^{२५} फ़रेबे-हुस्न है,

जो न रहे निगाह में, ऐसी नज़र को क्या करूँ ?

—“अर्श” मलसियानी

*

*

*

लाख हैं परदादारियाँ, इश्क़ की कोशिशें मगर,

दीदे-तर को क्या करूँ, दर्द-जिगर को क्या करूँ ?

आज भी हैं उसी तरह, इश्क़ की नारसाइयाँ^{२६}

मेरे खुदा, मैं गरदिशे शामो-सहर को क्या करूँ ?

—“रसा” फ़ारानी

*

*

*

दहरे^{२७} के इनक़िलाब^{२८} पर, करके नज़र को क्या करूँ,

शामो-सहर हज़ार ग़म, शामो-सहर को क्या करूँ ?

उनके हज़ार ढङ्ग हैं, जलवे के लाख रङ्ग हैं,

जमती नहीं कहीं नज़र, अपनी नज़र को क्या करूँ ?

देख ली सबकी सरज़निश^{२९}, लाख हुई दवा-दविश^{३०},

दर्द-जिगर न मिट सका, दर्द-जिगर को क्या करूँ ?

कुञ्जे-कफ़स^{३१} में रह के भी, सहने चमन का शौक है,

उड़ना मगर मुहाल है, बाज़ुओ पर को क्या करूँ ?

रात हो, दिन हो, सुबह हो, शाम हो, कोई वक्त हो,

रौने से इसको काम है, दीदे-तर को क्या करूँ ?

—“बिस्मिल” इलाहाबादी

१—सुबह, २—आकाश, ३—चोरने वाला, ४—ग़ौर, ५—अंधेरा, ६—निराशा, ७—आँसू

८—बहने वाला, ९—रोना, १०—आँख, ११—ज्योति, १२—विजली, १३—ख़लवान, १४—कृपा,

१५—मानने वाला, १६—जुलम, १७—नसीहत भरी बातें, १८—रोशनी, १९—जलन, २०—दिल,

२१—शोर, २२—फ़थर, २३—नकली, २४—मुश्किल, २५—छीलने वाला,

२६—नाकामयाबी, २७—संसार, २८—उलट-फेर, २९—दवा, ३०—दौड़-धूप, ३१—पिजड़ा ।

वीरवाला

दुर्गा और रणचण्डी की सालात प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता ? सन् १८५७ के स्वातन्त्र-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खड़े किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेजों की कूटनीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राजसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायेंगे। अङ्गरेजी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सजिल्द एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य ४) ; स्थायी ग्राहकों से ३)

निर्मला

इस भौतिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीमल एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशी-भूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं; किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है।

यह वही क्रान्तिकारी उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में खलबली पैदा कर दी है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥) ; स्थायी ग्राहकों से १॥८) मात्र !

लम्बी दाढ़ी

“दाढ़ी वालों को भी प्यारी है बच्चों को भी,
बड़ी मासूम, बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी।
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है,
लाख दो लाख में, बस एक है लम्बी दाढ़ी ॥”

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संचित विवरण “नागर में सागर” की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटोकिटङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥) ; स्थायी ग्राहकों से १॥८) मात्र।

सुटकुला

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक सुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायेंगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण सुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई सुट-

कुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १) ; स्थायी ग्राहकों से १॥) ; केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

मनमोदक

यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए सुन्दर खिलौना है। जैसा पुस्तक का नाम है, वैसा ही इसमें गुण भी है। इसमें लगभग ४५ मनोरञ्जक कहानियाँ और एक से एक बढ़ कर ४० हास्यप्रद सुटकुले हैं। एक बार हाथ में आने पर बच्चे इसे कभी नहीं भूल सकते। मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञान-वृद्धि की भी भरपूर सामग्री है। एक बार अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥) स्थायी ग्राहकों से ८) ; नवीन संस्करण अभी-अभी प्रकाशित हुआ है।

व्यवस्थापिका ‘चाँद’ कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

बीसवीं सदी का नैपोलियन

एकान्त द्वीप में निर्वासित स्वदेश-भक्त अब्दुल करीम

["इतिहास का एक विनम्र विद्यार्थी"]

आज से लगभग दो सौ वर्ष पहिले सेण्ट-हेलेना के द्वीप में विश्व-विजयी नैपोलियन बन्दी अवस्था में रक्खा गया था। उसने अपने साहस तथा शौर्य से यूरोप के सारे राज्यों को हिला दिया था। अपनी तलवार की झङ्कार से प्रजातन्त्र-प्रेमी फ्रान्स को भी साम्राज्यवाद के मद से चूर कर दिया था। पर सन् १८१५ में वह यूरोप के राष्ट्रों का कैदी था। उसका सारा साम्राज्य, सारी सत्ता नवीन राष्ट्रीय जाग्रति के सामने बालू की दीवार की तरह गिर पड़ी थी। फिर भी नैपोलियन स्वदेश-प्रेमी था। आज एक और स्वदेश-प्रेमी इसी अवस्था में, एक एकान्त द्वीप में बन्दी बना कर रक्खा गया है। वह स्वदेश-भक्त अवश्य है, पर नैपोलियन की तरह साम्राज्यवाद का नेता नहीं, वरन साम्राज्यवाद का कट्टर दुश्मन है। वह अपने देश को साम्राज्यवाद के कठिन पन्जे से छुड़ाना चाहता है।

एक एकान्त द्वीप, जहाँ रात-दिन वर्षा हुआ करती है, जहाँ की जलवायु मनुष्यों के लिए ज़रा भी स्वास्थ्य-दायक नहीं है—ऐसे द्वीप के एक दूर-स्थित मकान में एक सैनिक बैठा हुआ है। उसकी छाती पर एक लम्बी और शानदार दाढ़ी बहरी रही है। उसका कद छोटा है, पर शरीर बहुत हड्ड-पुष्ट तथा सुगठित है। यही रिक्त जाति का वीर नेता अब्दुल करीम है।

किसी समय वह स्पेनी सेना में अफसर था। एक स्पेनी अधिकारी ने उसका अपमान किया। बस इस छोटी सी घटना ने अब्दुल करीम का जीवन-स्रोत बिल-कुल दूसरी ओर बहा दिया। एकाएक उसकी आँखें खुल गईं। मैं एक परतन्त्र राष्ट्र का निवासी हूँ। ये मेरे स्वामी हैं। इन्हें इनके बराबर अधिकार नहीं हैं। हमारा देश विदेशियों के क़ब्ज़े में है। अब्दुल करीम समझ गया कि बिना स्वाधीनता के हम मनुष्योचित आदर को नहीं पा सकते। हम दूसरे देशों से समान व्यवहार नहीं रख सकते। तब से वह अपने देश को स्वतन्त्र करने का उपाय ढूँढ़ने लगा और स्पेनियों का पक्का दुश्मन हो गया।

आठ ही दिनों में उसने शौर्य तथा बल से रिक्त जाति का झण्डा ऊँचा ठाठाया। स्वदेश-प्रेम से प्रोत्साहित होकर उसने सन् १८२० तथा १८२१ में बड़े-बड़े करशमे कर दिखाए, १८२० में उसने स्पेन की सेना को पराजित किया। सन् १८२१ में उसने १५ हजार स्पेनी सैनिकों को युद्ध-बन्दी बना लिया। उसकी वीर-गाथा सारे संसार में फैल गई। स्वदेश में एक दड़ सत्ता की स्थापना करके उसने एक नवीन स्वाधीन राष्ट्र की नींव डाली। इसके पश्चात् वह यूरोप के और स्वतन्त्र राष्ट्रों से राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न करने लगा। पर मल्ला साम्राज्यवादी यूरोप के राष्ट्र इस नवीन स्वाधीनता की लहर को सरल दृष्टि से कब देख सकते थे? लगभग सभी देशों ने रिक्त देश की स्वाधीनता स्वीकार करने से इनकार कर दिया। वे सब इसे अपने-अपने क़ब्ज़े में बाने का प्रयत्न करने लगे। यह अब्दुल करीम के लिए असह्य था। वह अपने बने-बनाए काम को मिट्टी में नहीं मिलावा चाहता था। उसने अपने राष्ट्र की स्वाधीनता की रक्षा करना निश्चय किया। और राष्ट्रों ने भी सशस्त्र संग्राम का सहारा लिया। इस बार भी अब्दुल करीम ने अपना शौर्य तथा पराक्रम दिखलाने में कुछ कमी न

रक्खी। पर अन्त में उसे फ्रान्सीसियों से हार माननी पड़ी। इस हार के बाद फ्रान्सीसी सरकार ने देश-भक्त अब्दुल करीम तथा उसके कुटुम्ब को देश-निर्वासन का इण्ड दिया। अब वह यूरोप-विजयी नैपोलियन की तरह जीवन का शेष भाग बन्दी अवस्था में व्यतीत कर रहा है! पर दोनों के उद्देश्य कितने भिन्न थे। एक ने साम्राज्यवाद के लिए अपनी तलवार उठाई थी, दूसरे ने साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपनी सारी शक्ति लगा दी है!

कुछ साल पहले अब्दुल करीम अपने देश का प्रधान शासक था। वह राजसी ठाट से रहता था। हजारों पौण्ड खर्च करता था। पर आज उसकी आर्थिक अवस्था बहुत शोचनीय है। फ़्रेञ्च सरकार उसे सालाना केवल एक लाख फ़्रेञ्क देती है। इसी में उसे सारे



मोरको का बहादुर नेता अब्दुल करीम

कुटुम्ब का खर्च चलाना पड़ता है। अब्दुल करीम के साथ उसका भाई तथा अन्य सम्बन्धी भी रहते हैं। घर भर में सब मिला कर ज़रीब दम-जगह बचे हैं। इतने बड़े कुटुम्ब को इतनी छोटी सी रकम में चलाये में उसे बड़ी कठिनाई होती है। उन्हें कई आवश्यक वस्तुओं से वञ्चित रहना पड़ता है। उसे घर भी बहुत मामूली दिया गया है। उसमें कई सामान्य सुविधा की चीज़ों का भी अभाव है।

फिर इस द्वीप की जलवायु उसके स्वास्थ्य के लिए बड़ी हानिकारक है। इस वाष्प-पूरित वायु में उसकी जीवन-ज्योति का शनैःशनैः अवसान होता जा रहा है। कुछ समय पहिले वह बीमार पड़ा था। वह इतना निर्बल हो गया, कि कई दिनों तक अपने कमरे से बाहर नहीं निकल सका। गृह के अन्य लोगों को भी यही कष्ट है। बच्चों को तो विशेषकर बहुत तकलीफ़ है। इस द्वीप की जलवायु उनके स्वास्थ्य के ज़रा भी अनुकूल नहीं है।

फिर बच्चों के पठन-पाठन का प्रबन्ध ठीक नहीं है। इस द्वीप में केवल एक पाठशाला है, वह भी उसके मकान से बहुत दूर। इस कार्य के लिए उसने एक

फ्रान्सीसी महिला को वेतन पर रख छोड़ा है। वह जो कुछ हो सकता है, करती है।

अब्दुल करीम के पत्रों पर कड़ा पहरा रक्खा गया है। उसे मिलने के पहिले उसका प्रत्येक पत्र खोज कर पढ़ लिया जाता है। यदि उसके मित्रवर्गों में से कोई उसे भोजन, वस्त्र या कोई अन्य उपहार भेजता है, तो उसका निरीक्षण पहिले एक अधिकारियों की सभा द्वारा किया जाता है।

वह अपना सारा समय पढ़ने तथा ताश खेलने में व्यतीत करता है। फ़्रेञ्च सरकार ने पुस्तकों के चुनाव में उसे स्वाधीन रक्खा है। समाचार-पत्र भी उसे नियमित रूप से दिए जाते हैं; गो कि वे इतनी देर के बाद दिए जाते हैं, कि सारे समाचार बिलकुल पुराने हो जाते हैं। वह घर के बाहर बहुत कम जाता है। कभी-कभी उस द्वीप के रहने वाले भारतवासी उससे जाकर मिलते हैं। पर वह बहुत कम बोखता है।

४४ भविष्य ११

[श्री० आनन्दप्रसाद जी श्रीवास्तव]

स्वागत तुम्हारा कर्मक्षेत्र में भविष्य, नव जगमग ज्योति छिटकाते तुम आए हो।

गतिविधि ऐसी दृष्टिगोचर तुम्हारी हुई,

जन्म ही से जनता के मन में समाए हो ॥

वेश सुविचित्र, नीति निर्भय, पुनीत रीति,

स्पष्ट वाद, मृदु-व्यंग्य-वाद अपनाए हो।

क्रान्ति का, सुधार का, समुन्नति का युग, और

भारत का उज्ज्वल भविष्य साथ लाए हो ॥

अभी हाल ही में फ्रान्स के एक प्रसिद्ध लेखक मोशिए जॉक ब्रोसिनी उससे मिलने गए थे। (उनके शब्दों में अमीर की दशा का वर्णन करते हुए इस लेख का अन्त करना बहुत ठीक होगा) वे कहते हैं कि "अमीर की दशा बहुत शोचनीय है। मुझे अमीर से मिल कर बहुत खुशी हुई, पर उसका कष्ट देख कर मुझे बहुत खेद हुआ। वह जब भी सदा अपने प्रिय देश का ध्यान किया करता है। जब मैंने उससे कुशल-समाचार पूछा, तब सारे कष्टों का वर्णन करते हुए वह बोला—'मल्ला मैं अपने प्रिय देश को छोड़ कर कैसे सुखी रह सकता हूँ। फिर यहाँ तो एक भी वस्तु ऐसी नहीं है, जो कि उसकी समता कर सके। यहाँ का जलवायु मेरे देश से कितना भिन्न है। यहाँ की वाष्प-पूरित वायु मेरे जीवन-ज्योति को धीरे-धीरे मलिन कर रही है। यहाँ सदा वर्षा ही हुआ करती है और हम लोगों को कई दिनों तक सूर्य के दर्शन तक नहीं होते। अब तो मेरे जीवन में केवल पीड़ा तथा सन्ताप शेष रह गया है। मेरा देश सुन्दर नहीं है। वहाँ के प्रचण्डातप-तप्त-मरुस्थल में जानवर भी नहीं टिक सकते; पर तब भी वह मेरी मातृभूमि है! वह मुझे अन्य देशों से अधिक प्रिय है। और मैंने इस प्रेम का परिचय भी दिया था। मैं उसे एक बलशाली राष्ट्र बनाना चाहता था; पर यह बड़ा ही न था। मुझे अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में रिक्त की याद आती है—हाय! मैं उसे स्वाधीन न कर पाया!! मुझे अपने सम्बन्धियों तथा विशेषकर उन सहयोगियों का खयाल आता है, जो कि युद्ध-भूमि में मेरे साथ थे। वे कितनी वीरता से लड़े थे! मेरी आज्ञा का वे किस तरह पालन करते थे! जब मुझे इन सब बातों का ज़याल आता है, मेरा जी भर आता है।" उसका गला रँध गया था। शोक से उसने अपना मुँह फेर लिया। मोशिए ब्रोसिनी ने देखा कि वह अपनी ठोखी अरबी पोशाक की बाँह से अपनी आँखें पोंछ रहा था।

*

*

*

सन्तान-शास्त्र

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हजारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग भूटे कोकशात्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहिली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटोकिटङ्क कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

निर्वासिता

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीण-काय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशल-किशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वृत्तस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुल्लिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का भण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। मूल्य ३) २०

अनाथ पत्नी

इस पुस्तक में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्त-ईन्द्र का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें।

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्तकाल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की कलम से लिखे हों!! शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। छुपाई-सफाई दर्शनीय; मूल्य केवल लागत मात्र २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

मालिका

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण। आप देखेंगे कि प्रत्येक कहानी के अन्दर लेखक ने किस सुगमता और सचाई के साथ ऊँचे आदर्शों की प्रतिष्ठा की है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी। सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटोकिटङ्क कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

देवताओं के गुलाम

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध मिस मेयो की नई करतूत है। यदि आप अपने काले कारनामे एक विदेशी महिला के द्वारा मार्मिक एवं हृदय-विदारक शब्दों में देखना चाहते हैं तो एक बार इसके पृष्ठों को उलटने का कष्ट कीजिए। धर्म के नाम पर आपने कौन-कौन से भयङ्कर कार्य किए हैं; इन कृत्यों के कारण समाज की क्या अवस्था हो गई है—इसका सजीव चित्र आपको इसमें दिखाई पड़ेगा। मूल्य ३); स्था० ग्रा० से २॥)

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य ॥)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय,

चन्द्रलोक, इलाहाबाद

बम्बई का सेवा-सदन

[कुमारी बी० ए० इञ्जीनियर, एम० ए०, एल्-एल्० बी०, जे० पी०]

सेवा-सदन की स्थापना हुए आज बीस वर्ष से अधिक बीत गए। उस समय समाज-सुधार के विषय में लोगों के कैसे विचार थे, इसका अनुमान लगाना भी आजकल ज़रा मुश्किल है। यद्यपि आजकल भी समाज-सुधार का कुछ कम विरोध नहीं होता, तथापि आजकल भारत-भूमि पर समाज-सुधार का प्राणप्रद समीर पहले की अपेक्षा कहीं अधिक निर्वाध गति से बह रहा है। आज भारत की देवियाँ पारिवारिक जीवन से लेकर स्वाधीनता के युद्ध-क्षेत्र तक सर्वत्र एक अपूर्व जागरूकता के साथ अपने कर्तव्य-पालन में अग्रसर हो रही हैं। उनका कार्य-कलाप आज केवल गृह के मनोरम

उस ज़माने में घोर विरोध किया जाता था। उस समय जन-साधारण में समाज-सेवा की चर्चा सुनना तो दूर रहा, ऐसे व्यक्ति भी विरले ही थे, जो समाज-सेवा का नाम भी जानते हों। ऐसे ही समय में सेवा-सदन की स्थापना हुई थी। इसका उद्देश्य था स्त्रियों में समाज-सेवा की भावना का प्रचार करना तथा उन्हें इस कार्य के करने योग्य बनाना। इस संस्था को खोल कर इसके स्वनाम-धन्य संस्थापक श्रीयुत मालाबारी तथा उनके अनन्य सहायक श्रीयुत दयाराम गोदूमल जी ने सेवा-भाव का जो बीज बोया था, वह आज हरे-भरे पौधे के रूप में लहलहा रहा है। आज सेवा-सदन के समान विशुद्ध सेवा-भाव से कार्य करने वाली अनेक संस्थाएँ देश में खुल गई हैं और दिनोंदिन उनकी संख्या बढ़ती ही जा रही है। भारतीय स्त्रियों में इस समय जो अभूतपूर्व जाग्रति दिखाई दे रही है, उसके लिए क्षेत्र प्रस्तुत करने में इन संस्थाओं ने महत्वपूर्ण भाग लिया है। ऐसी सभी संस्थाओं में सेवा-सदन ही सब से पहिली संस्था है और आज भी कई दृष्टियों से भारत में इसका स्थान अद्वितीय है।

इसके संस्थापक श्रीयुत मालाबारी स्त्री-शिक्षा के बड़े उत्साही समर्थक थे। स्त्रियों को शिक्षा देकर उन्हें स्वाधीनता प्रदान करने की इच्छा ही एक-मात्र वह शक्ति थी, जो उनके जीवन में स्फूर्ति का सञ्चार करती थी। देश में अमण्य करके भारतीय विधवाओं का दुःखमय जीवन और उनकी कारुणिक दशा उन्होंने अपनी आँखों से देखी थी और तभी से उन्होंने इनकी सेवा करना अपने जीवन का प्रधान कार्य बना लिया था। ऐसे कामों में जन-समुदाय की कटुता और अनुदारता के कारण स्वभावतः अनेक विघ्न-बाधाएँ उपस्थित हो जाती हैं, यही बात श्रीयुत मालाबारी के साथ भी हुई। उस समय वे स्त्रियों का सह-वास-वय बढ़ा कर १२ वर्ष कराने का आन्दोलन कर रहे थे। उनके कार्य का घोर विरोध किया गया, परन्तु

मालाबारी महोदय विघ्न-बाधाओं से विचलित होने वाले व्यक्ति नहीं थे। अपरिवर्तनवादियों के विरोध करने पर भी सन् १८९१ ई० में लड़कियों का सहवास-वय बढ़ा कर १२ वर्ष कर दिया गया। मालाबारी जी के हृदय में स्त्री-जाति के प्रति अगाध सहानुभूति थी। स्त्रियाँ ही राष्ट्र की सच्ची निर्माता हैं, इस बात को उन्होंने बहुत अच्छी तरह समझा था; और समझ कर इसे अपनी जीवन-क्रिया का एक अङ्ग बना डाला था। अपने जीवन में समाज-सुधार सम्बन्धी अनेक कार्य उन्होंने किए, परन्तु उन सभी कार्यों में स्त्री-जाति की सेवा ही प्रमुख थी। सौभाग्यवश इस कार्य में श्रीयुत दयाराम गोदूमल जी, श्रीमती रमाबाई रायडे,

श्रीमती जमनाबाई सकाई और दिलशेद बेगम नवाब मिर्जा के समान सुयोग्य और उत्साही महिलाओं और सहानुभावों से उन्हें प्रचुर सहायता मिली। अन्य कारणों में इन लोगों की सहायता और सहानुभूति भी एक कारण थी, जिससे श्रीयुत मालाबारी को अपने कार्यों में इतनी सफलता मिल सकी।

सेवा-सदन की स्थापना प्रधानतः इस उद्देश्य से हुई थी कि अमीर घरों की स्त्रियों को गरीब स्त्रियों के सम्पर्क में लाया जाय और इस प्रकार धनी महिलाओं में अपनी गरीब बहिनों की सेवा करने का भाव भरा जाय। इस काम में सेवा-सदन को काफ़ी सफलता मिली है। सेवा-सदन की एक शाखा की स्थापना पहले-पहल सन् १९०९ ई० में पूना में हुई थी। तब से पिछले बीस वर्षों में देश में इस ढङ्ग की अनेक संस्थाएँ खुल गई हैं, और वे सभी स्त्री-शिक्षा और समाज-सेवा के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य कर रही हैं। ऐसी संस्थाओं में बम्बई के सेवा-सदन का एक प्रमुख स्थान है, क्योंकि इस संस्था ने कई बातों में मार्ग-दर्शक का काम किया है। इस क्षेत्र द्वारा इसी संस्था का परिचय मैं "भविष्य" के पाठकों को देना चाहती हूँ।

बम्बई के सेवा-सदन का कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत है। यह संस्था भिन्न-भिन्न प्रकार के कई कार्य कर रही है। परन्तु इन सभी कार्यों को मुख्यतः तीन विभागों में बाँट सकते हैं—शिक्षा-विभाग, शिल्प-विभाग तथा समाज-सेवा और चिकित्सा-विभाग। शिक्षा-विभाग के दो अङ्ग हैं—गृह-विद्यालय और नॉर्मल क्लास।

गृह-विद्यालय

(१) गृह-विद्यालय (Home Educational Class) प्रधानतः ऐसी बड़ी उम्र की महिलाओं के लिए है, जिनका विवाह हो गया हो अथवा जो अन्य किसी कारण से साधारण स्कूलों में न पढ़ सकती हों। इसीलिए इस विद्यालय का समय भी ऐसा रक्खा गया है, जो ऐसी महिलाओं के लिए सुविधाजनक हो, अर्थात् ११ बजे से ४ बजे तक। इसमें देशी भाषाओं में से मराठी, गुजराती और उर्दू पढ़ाई जाती है तथा इज़रेज़ी, इतिहास, भूगोल और गणित का साधारण ज्ञान कराया जाता है। इस विद्यालय की जो सब से बड़ी विशेषता है वह है घरेलू काम-धन्धों तथा अन्य उपयोगी कलाओं की शिक्षा। यहाँ सिलाई और कसीदा, कपड़ा काटना तथा सीना, भोजन बनाना, कपड़े धोना और उन पर कलक तथा लोहा करना, चित्रकारी तथा सजीत आदि उपयोगी घरेलू शिल्प के अतिरिक्त प्रारम्भिक चिकित्सा, रोगियों की सेवा करना तथा स्वास्थ्य और सफ़ाई आदि वैज्ञानिक व्यवसायों की भी शिक्षा दी जाती है। विद्यार्थियों को इनमें से अपनी रुचि के अनुकूल विषय चुन लेने की स्वतन्त्रता है। इस विद्यालय की शिक्षा का प्रधान उद्देश्य यह है कि स्त्रियों को घर के काम-धन्धों में दक्ष बनाया जाय तथा उनके चरित्र का विकास करके उन्हें अपने नागरिक कर्तव्यों का पालन करने के योग्य बनाया जाय।

नॉर्मल क्लास

(२) नॉर्मल क्लास (Normal Classes) में अध्यापिकाएँ तैयार की जाती हैं तथा इसके द्वारा अध्यापिकाओं की दशा सुधारने का भी प्रबन्ध किया जाता है। आजकल स्त्री-शिक्षा के प्रचार में जो सब से बड़ी कठिनाई पड़ती है, वह सुयोग्य और सचरित्र अध्यापिकाओं की कमी है। यह संस्था अपने परिमित क्षेत्र में इस कमी को दूर करने की शक्ति भर चेष्टा कर रही है। यह क्लास सन् १९१४ ई० में खोला गया था। अब यह बढ़ते-बढ़ते एक ट्रेनिङ कॉलेज बन गया है, जिसमें बम्बई के गवर्नमेण्ट महिला ट्रेनिङ कॉलेज के सर्वोच्च कक्षा (Final Diploma Course) तक की शिक्षा दी



बम्बई सेवा-सदन की मन्त्रिणी

कुमारी बी० ए० इञ्जीनियर, एम० ए०, एल्-एल्० बी०, एम० बी० ई०, जे० पी०

प्राङ्गण तक परिमित नहीं है, उनके उत्साह और जागरण की क्रान्तिकारी लहरें, जेल की भीषण प्राचीरों तक से टकरा कर भारत-माता के दासत्व की शृङ्खला को चूर-चूर कर देने के लिए व्याकुल हो उठी हैं। जिनके सुकुमार और कोमल हाथों में सुन्दर चूड़ियाँ शोभती हैं, आज वे अपने उन्हीं हाथों में कठोर लौह-शृङ्खला धारण करने का पराक्रम दिखा रही हैं। यह एक ऐसा स्वर्गीय दृश्य है, जिसे देख कर एक बार मुद्दों में भी जान आ जायगी। परन्तु आज की अवस्था और आज से बीस वर्ष पहले की अवस्था में ज़मीन और आसमान का अन्तर था। आज जिन सुधारों की आवश्यकता और उपयोगिता को प्रत्येक व्यक्ति मुक्त-कण्ठ से स्वीकार करता है, उन्हीं सुधारों का

मालाबारी महोदय विघ्न-बाधाओं से विचलित होने वाले व्यक्ति नहीं थे। अपरिवर्तनवादियों के विरोध करने पर भी सन् १८९१ ई० में लड़कियों का सहवास-वय बढ़ा कर १२ वर्ष कर दिया गया। मालाबारी जी के हृदय में स्त्री-जाति के प्रति अगाध सहानुभूति थी। स्त्रियाँ ही राष्ट्र की सच्ची निर्माता हैं, इस बात को उन्होंने बहुत अच्छी तरह समझा था; और समझ कर इसे अपनी जीवन-क्रिया का एक अङ्ग बना डाला था। अपने जीवन में समाज-सुधार सम्बन्धी अनेक कार्य उन्होंने किए, परन्तु उन सभी कार्यों में स्त्री-जाति की सेवा ही प्रमुख थी। सौभाग्यवश इस कार्य में श्रीयुत दयाराम गोदूमल जी, श्रीमती रमाबाई रायडे,

जाती है। अब तक इस कॉलेज से शिक्षा पाकर कई सौ अध्यापिकाएँ निकल चुकी हैं, जिनमें से अधिकांश को बम्बई के म्युनिसिपल स्कूलों में स्थान मिला है। कहना न होगा कि अध्यापिकाओं की शिक्षा के लिए बम्बई में यह एक ही संस्था है। इस संस्था की विशेषता यह है कि यह केवल अध्यापिकाएँ ही नहीं तैयार करती, वरन् उन अध्यापिकाओं को इस योग्य भी बना देती है कि वे स्त्रियों की उन्नति और स्त्री-जाति की सेवा सम्बन्धी सब प्रकार के कार्यों में भाग ले सकें। अध्यापिकाओं के मानसिक विकास के लिए समय-समय पर मैजिक लैण्डर्न द्वारा उपयोगी और मनोरंजक विषयों पर व्याख्यान देने का भी प्रबन्ध किया जाता है तथा अध्यापिकाओं का दल बना कर उन्हें नगर के महत्वपूर्ण स्थानों को दिखाया जाता है।

गृह-विद्यालय और नॉर्मल क्लास दोनों में मिल कर इस समय १४२ स्त्रियाँ शिक्षा पा रही हैं। ये दोनों ही कक्षाएँ बम्बई शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत हैं तथा दोनों को गवर्नमेण्ट से सहायता मिलती है।

शिल्प-विभाग

(३) शिल्प-विभाग (Industrial Department) में दस्तकारी की शिक्षा देकर स्त्रियों को इस योग्य बनाने का प्रयत्न किया जाता है कि वे स्वयं अपनी जीविका कमा सकें। आजकल प्रायः ऐसी स्त्रियाँ देखी जाती हैं, जो बहुत ही गरीब हैं तथा जिनका पालन-पोषण करने वाला कोई नहीं है। ऐसी स्त्रियाँ प्रायः आत्म-सम्मान खोकर या तो किसी सम्बन्धी के यहाँ रहने लगती हैं और उसके सिर का बोझ बन जाती हैं अथवा भीख माँग कर समाज के विर पर अपने पालन-पोषण का बोझ लाद देती हैं। ऐसी ही स्त्रियों को स्वावलम्बी बनाने के लिए यह शिल्प-विभाग खोला गया है। इसमें कपड़े काटना और सीना, भोजन बनाना, मोझे और गुल्लन्द आदि बुनना, कड़े धोना और उस पर कलफ तथा लोहा काना, बेत का काम, बेत-बूटे काटना आदि सिखाया जाता है। इस समय इस विभाग में २२५ से भी कुछ अधिक स्त्रियाँ शिक्षा पा रही हैं। अब तक इसमें से लगभग ३०० स्त्रियाँ शिक्षा पाकर निकल चुकी हैं, जिनमें से लगभग ६० स्त्रियाँ इस समय म्युनिसिपल तथा प्राइवेट स्कूलों में दस्तकारी का अध्यापिका हैं, बहुत सा ज्ञानगो तौर पर दस्तकारी का काम सिखा कर अगले जीविका कमाती हैं, तथा ४० के लगभग नर्स और दाई का काम भीख चुकी हैं। इन कामों के लिए सेवा-सदन को अब तक बम्बई पूना, हुगली तथा लाहौर की शिक्षा, शिल्प तथा शिशुपालन-सम्बन्धी प्रदर्शनियों से तमगों और प्रशंसा-पत्र मिले हैं।

अनाथ-गृह

(४) अनाथ-गृह (Home for the Homeless Women and Children) में अनाथ स्त्रियों और बच्चों को रखने का प्रबन्ध है। इस समय ७० स्त्रियाँ और बच्चों को इस संस्था की ओर से मुफ्त भोजन-वस्त्र और शिक्षा दी जा रहा है। इन लोगों की व्यक्तित्व यात्रयता तथा स्वतंत्रता के अनुसार उन्हें उपरान्त विभागों में अध्यापिका, नर्स या दस्तकारी-शिक्षक का काम सिखाया जाता है। जिन लोगों में पढ़ने-लिखने की या किसी प्रकार का मानसिक काम करने की योग्यता बिल्कुल नहीं होती, उन्हें कोई-रेलू शिल्प सिखाया जाता है। हमारी सामाजिक बुराइयों तथा दरिद्रता के कारण हर साल अधिकांशिक संख्या में स्त्रियाँ और बच्चे इस अनाथ-गृह में शरण लेने के लिए आया करते हैं। परन्तु दुर्भाग्यवश जगह की कमी होने के कारण सेवा-सदन के अधिकारियों को उन्हें वापस लौटा देना पड़ता है। इस समय इस अनाथ-गृह में अधिक से अधिक ७० व्यक्तियों के रहने का स्थान है और वह सब स्थान भरा हुआ है। “भविष्य”

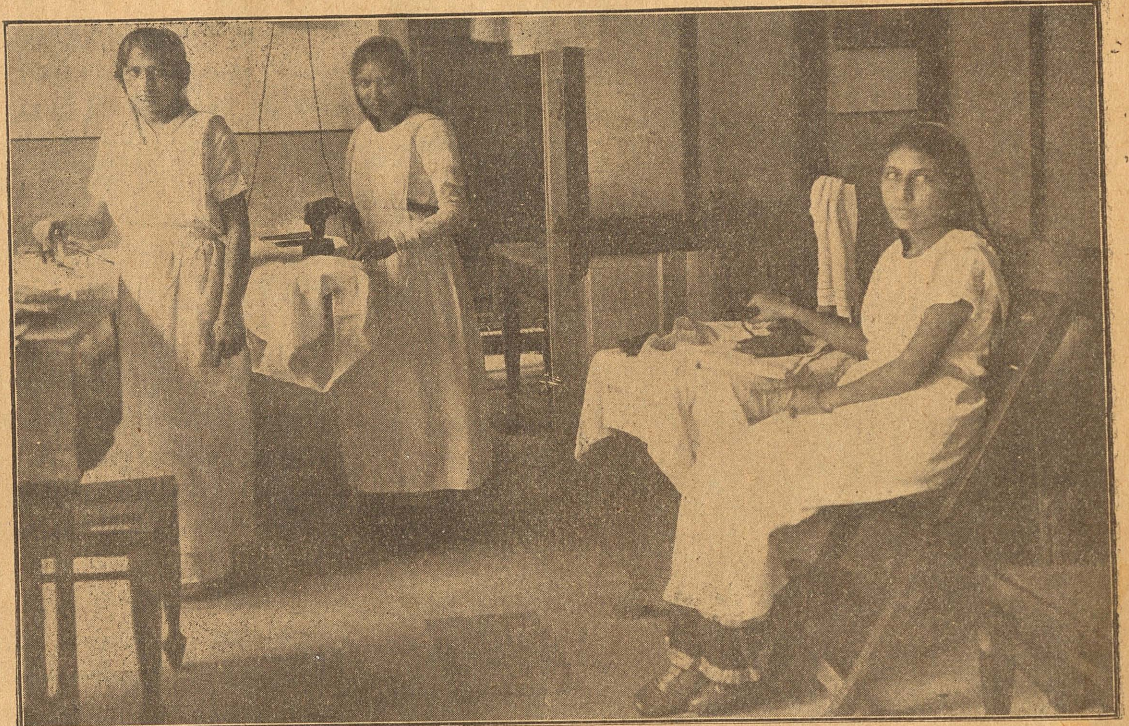
के पाठकों को यह जान कर बड़ी प्रसन्नता होगी कि इस अनाथ-गृह में जात-पात का बिल्कुल ध्यान नहीं किया जाता। इस समय इसमें जो ७० स्त्रियाँ और बच्चे हैं, उनमें ५२ हिन्दू, १४ पारसी और ४ मुसलमान हैं।

यह सारी संस्था ही ऐसी है, जहाँ जात-पात का कोई विचार नहीं किया जाता। इस समय सेवा-सदन में स्त्रियाँ और बच्चे सब मिल कर करीब ४०० व्यक्ति शिक्षा पा रहे हैं, जिनमें से केवल गृह-विद्यालय तथा नॉर्मल क्लास में १५२ हिन्दू, ४७ पारसी, ५ मुसलमान तथा १० क्रिश्चियन हैं। इसी प्रकार अन्य विभागों में भी सभी जातियों, सभी सम्प्रदायों और सभी धर्मों की स्त्रियाँ और बच्चे भरे हुए हैं।

समाज-सेवा और चिकित्सा-विभाग

(५) समाज-सेवा तथा चिकित्सा-विभाग (Social and Medical Department) भी बहुत उपयोगी कार्य कर रहा है। यहाँ शिक्षा पाने वाली नर्सों और दाइयों को साधारणतः एक वर्ष तक इस संस्था की अवै-तनिक सेवा करनी पड़ती है। इसके बाद जिनकी इच्छा होती है, उन्हें सेवा-सदन की ओर से वेतन देकर रख लिया जाता है और वे गरीब तथा मध्यम श्रेणी के घरों

उपयोगी हो सकती। बम्बई के एक आर्क-बिशप ने इसके विषय में कहा है कि यह पूरी संस्था “अत्यन्त उपयोगी और अपने ढङ्ग की निराली संस्था है।” एक ऐसी उपयोगी और आदर्श संस्था को साधनों की कमी के कारण अने कार्यों के विस्तार करने का अवसर न मिले, यह वास्तव में खेद की बात है। यों तो यह संस्था जितनी ही बड़ी तथा उपयोगी है, इसकी आवश्यकताएँ भी उतनी ही बड़ी तथा विविध प्रकार की हैं। परन्तु उनमें दो आवश्यकताएँ ऐसी हैं, जिनकी पूर्ति बहुत ही शीघ्र होनी चाहिए। इसके ट्रेनिंग कॉलेज के साथ एक प्रैक्टिसिंग स्कूल का होना बहुत ही जरूरी है। अब तक यहाँ की अध्यापिकाएँ एक म्युनिसिपल स्कूल में जाकर पढ़ाने का अभ्यास किया करती हैं, किन्तु अब इस प्रबन्ध से काम नहीं चल सकेगा। गवर्नमेण्ट ने इस संस्था को सूचना दी है कि तीन वर्षों के अन्दर ट्रेनिंग कॉलेज के लिए एक प्रैक्टिसिंग स्कूल का प्रबन्ध अवश्य हो जाना चाहिए। इस प्रकार का एक स्कूल चलाने के लिए कम से कम ३००) ६० मासिक खर्च की आवश्यकता है। इसके अलावा, यदि मकान-किराए आदि का हिसाब छोड़ दिया जाय, क्योंकि सेवा-सदन



सेवा-सदन में कपड़ा धोने का काम सिखाया जा रहा है।

में चिकित्सा करने के लिए भेजी जाती हैं। सेवा-सदन की नर्सों प्रायः बिना फ्रीस लिए ही गरीबों की सेवा करती हैं, और यदि कभी कुछ फ्रीस ली भी जाती है तो केवल नाम-मात्र की। नर्सों और दाइयों की आवश्यकता दिनोंदिन इस तरह बढ़ती चली जा रही है कि अब तो अपेक्षाकृत सम्पन्न घरों से भी दाइयों की माँग आती है और इन सब माँगों को पूरा काना बहुत हो मुश्किल हो जाता है। गर्भिणी तथा प्रसूता स्त्रियों की सेवा और परिचर्या कर सकने योग्य दाइयाँ तैयार करके तथा गरीबों से बिना फ्रीस लिए उनके घरों में दाइयाँ भेज कर सेवा-सदन वास्तव में समाज की एक बहुत बड़ी आवश्यकता पूरी कर रहा है। इस आदर्श संस्था की सेवाएँ यहाँ तक परिमित नहीं हैं। इसकी परिचारिकाएँ जेलों का निरीक्षण करती हैं। स्कूलों, अनाथालयों और अस्पतालों में जाकर वहाँ के पीढ़ितों को शुश्रूषा और सहायता करती हैं, तथा इसी प्रकार के और भी कितनी ही लोक-सेवा के काम करती हैं।

इन बातों से सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि इस संस्था के पास और भी अधिक साधन होते, तो यह समाज के लिए कितना अधिक

अपने वर्तमान मकानों में ही किसी तरह एक ऐसे स्कूल का प्रबन्ध कर लेगा, तो भी बेन्च, कुर्सियाँ, डेस्क, ब्लैक-बोर्ड, किन्डर गार्टन के सामान आदि के लिए लगभग ३,०००) ६० की आवश्यकता है। सेवा-सदन के छात्रावास में भी जगह की कमी है तथा अनाथ-गृह में अधिक व्यक्तियों के लिए प्रबन्ध होने की आवश्यकता है। अनाथ-गृह के लिए एक ज़मीन ले ली गई है, परन्तु धनाभाव के कारण उस पर मकान बनवाने का काम रुका हुआ है। इसको बड़ी शीघ्र आवश्यकता है कि अनाथ-गृह के लिए अधिक स्थान और अधिक द्रव्य का प्रबन्ध किया जाय। इस गृह में शरण लेने आने वाले दीन-हीन बच्चों और दुःखिनी स्त्रियों को निराम करके लौटा देना कितना कठोर और कितना दुःखद कार्य है, इसको वही लोग समझ सकते हैं, जिन्हें कभी ऐसा कठोर कार्य करने के लिए विवश होना पड़ा हो। समाज-सेवा के प्रत्येक हिमायती और स्त्री-शिक्षा के प्रत्येक प्रेमी का यह परम कर्तव्य है कि वह यथाशक्ति इस संस्था की कठिनाइयों को दूर करके देश और समाज की उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करे।

(शेष मैटर ३२ वें पृष्ठ के पहले कॉलम में देखिए)

बम्बई की प्राण—श्रीमती हंसा मेहता

(संक्षिप्त परिचय)

[श्रीमती लक्ष्मीदेवी, बी० ए०]

महासती सीता ने अग्नि-प्रवेश कर अपने सतीत्व का प्रमाण दिया था। आज भारत की अनेकों महिलाएँ क्रान्ति की धधकती हुई उवाला में कूद कर अपनी देशभक्ति का प्रोज्ज्वल प्रमाण दे रही हैं। देश के लिए कुर्बान होने वाली ऐसी महिलाओं में श्रीमती हंसा मेहता का स्थान बहुत ऊँचा है। आप १७ी दिसम्बर को ही कृष्ण-सदन से मुक्त की गई हैं।

श्रीमती हंसा मेहता के समान वीर और देशभक्त स्मरणी, किसी भी देश का गौरव हो सकती है। आपका देश-प्रेम और स्वार्थत्याग महिलाओं के लिए ही नहीं, पुरुषों के लिए भी अनुकरणीय है। पाठकों की जानकारी के लिए देवी जी का संक्षिप्त जीवन नीचे दिया जा रहा है।

आपका जन्म प्रसिद्ध नगर सुरत में ३१ जुलाई, सन् १८९७ को हुआ था। आपके पिता का नाम सर मनुभाई मेहता है। आप बीकानेर के प्रधान-मन्त्री हैं। और बड़ोदा राज्य के भी प्रधान-मन्त्री रह चुके हैं। आप गोलमेज़ कॉन्फ्रेंस के निर्वाचित सदस्यों में से हैं।

केवल ८ ही वर्ष की आयु में श्रीमती जी को मातृ-सुख से हाथ धोना पड़ा। माता की मृत्यु ने आपके हृदय पर गहरी चोट की। वह बाल-सुलभ-चपलता अब आप में न रही। आपकी गम्भीरता देख कर आपके पिता चिन्तित हो उठे। फल-स्वरूप आप एक पाठशाला में भर्ती कर दी गईं।

कहावत है—‘होनहार बिरवान के होत चीकने पात।’ छोटी ही उम्र से आपमें वे गुण पाए जाते थे,

१६ वर्ष की आयु में आपने योग्यतापूर्वक इण्टरनेस की परीक्षा पास की। इसके उपलक्ष्य में आपको बम्बई-



श्रीमती हंसा मेहता, बी० ए०

जो हाल ही में जेल से छूट कर आई हैं

विरवविद्यालय की ओर से, ‘चैटक्रील्ड पारितोषिक’ तथा ‘नारायण परमानन्द पारितोषिक’ अेंट किए गए। बड़ोदा कॉलेज से आपने एफ० ए० की परीक्षा पास की। इस बार भी आपको ‘गङ्गाबाई भट्ट’ पारितोषिक दिया गया। सन् १९१८ में आपने दर्शन-शास्त्र में सम्मान-सहित बी० ए० पास किया।

विदेश-यात्रा का आपको बड़ा शौक था। आपका कवि-हृदय मिल्टन और शेक्सपियर, रूसो और वालटेयर की क्रीडा-भूमि का दर्शन करने के लिए लात्वायित हो उठा था। सन् १९१९ में आपको अपनी ‘हार्दिक इच्छा को कार्यरूप में परिणत करने का सुयोग हाथ लगा।

भारतीय कोकिला सरोजिनी नायडू के साथ आपने इंग्लैण्ड की यात्रा की। जिस अवस्था में हमारे देश की अधिकांश महिलाएँ अन्ध-कूप में—विलासिता के गर्त में, नरक की यातना में—पड़ी रह कर पुरुषों की विलास-सामग्री बनती हैं, उस अवस्था में उन्हीं की एक बहिन बन्दन के विश्वविद्यालय में संपादन-कला का अध्ययन करने लगी—नहीं-नहीं, वह रूसो और

वालटेयर, मिल्टन और शैली की आत्माओं से उपदेश ग्रहण करने लगी; प्रातःस्मरणीया, स्वतन्त्रता की पुनारिण, देवी जोन की शक्ति, उसका वह अलौकिक तेज अपने में भरने लगी, जिसमें वह भारतीय क्रान्ति का

एक अङ्ग बन जाय, भारत की धधकती हुई उवालामुखी का एक स्फुल्लिङ्ग बन जाय।

सन् १९२० के जून में जेनेवा में अन्तर्राष्ट्रीय महिला-परिषद् की बैठक हुई। इसका उद्देश्य था स्त्रियों की राजनैतिक और सामाजिक दशा को सुधारना। श्रीमती जी एक विशेष सदस्या की हैसियत से उसमें सम्मिलित हुईं। उक्त परिषद् में आपने भारतीय जातियों की अदृचनों की ओर परिषद् का ध्यान आकर्षित किया। उनकी वास्तविक दशा, और उसका कारण वहाँ खोल कर आपने संसार के सामने रख दिया।

सन् १९२१ के नवम्बर मास में आप भारत लौट आईं। यूरोप का सैर तो हो चुका था। अब आपने अमेरिका जाने की ठानी। इस बार दलितों के पिता, वाशिंगटन की जन्मभूमि के दर्शनों की इच्छा आपके हृदय में उठी।

सन् १९२२ के मई के महीने में, वाशिंगटन में स्त्रियों की सामाजिक कॉन्फ्रेंस हुई थी। निमन्त्रण पाकर आप उसमें शरीक होने के लिए चल पड़ीं। वहाँ भी आपने भारतीय महिलाओं की दशा का अच्छा झाका खोंचा। आप कोरी व्याख्यानवाजी नहीं करती थीं। आपकी प्रत्येक उक्ति से सचाई और मार्मिकता छलकती थी। प्रत्येक शब्द आपके हृदय के रक्त से रंगे हुए होते थे। इस कारण आपके व्याख्यानों का वहाँ बड़ा प्रभाव पड़ा। भारत के प्रति अमेरिकन महिलाओं की आँखों पर जो पर्दा पड़ा हुआ था, उसके हटाने में आपने श्रीमती सरोजिनी नायडू को अच्छी सहायता पहुँचाई। सैनफ्रैन्सिस्को में होने वाली World Educational Conference में आपने अङ्गरेज सरकार की भारत में स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी नीति की पोख अच्छी तरह खोजी थी।

सन् १९२३ के अगस्त मास में आपने जापान-यात्रा की। इस यात्रा में आपका उद्देश्य विशेषतया जापानी स्त्रियों की शिक्षा-प्रणाली का अध्ययन करना था, किन्तु वहाँ के विद्यालय छुट्टियों के कारण बन्द हो जाने से आपका उद्देश्य सफल न हो सका।



बीकानेर स्टेट के प्रधान मन्त्री सर मनुभाई मेहता जो गोलमेज़-परिषद् में सम्मिलित होने विलायत गए हुए हैं।

जिनके कारण आज आप महिला-समाज का एक मूल्यवान रत्न हो गई हैं। अपनी प्रखर बुद्धि के कारण, अपनी पाठशाला के प्रायः सभी पारितोषिक आपने प्राप्त किए।



श्रीमती हंसा मेहता की माता लेडी मेहता

जापान से लौटने पर आपके जीवन का दूसरा पहलू आरम्भ होता है। यूरोप और अमेरिका के स्वतन्त्र भावों ने आपके हृदय में घर बना लिया था। भारत की अन्ध और कुत्सित कुरीतियों का समूल नाश करने का

सङ्कल्प आप कर चुकी थीं। विद्यार्थी-जीवन में भी आप बराबर सभा-सोसाइटियों में प्रमुख भाग लिया करती थीं। जिस समय आप एफ० ए० में पढ़ती थीं, उसी समय आपने विद्यार्थी-सङ्घ की नींव डाली थीं, और स्वयं उसकी सभानेत्री भी चुनी गई थीं। सुधार की ओर आपका झुकाव बहुत पहले ही से था। किन्तु अब आपने अपने मनोभावों को कार्यरूप में प्रकट करने का निश्चय किया।

सन् १९२४ के जनवरी मास में आपने, अन्तर्जातीय विवाह सम्बन्धी विचारों को कार्यरूप में परिणत कर दिखाया। बड़ोदा के प्रधान मेडिकल ऑफिसर डॉक्टर जीवराव के साथ आपने विवाह किया। अन्तर्जातीय विवाह का जो आदर्श आपने भारतीय महिला-समाज के सामने रक्खा है, उससे हमारी बहिनों को कुछ सीखना चाहिए। आपने दिखा दिया है कि विवाह का सम्बन्ध हृदय से है, सामाजिक रीतियों से नहीं! विवाह एक पवित्र-बन्धन है, धर्म का आडम्बर नहीं। आपने दिखा दिया है कि अपने विवाह का निर्णय करना, अपने पति का वरण करना स्त्रियों का ईश्वर-प्रदत्त अधिकार है।

अब हम श्रीमती जी को उस क्षेत्र में पाते हैं, जहाँ हमन का दानव प्रचण्ड प्रताप और कठोर गर्जना से भारत को पीस डालना चाहता है। भारतीय महिलाओं की जाग्रति का प्रयत्न करते हुए आप दिनोंदिन स्वतन्त्रता के भीषण संग्राम में अग्रसर होती जा रही हैं। श्रीयुत मोदी के जेल जाने पर आप ही बम्बई की 'युद्ध-समिति' की डिक्टेटर बनाई गई थीं। इस भीषण संग्राम के समय, आपने एक वीर सेनापति की तरह जो वीरता के कार्य किए, जिस धीरता और बुद्धिमत्ता के साथ सैन्य-सञ्चालन किया, उससे प्रसन्न होकर ही सरकार ने आपको तीन मास के लिए कृष्ण-मन्दिर में विहार करने की आज्ञा दी थी।

अपने एक कॉङ्ग्रेस-बुलेटिन में श्रीमती जी ने अपने हृदय को खोल कर रख दिया है। वे कहती हैं :—

“स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए त्याग अनिवार्य है। अपने उद्देश्य तक पहुँचने के लिए हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम यातनाओं का सामना करें, अपनी कुर्बानियाँ करें, और युद्ध तब तक जारी रखें, जब तक कि हमें मनोवाञ्छित वस्तु न मिल जाय।”

एक वीर रमणी ही ऐसा कह सकती है। संसार ज़रा आँखें उठा कर देखे, एक भारतीय महिला आज स्वतन्त्रता का क्या मूल्य देने को तैयार है?

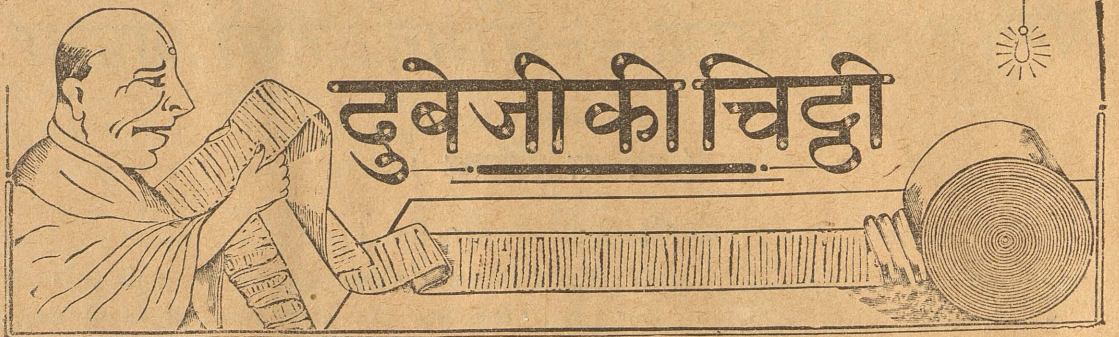
* * *

(३०वें पृष्ठ का शेषार्श)

निरसन्देह सेवा-सदन भारतवर्ष में अपने ढङ्ग की अकेली और आदर्श संस्था है। हमारा विश्वास है कि मानव जाति का प्रत्येक प्रेमी इस संस्था की उन्नति के लिए यथाशक्ति प्रयत्न करेगा और ईश्वर से प्रार्थना करेगा कि यह संस्था देश और समाज की सेवा के लिए दिनोंदिन अधिकाधिक उपयोगी और शक्तिमान बन सके।

जिन देवियों बथवा महाबुभावों को इस संस्था के साथ किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार करना हो, उन्हें—मन्त्री, सेवा-सदन, गामदेवी, बम्बई नं० ७ के पते से पत्र लिखना चाहिए।

* * *



अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

मि० चर्चिल की स्पीच पढ़ कर तो जी खूब हो गया। क्या बेज्वाग बातें कही हैं। कहने वाला हो तो कम से कम ऐसा तो हो। आखिर बेचारे क्या करें। तबीयत ही तो है, क्रावू में न रही। परन्तु इसमें बहुत बड़ा सन्देह नहीं है कि उन्होंने यह बातें जान-बूझ कर नहीं कहीं। जान पड़ता है उस दिन ज़्यादा ठाक गए होंगे। मुफ्त की जब मिलती है तब ज़्यादा ठाक ही जाती है। और जब ज़्यादा ठाक जाती है तो आदमी राजा हरिश्चन्द्र का एक बहुत ही सस्ता संस्करण बन जाता है। उस समय यही जी में आता है कि “क्या परवाह है! हमारा कोई क्या कर लेगा? हम तो साफ़ ही साफ़ कहेंगे, चाहे किसी को बुरा लगे या भला।” अब बलायती अखबार तथा राजनीतिज्ञ बिगड़ रहे हैं कि—“चर्चिल बड़े खराब आदमी हैं, जो ऐसी बातें कहते हैं। उनकी बात का कोई मूल्य नहीं है—इत्यादि-इत्यादि।” अपने राम का भी यही खयाल है कि चर्चिल साहब बड़े वैसे आदमी हैं, उन्हें ज़रा समझ नहीं है। भाइयो, आप लोग उनके कहने का कुछ बुरा मत मानिए—वह तो यों ही बका करते हैं। उनका स्वभाव ही कुछ नटखटपन का है। छुपन वर्ष के होने आए, परन्तु उनका लौण्डापन नहीं गया। यह नहीं देखते कि कौन बात किस समय कहना चाहिए और किस समय नहीं कहना चाहिए। ऊँट की तरह से मुँह ठाँपाया और बलबलाने लगे। यह माना कि नशे में कह गए; परन्तु ऐसा नशा किस काम का जिससे कि अपनी पोल खुले। ऐसी बातें कहीं यों कही जाती हैं। वह तो कहिए यही खैरियत है कि हिन्दुस्तानी बेचारे बड़े भोले हैं—ज़ीपापोती को मान लेते हैं, नहीं तो बड़ा गड़बड़ हो जाय। बस आज से यह नियम कर दिया जाय कि जब कभी वह किसी सभा-सोसायटी में जायें तो जब तक वह अपना भाषण न दें तब तक उन्हें बोलत की झलक न दिखाई जाय। अजी जनाब उनका क्या बिगड़ेगा? वह तो यह कह कर अलग हो जायेंगे कि भाई माफ़ करो, नशे में मुँह से निकल गया; परन्तु ब्रिटिश सरकार का तो सब भयङ्ग-फोड़ हो जायगा। यदि राउण्ड-टेबुल कॉन्फ़रेंस के प्रतिनिधि बिगड़ कर चल देते तो जनाब, नाक कट जाती या नहीं? सारा करा-धरा चौपट हो जाता। यह तो लोग जानते ही हैं कि देना-लेना क्या, सुहृदवत अजब चीज़ है। परन्तु जो गुड़ दिए मरे उसे ज़हर क्यों दिया जाय। अपने मुँह से यह क्यों कहा जाय कि कुछ नहीं मिलेगा, हवा खाओ। ऐसा कहने में खराबी है। और मि० चर्चिल, आपके भाषण की कटु आलोचना की जायगी—आपको बुरा-भला कहा जायगा; परन्तु आप बुरा मत मानिएगा, सुन कर सोंठ हो जाइएगा। इस समय ऐसा ही मौक़ा है। ऐसा न हो कि फिर बलबलाने लगे, समझे? खैर, अब तो जो होना था हो गया; परन्तु भविष्य में ज़रा ध्यान रखना।

और एक हिसाब से मि० चर्चिल ने कुछ बेबा भी नहीं किया। यह तो होना ही चाहिए कि एक तमाचा रसीद करे और दूसरा सोहरा दे। काम इसी तरह से

होता है। सब मारते खाँ ही हो जायें तब भी ठीक नहीं और सब दयालु बन जायें तब भी बुरा है। इसलिए यही ठीक है कि कुछ लोग तो यह आशा दिखाते रहें कि वाह! यह क्या बात है, सब कुछ दिया जायगा, आप लोग घबराते क्यों हैं? और दो-एक यह कहते रहें कि यह सब ठकोसला है—कानी कौड़ी भी नहीं दी जायगी। इससे यह लाभ होगा कि समय पर जिस ओर उचित समझा जायगा उस ओर का पत्त लिखा जायगा। और फिर इससे यह लाभ भी तो है कि जब याचक लोग यह देखेंगे कि यहाँ से तो कुछ भी मिलने की आशा नहीं तो वे जो कुछ थोड़ा-बहुत मिलेगा, उसी को गनीमत समझ कर सन्तोष कर लेंगे। यदि घर भर दाता बन जाय तो जनाब, याचक लोग घर खोद ले जायँ, और फिर भी सन्तुष्ट न हों। इसी हातापन की बदौलत राजा हरिश्चन्द्र को बार लोगों ने बेच खाया था। इससे यही नीति ठीक है कि कुछ दाता बने रहें और कुछ सूँ! मि० चर्चिल, आपने बहुत अच्छा किया जो ऐसी स्पीच दे डाली। परन्तु अब कुछ दिनों ज़ामोश रहिए, कुछ दिन बाद फिर एक फुलझड़ी छोड़ देना। लेकिन इस बार जो स्पीच देना वह ज़रा सोच-समझ कर देना। पिछली स्पीच वैसे तो अच्छी रही, परन्तु उसमें दो-चार बातें आप बौड़मपन की कह गए हैं। जैसे आपने यह बक डाला कि गाँधीवाद को कुचल डालना चाहिए, नेताओं को निर्वासित कर देना चाहिए था, गाँधी जी को कानून तोड़ने के समय तुरन्त ही गिरफ़्तार कर लेना चाहिए था। ब्रिटिश सरकार को दिखा देना चाहिए कि वह कितनी शक्तिशाली है, इत्यादि-इत्यादि! ये बातें कहने योग्य नहीं थीं। इससे हिन्दुस्तानी और ज़्यादा भड़क जायेंगे। क्या आपको नहीं मालूम कि आज प्रत्येक देश में कुछ ऐसे लोग मौजूद हैं, जो गाँधी जी को संसार का महापुरुष समझते हैं। यह माना कि वे बिल्कुल अहमक हैं, परन्तु भाईजान, वे साधारण आदमी नहीं हैं—वे सब आपकी ही तरह स्वतन्त्र तथा शक्तिशाली हैं—आप लोग उनको नाराज़ करने का साहस नहीं कर सकते। इससे उन लोगों में भी आप लोगों के प्रति विरोध-भावना उत्पन्न हो जायगी। एक तो आपके दिन वैसे ही खराब हैं—तमाम ज़माना दुरमन हो रहा है, आपके पाले-पोसे बच्चे तक बगावत पर कमर बाँध रहे हैं; उस पर आप ऐसी बातें कहते हैं जो और भी नाराज़ो फैलावे। यह समय अदावत बढ़ाने का नहीं है। हिन्दुस्तान से इस समय सबको सहायुभूति है। इसलिए आप अपनी शक्ति को ज़रा समझ-बूझ कर खर्च कीजिए। यह तो अपने राम को अच्छी तरह पता है कि आप बड़े शक्तिशाली हैं। आप चाहें तो हिन्दुस्तान को भारत-महासागर में डुबो सकते हैं; परन्तु आपकी शक्ति में थोड़ा पिलपिलापन यह है कि हिन्दुस्तान को नष्ट-अष्ट करने में आपके लिए साठों दण्ड एकादशी हो जायगी। आपकी जाति के अनाथ, आवारा और ऐसे नवयुवक, जिनके न बाप का पता, न माँ का ठिकाना, और जो हिन्दुस्तान की बदौलत चैन की बंसी बजाते हैं, इङ्गलैण्ड में धँधे रहने के कारण चूहों और खटमलों की तरह आपके आराम में खलल डालेंगे।

कवाडा और ऑस्ट्रेलिया ये दो आपके कमाऊ पूत हैं— यह हमने माना, परन्तु आपकी बदकिरमती और कलि-काल के प्रभाव से दोनों बज्र बाणायक और हरामी निकले। आपके चलेते हाथ-पैरों जब ये दूर से अँगूठा दिखाते हैं, तो हुदौती में क्या काम आएंगे। इसके अतिरिक्त आप यदि हिन्दुस्तान को तबाह कर डालेंगे तो अमेरिका, जापान, रूस इत्यादि को आपके साथ धौलधरणा करने का मौका मिल जायगा; क्योंकि आपकी छुरी चाँद देख-देख कर अक्सर इन लोगों का हाथ खुजलाया करता है; मगर क्या करें, मौका न मिलने से मजबूर होकर रह जाते हैं। फिर, हिन्दुस्तानी कमबख्त भी मार खाने में आकाशील बज्रबून साबित हुए। तादाद भी कमबख्तों की हतवी इबादा है कि इन्हें मारते-मारते आपको फ्रांसिज मार जायगा और इनका अन्त न होगा। इसलिए आई साहब, गुस्से को थूक डालिए। एक बात और कीजिए—कुछ दिनों के लिए बोटल चढ़ाना बन्द कर दीजिए—ठण्डा पानी पिया कीजिए। बोटल गुस्से को बढ़ाती है, ठण्डा पानी शान्त करता है। ऐसा गुस्सा, जिससे अपनी ही जान पर बवाल हो, बुरा है। हाँ, ज़रा यह तो बताइए कि आपने यह क्या बक डाला कि चौबीस हजार कॉन्ग्रेसवादी जेलों में बन्द हैं। वृद्ध हो गए, मगर अक्षिज न आई। हतवी ज़रबी तादाद बताने की क्या ज़रूरत थी—अधिक से अधिक दस-पन्द्रह हजार बताते। सच बोलने का मादा आपमें कुछ आवश्यकता से अधिक है। आपने शायद भारत-कन्ग्री मि० बेन की बात को सच मान लिया। मि० बेन तो हिन्दुस्तानियों से मिले हुए हैं, वह ऐसी ही बात कहेंगे जिससे हिन्दुस्तानियों का हित हो। आप जैसे पुराने घाघ भी उनके चक्के में धा गए। मि० बेन की बात का तो किसी को विश्वास नहीं हुआ था; क्योंकि वह हिन्दुस्तान के लाभ के लिए बात को बढ़ा कर ही कहते हैं—परन्तु आपकी बात को सब ब्रह्म-वाक्य मानते हैं। जब आपने उनके कथन पर अपनी मुहर लगा दी तो वह बात पक्की हो गई। आप जानते हैं कि इस बात का क्या प्रभाव पड़ेगा? हतवी ज़रबी तादाद सुन कर आपके जाति-माहुरों तथा अन्य देश के लोगों का हार्ट फ्रेक होने लगेगा। वे तो इस तादाद को सुन कर सहम जायेंगे। मजा कुछ ठिकाना है—चौबीस हजार आदमी जेलों में बन्द हैं! आपने किया बड़ा लौखंडा-पच; मगर ज़रूर अब तो जो होना था हो गया। अविष्य में किसी स्पीच में इसका सुधार इस प्रकार कर दीजिएगा कि चौबीस हजार में से बीस हजार माफ़ी माँग कर छूट गए हैं और केवल चार हजार रह गए हैं। यह काम याद करके कीजिएगा, भूल न जाइएगा। चार-पाँच हजार की तादाद सुन कर कोई न चौंकेगा। हतने आदमी तो जेल आया-जाया ही करते हैं, यह एक साधारण बात है। परन्तु चौबीस हजार!!! ओफ़-भोह! ज़रा ठहर जाइए, एक गिलास ठण्डा पानी पी लें तो फिर कुछ कहें। यह तादाद सुन कर तो अपने राम का गला भी खुरक हो गया। हालाँकि यहाँ हिन्दुस्तानी कमबख्त साठ-सत्तर हजार की गिनती गिनाते हैं, परन्तु अपने राम की उनकी बात पर कभी विश्वास नहीं हुआ; क्योंकि अपने राम को यह अच्छी तरह मालूम है कि हिन्दुस्तानी परले सिर के गप्पी होते हैं। और यह भी बड़ी अच्छी बात है कि भारत-सरकार हिन्दुस्तान की गप्पें बाहर जाने नहीं देवी, अन्यथा साठ-सत्तर हजार की तादाद सुन कर तो इज़लैण्ड का एक कोना समुद्र में डूब जाता। हाँ, नेताओं के निर्वासित करने की सलाह जो आपने दी है, उसके लिए आप अधिक चिन्ता मत कीजिए। नेता लोग सब जेलों में निर्वासित हैं और जो उन नेताओं का स्थान ले सकते थे, उन लोगों को भारत-सरकार ने कॉन्फ़ेन्स के बहाने निर्वासित करके इज़लैण्ड भेज दिया। अब यह आपका ज़म है कि आप ऐसा प्रबन्ध करें कि वे जल्दी

हिन्दुस्तान न लौटने पावें। उनको लौटने देने में हर प्रकार से खतरा है। यदि स्वराज्य लेकर लौटे तब भी आपकी शायत है, और यदि खाली हाथ लौटे तब भी आपकी खराबी है; क्योंकि खिसियाया हुआ आदमी क्या नहीं करता। इसलिए अपने राम की सलाह तो यह है कि आप उन्हें दो-चार बरस वहीं बन्द रखिए—तब तक यहाँ सब मामला ठण्डा हो जायगा। परन्तु आप जैसी बातें करते हैं, उससे यह भय है कि कहीं ये लोग रस्सियाँ तुड़ा कर थान की तरफ न भागें। इससे आई जी, अपने राम की अन्तिम प्रार्थना या सलाह (जो कुछ आपकी खोपड़ी शरीफ़ा में आवे समझ लें) मान कर ज़रा अपनी चौंच सग़ाल कर खोला कीजिए। सग़पादक श्री, कृपया मेरा उपर्युक्त सन्देश मि० चर्चिल तक पहुँचाने की चेष्टा कीजिएगा। हालाँकि सन्देश में कही हुई बातें आपको विष-समान प्रतीत होंगी; क्योंकि आप भी ठेठ हिन्दुस्तानी हैं।

अवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

*

*

*

मुफ़्त

जो सज्जन १० हिन्दी पढ़े लिखे मनुष्यों के पूरे-पूरे पते मय उनके ग्राम, पोस्ट, ज़िले के लिख कर भेजेंगे, उनको अज़रेज़ों का गिज़ी-डण्डा नामक पुस्तक मय केले-खर मुफ़्त भेजेंगे। ध्यान रहे पते अलग स्थानों के हों।
पता—श्री गङ्गा औषधालय, अलीगढ़

शीतकाल में सेवन करने योग्य दुर्लभ अमोरी वस्तु

कस्तूरी-अवलेह और बादाम-पाक

राजाओं, रईसों और नाज़ुक-मिज़ाज महिलाओं के लिए खास
(सर्वथा पवित्र और हानि-रहित) (अतिशय स्वादिष्ट और सुगन्धयुक्त)

नुसखा तजवीज़ करने वाले —

उत्तर भारत के प्रख्यात चिकित्सक आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री महोदय

प्रधान अवयव

मोती, ज़हरमोहरा ख़ताई, माखिन्ध, अक्रीक, सुखराज, (गुलाब-जल में पीसे हुए) अश्वर, कस्तूरी, चन्द्रोदय, मकरध्वज (सिद्ध), अन्नक भस्म (सहस्रपुटी), स्वर्ण भस्म, केसर, बादाम, मिश्री (देही) (अर्क वेदमुरक में चाशनी), अन्य फुटकर दवाइयाँ।

गुण

यदि आरोग्य शरीर हो तो २१ दिन नियम से सेवन कीजिए। खाने के १५ मिनिट बाद दवा का समतल शरीर पर दीखने लगेगा। हृदय, मस्तिष्क और नेत्रों में हल्कापन और आनन्द (नशा नहीं) प्रतीत होगा। नसों में उत्तेजना होगी। रक्त की गति तेज़ हो जायगी। प्रतिक्षण कुछ खाने और कुछ करते रहने की इच्छा बनी रहेगी। बी, दूध, मेवा, मलाई बेतकलीफ़ पचेगी। साधारण भोजन के सिवा दिन भर में ४-५ सेर तक दूध पचेगा। यदि धैर्यपूर्वक ब्रह्मचर्य रक्खा जायगा तो मास में ४ से ६ पौण्ड तक वज़न बढ़ेगा। हिस्टीरिया, पुराना सिर-

दर्द, नज़ला, बहुमूत्र और वृद्धावस्था की कफ, साँस की उत्कृष्ट महोषध है।

सेवन-विधि

शालःकाल २ रत्ती कस्तूरी-अवलेह डेढ़ पाव दूध में घोल कर, प्रथम १ तोला बादाम-पाक खाकर ऊपर से उस दूध को पी जाइए। और एक उरदा पान खाकर ज़रा लेट जाइए। लगभग आधा घण्टा चुपचाप निश्चेष्ट पड़े रहिए। औषध-सेवन के बाद २-३ घण्टे तक जल न पीजिए। आवश्यकता हो तो गर्म दूध और पीजिए। जहाँ तक बने शरीर और दिमाग को खूब आराम दीजिए। धीरे-धीरे मालिश कराइए। शरीर मानो कैचुली छोड़ देगा, ठोस कुन्दन की भाँति शरीर बन जायगा।

औषध-सेवन के ३ घण्टे बाद भोजन करना चाहिए। रात्रि को सोने के समय सिर्फ़ कस्तूरी-अवलेह २ रत्ती दूध में घोल कर पीना चाहिए।

जब तक औषध-सेवन जारी रहे, सब प्रकार की खटाई का त्याग करना चाहिए। फलों की खटाई हानिकर नहीं। घी, दूध, मेवा, मलाई, फल खूब खाए—अन्न कम खेना उत्तम है।

मूल्य—बादाम-पाक ६०) सेर (१ सेर ८० तोला) १ पाव से कम नहीं भेजा जाता। कस्तूरी-अवलेह ६) तोला। ३ तोला १५); डाक-व्यय पृथक्।

बनाने और बेचने का सर्वाधिकार प्राप्त

सखीवन फ़ार्मस्युटिकल वर्क्स, दिल्ली



जो लोग जाड़े के दिनों में ताक़त के बड़बु खाने के शौकीन तथा हल्कुक हैं, उन्हीं के आग्रह से यह मोदक बहुत ही स्वच्छतापूर्वक, शास्त्रीय विधि से तैयार कराए हैं। यह मोदक ताक़त के सभी मोदकों से श्रेष्ठ है। इसमें विशेषता यह है कि और ताक़त की दवाओं की तरह यह क्रिजियत नहीं करता; परन्तु इससे दस सारा होता है और पाचन शक्ति बढ़ती तथा भूख खुल कर लगती है। बल-वीर्य, रक्त और सुन्दरता को बढ़ाता है। शरीर हृष्ट-पुष्ट हो जाता है।

१५ बड़बुओं के १ बक्स की कीमत १); डा० म० अलग

पता—चन्द्रसेन जैन, वैद्य—इटावा

दवाइयों में

स्वर्च मत करो

स्वयं वैद्य बन रोग से मुक्त होने के लिए “अनुभूत योगमाला” पाल्कि पत्रिका का नमूना मुफ़्त भेगा कर देलिये। पता—मैनेजर अनुभूत योगमाला ऑफिस, बरालोकपुर, इटावा (यू० पी०)

विद्याविनोद-ग्रन्थमाला

की
विख्यात पुस्तकें

आशा पर पानी

यह एक छोटा सा शिलाप्रद, सामाजिक उपन्यास है। मनुष्य के जीवन में सुख-दुःख का दौरा किस प्रकार होता है; विपत्ति के समय मनुष्य को कैसी-कैसी कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ती हैं; परस्पर की फूट एवं वैमनस्य का कैसा भयङ्कर परिणाम होता है—इन सब बातों का इसमें बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलेगा। समाशीलता, स्वार्थ-त्याग और परोपकार का बहुत ही अच्छा चित्र खींचा गया है। मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से ३॥)

गौरी-शंकर

आदर्श-भावों से भरा हुआ यह सामाजिक उपन्यास है। शङ्कर के प्रति गौरी का आदर्श-प्रेम सर्वथा प्रशंसनीय है। बालिका गौरी को धूर्तों ने किस प्रकार तज्ञ किया। बेचारी बालिका ने किस प्रकार कष्टों को चीर कर अपना मार्ग साफ़ किया, अन्त में चन्द्र-कला नाम की एक वेश्या ने उसकी कैसी सच्ची सहायता की और उसका विवाह अन्त में शङ्कर के साथ कराया। यह सब बातें ऐसी हैं, जिनसे भारतीय स्त्री-समाज का सुखोज्ज्वल होता है। यह उपन्यास निश्चय ही समाज में एक आदर्श उपस्थित करेगा। छपाई-सफ़ाई सभी बहुत साफ़ और सुन्दर है। मूल्य केवल ३॥)

मानिक-मन्दिर

यह बहुत ही सुन्दर, रोचक, मौलिक, सामाजिक उपन्यास है। इसके पढ़ने से आपको पता लगेगा कि विषय-वासना के भक्त कैसे चञ्चल, अस्थिर-चित्त और मधुर-भाषी होते हैं। अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए वे कैसे-कैसे जघन्य कार्य तक कर डालते हैं और अन्त में फिर उनकी कैसी दुर्दशा होती है—इसका बहुत ही सुन्दर तथा विस्तृत वर्णन किया गया है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल तथा मधुर है। मूल्य २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥३॥)

मनोरमा

यह वही उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में क्रान्ति मचा दी थी!! बाल और वृद्ध-विवाह से होने वाले भयङ्कर दुष्परिणामों का इसमें नम्र-चित्र खींचा गया है। साथ ही हिन्दू-विधवा का आदर्श जीवन और पतिव्रत-धर्म का बहुत सुन्दर वर्णन है। मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥३॥)

शुक्ल और सोफिया

इस पुस्तक में पूर्व और पश्चिम का आदर्श और दोनों की तुलना बड़े मनोहर ढङ्ग से की गई है। यूरोप की विलास-प्रियता और उससे होने वाली अशान्ति का विस्तृत वर्णन किया गया है। शुक्ल और सोफिया का आदर्श जीवन, उनकी निःस्वार्थ देश-सेवा; दोनों का प्रणय और अन्त में संन्यास लेना ऐसी रोमाञ्चकारी कहानी है कि पढ़ते ही हृदय गद्गद हो जाता है। सजिद पुस्तक का मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥३॥)

नयन के प्रति

हिन्दी-संसार के सुविख्यात तथा 'चाँद'-परिवार के सुपरिचित कवि आनन्दीप्रसाद जी की नौजवान लेखनी का यह सुन्दर चमत्कार है। श्रीवास्तव महोदय की कविताएँ भाव और भाषा की दृष्टि से कितनी सजीव होती हैं—सो हमें बतलाना न होगा। इस पुस्तक में आपने देश की प्रस्तुत हीनावस्था पर अश्रुपात किया है। जिन श्रोज तथा कल्याणपूर्ण शब्दों में आपने नयनों को धिक्कारा और लज्जित किया है, वह देखने ही की चीज़ है—व्यक्त करने की नहीं। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय! दो रङ्गों में छपी हुई इस सुन्दर रचना का न्योछावर केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥ मात्र !!

सती-दाह

धर्म के नाम पर स्त्रियों के ऊपर होने वाले पैशाचिक अत्याचारों का यह रक्त-रन्जित इतिहास है। इसके एक-एक शब्द में वह वेदना भरी हुई है कि पढ़ते ही आँसुओं की धारा बहने लगेगी। किस प्रकार स्त्रियाँ सती होने को बाध्य की जाती थीं, जलती हुई चिता से भागने पर उनके ऊपर कैसे भीषण प्रहार किए जाते थे—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा! सजिद एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥३॥)

प्राणनाथ

यह वही उपन्यास है, जिसकी ६००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। इसमें सामाजिक कुरीतियों का ऐसा भयङ्करोद्घ किया गया है कि पढ़ते ही हृदय दहल जायगा। नाना प्रकार के पाखण्ड एवं अत्याचार देख कर आप आँसू बहाए बिना न रहेंगे। शीघ्रता कीजिए! मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से १॥३॥)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

तूफाने ज़राफ़्त

[नाखुदाए सखुन हज़रत "नूह" नारवी]

बड़े दिन में यह कह कर लेडियों के साथ सोते हैं,
जो तुम हुवा की पोती हो, तो हम आदम के पोते हैं !
तसव्वर जिन मुसलमानों को है लन्दन की मस्जिद का,
अरब के तुलूम को यूरोप के गमले में वह बोते हैं !

❖

पूछा जो हमने किससे तेरा रब्तोज़वत है ?
मुँह फेर कर वह कहने लगा, तुमको ख़वत है !

❖

अजब क्या उनके हँसने पर जो दुनिया ख़ूब रोती है,
जहाँ बिजली चमकती है, वहाँ बारिश भी होती है !

❖

नाम लिखना तो लिफ़ाफ़े पे मुनासिब ही नहीं,
इस सबब से कि यह एक पर्दा-नशी का ख़त है !

❖

अबस देरो-हरम में काफ़िरो-दीदार लड़ते हैं,
कहीं यह सर झुकाते हैं, कहीं वह सर रगड़ते हैं !

❖

[महाकवि (स्वर्गीय) 'अकबर' इलाहाबादी]

मज़हब का हो क्योंकि इलमो-अमल, दिल ही नहीं भाई एक तरफ़,
किरकिट की खिलाई एक तरफ़, कॉलिज की पढ़ाई एक तरफ़ !
क्या ज़ौके-इबादत हो उनको, जो मिस के लबों के शैदा हैं !
हलवाय-विहिशी एक तरफ़, होटल की मिठाई एक तरफ़ !
तारुनोतप और खटमल, मच्छड़ सब कुछ है यह पैदा कीचड़ से,
बम्बे की रवानी एक तरफ़, और सारी सफ़ाई एक तरफ़ !
हर सिम्त तो है एक दामे-बला, रह सकते हैं खुश किस तरह भला ?
अग़थार की ख़वाविश एक तरफ़, आपस की लड़ाई एक तरफ़ !
क्या काम चले, क्या रङ्ग जमे, क्या बात बने, कौन उसकी सुने ?
हैं "अकबरे" बेकस एक तरफ़, और सारी खुदाई एक तरफ़ !

❖

[नाखुदाए सखुन हज़रत "नूह" नारवी]

मुन्तख़िब होने को हमको ध्यान है, वोट क्या है, मेम्बरी की जान है !
अहले-मशरिक़ से नहीं करते वह बात, अहले-मगरिब की यही पहिचान है !
नौकरी मिलने में आसानी नहीं, पास हो जाना बहुत आसान है !
ढूँढ़ते हैं कौन्सिलों में सीट वह, अपने घर से जिनको इतमीनान है !
सर जो टेबुल से कभी उठता नहीं, क्या किसी अङ्गरेज़ का पहसान है !!
दिल में कुछ है और लब पर और कुछ, इन दिनों यह दीन, यह ईमान है
रोज़ के चन्दों से आजिज़ आ गए, लीजिए हाज़िर हमारी जान है !
चाहिप होटल की दरबानी हमें, हाथ ख़ाली है मकाँ वीरान है !
'पानियर' में जो न शायी हो सके, वह कोई नोटिस, कोई ऐलान है !
काबा ओ बुतख़ाना की हसरत नहीं, सैर लन्दन का फ़क़त अरमान है !
"नूह" ईसाई नहोते हों कहा, आज गिरजा में बड़ा सामान है !

❖

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

लीडर का रोना एक तरफ़, पबलिक का रोना एक तरफ़,
दोनों का असर क्या रखता है, सरकार का होना एक तरफ़ !
वह क़द्र नहीं कुछ भी करते, कुछ भी उनकी नज़रों में,
जान अपनी खोनी एक तरफ़, दिल अपना खोना एक तरफ़ !
हँसता है ज़माना दिल में इसे, सोचो तो सही, समझो तो सही;
ऐ शेख़ो-बरहमन अब रक्खो, मज़हब का रोना एक तरफ़ !
आलम से नहीं कुछ हो सकता, पत्थर की लकीर इसको समझो,
दुनिया का होना एक तरफ़, सरकार का होना एक तरफ़ !
क्या मज़रे-इबरत यह भी है, दुनिया के लिए, आलम के लिए
कातिल का हँसना एक तरफ़, "बिस्मिल" का रोना एक तरफ़ !

❖



अखिल भारतवर्षीय महिला-शिक्षा-कॉन्फ़रेन्स का प्रधाना तथा कार्य-कारिणी समिति का ग्रुप

कुछ नवीन और उत्तमोत्तम पुस्तकें

दुबे जी की चिट्ठियाँ

शिक्षा और विनोद का यह अपूर्व भण्डार है। इसमें सामाजिक कुरीतियों तथा अनेक महत्वपूर्ण विषयों का विवेचन बहुत ही सुन्दरतापूर्वक किया गया है। हिन्दी-संसार में अपने ढङ्ग की यह अनोखी पुस्तक है। भाषा अत्यन्त सरल है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज है। मूल्य केवल २); ले० 'दुबे जी'।

मणिमाला

अत्यन्त मनोरञ्जक, शिक्षा और विनोद से भरी हुई कहानियों का अनोखा संग्रह। प्रत्येक कहानी में सामाजिक कुरीतियों का भण्डाफोड़ बहुत अच्छे ढङ्ग से किया गया है। उन कुरीतियों से उत्पन्न होने वाले भयङ्कर अनर्थों की भी भरपूर चर्चा की गई है। एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य केवल २); ले० 'कौशिक' जी।

महात्मा ईसा

ईसाई-धर्म के प्रवर्तक, महान सांसारिक आपत्तियों तथा यातनाओं से आजीवन खेलने वाले, इस महान पुरुष का जीवन-चरित्र सांसारिक मनुष्य के लिए अमृत के तुल्य है। इसके केवल एक बार के पढ़ने से आपकी आत्मा में महान परिवर्तन हो जायगा—एक दिव्य ज्योति उत्पन्न हो जायगी। सचित्र और सजिल्द मूल्य २॥)

बिवाह और प्रेम

समाज की जिन अनुचित और अरलील धारणाओं के कारण स्त्री और पुरुष का दाम्पत्य जीवन दुखी और असन्तोषपूर्ण बन जाता है एवं स्मरणातीत काल से फैली हुई जिन मानसिक भावनाओं के द्वारा उनका सुख-स्वाच्छष्टपूर्ण जीवन घृणा, अवहेलना, द्वेष और कलह का रूप धारण कर लेता है, इस पुस्तक में स्वतन्त्रतापूर्वक उसकी आलोचना की गई है और बताया गया है कि किस प्रकार समाज का जीवन सुख-सन्तोष का जीवन बन सकता है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥)

मूर्खराज

यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफ़ूर हो जायगी। दुनिया के झूठों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, मुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी, हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। मूर्खराज का जीवन आदि से अन्त तक विचित्रता से भरा हुआ है। भाषा अत्यन्त सरल तथा सुहावनेदार है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २)

चित्तौड़ की चित्त

पुस्तक का 'चित्तौड़' शब्द ही उसकी विशेषता बतला रहा है। क्या आप इस पवित्र वीर-भूमि की माताओं का महान साहस, उनका वीरत्व और आत्म-बल भूल गए? सतीत्व-रक्षा के लिए उनका जलती हुई चित्त में कूद पड़ना आपने एकदम बिसर दिया? आदर रखिए! इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपके बदन का खून उबल उठेगा! पुस्तक पद्यमय है, उसका एक-एक शब्द साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति से ओत-प्रोत है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥); स्थायी ग्राहकों से १=) ले० 'वर्मा' एम० ए०।

मनोरञ्जक कहानियाँ

इस पुस्तक में १० छोटी-छोटी, शिक्षाप्रद, रोचक और सुन्दर हवाई कहानियाँ संग्रह की गई हैं। कहानियों को पढ़ते ही आप आनन्द से मस्त हो जायेंगे और सारी चिन्ताएँ दूर हो जायेंगी। बालक-बालिकाओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। केवल एक कहानी उनको सुनाइए—झुशी के मारे उड़लने लगेंगे, और पुस्तक को पढ़े बिना कदापि न मानेंगे। मनोरञ्जन के साथ ही प्रत्येक कहानियों में शिक्षा की भी सामग्री है। शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी कॉपियाँ और शेष हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ

इस पुस्तक में पूर्वीय और पारश्चात्य, हिन्दू और मुसलमान, स्त्री-पुरुष—सभी के आदर्श छोटी-छोटी कहानियों द्वारा उपस्थित किए गए हैं। केवल एक बार के पढ़ने से बालक-बालिकाओं के हृदय में दयालुता, परोपकारिता, मित्रता, सच्चाई और पवित्रता आदि सद्गुणों के अङ्कुर उत्पन्न हो जायेंगे और भविष्य में उनका जीवन उसी प्रकार महान और उज्ज्वल बनेगा। मनोरञ्जन और शिक्षा की यह अपूर्व सामग्री है। भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा सुहावनेदार है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥); ले० ज़हूरबख्श।

शान्ता

इस पुस्तक में देश-भक्ति और समाज-सेवा का सजीव वर्णन किया गया है। देश की वर्तमान अवस्था में हमें कौन-कौन सामाजिक सुधार करने की परमावश्यकता है; और वे सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं, आदि आवश्यक एवं उपयोगी विषयों का लेखक ने बड़ी योग्यता के साथ दिग्दर्शन कराया है। शान्ता और गङ्गाराम का शुद्ध और आदर्श-प्रेम देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। साथ ही साथ हिन्दू-समाज के अत्याचार और षड्यन्त्र से शान्ता का उद्धार देख कर उसके साहस, धैर्य और स्वार्थ-त्याग की प्रशंसा करते ही बनती है। मूल्य केवल लागत-मात्र १॥); स्थायी ग्राहकों के लिए १=)

लालकुम्हड़

जगत्प्रसिद्ध नाटककार 'मोर्लियर' की सर्वोत्कृष्ट रचना का यह हिन्दी अनुवाद है। नाटक आदि से अन्त तक हास्यरस से भरा हुआ है। शिक्षा और विनोद की अपूर्व सामग्री है। मनोरञ्जन के साथ ही सामाजिक कुरीतियों का भी दिग्दर्शन कराया गया है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य २); ले० जी० पी० श्रीवास्तव

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायकी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिक्-चस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा इरश इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा सुहावनेदार है। शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

आयरलैण्ड के ग़दर की कहानियाँ

छोटे-बड़े सभी के मुँह से आज यह सुनने में आ रहा है कि भारतवर्ष आयरलैण्ड बनता जा रहा है। उस आयरलैण्ड ने अङ्गरेजों की गुलामी से किस तरह छुटकारा पाया और वहाँ के शिनफ्रीन दल ने किस कौशल से लाखों अङ्गरेजी सेना के दाँत खट्टे किए, इसका रोमाञ्चकारी वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। इसमें आपको इतिहास और उपन्यास दोनों का मज़ा मिलेगा। मूल्य केवल दस आने। ले० सत्यभक्त।

मेहरुन्निखा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा मेहरुन्निखा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-विशोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

गुदगुदी

हास्य तथा मनोरञ्जन भी स्वास्थ्य के लिए एक अनोखी औषधि है। किन्तु इसका उपाय क्या है? उपाय केवल यही कि इस पुस्तक की एक प्रति मंगा लीजिए और काम की थकावट तथा भोजन के बाद पढ़िए। इसका केवल एक ही चुटकुला एक घण्टे तक आपको हँसाएगा। ले० जी० पी० श्रीवास्तव; मूल्य १॥)

बड़ा दिन

[श्री० बनारसीदास जी कौशिक]
(उनका)

स्व तन्त्रता ! साम्राज्य !! वैभव !!!

तब फिर क्यों न आज आमोद-प्रमोद अपने पूर्ण वेग से टेम्स के तट पर तायडव-नृत्य करने लगे। और यह नृत्य ? स्वर्ग का सा ! बहिर्लोक का सा ! नहीं, उससे भी कई गुना मनोहर और सुन्दर ! यह तो इन धर्माख्यानों (Myths) के काल्पनिक रचयिताओं की बुद्ध कल्पनाओं में महाप्रलय तक न आता।

टेम्स ! संसार के सब से समृद्धिशाही नगर की टेम्स ! अपने शौशव काल से ही तूने ऐसे कितने ही 'बड़े दिन' देखे हैं और उनमें से प्रत्येक ही तेरे हुक्म की विस्तृतता के साथ-साथ 'बड़ा' ही होता चला गया है। यहाँ तक कि आज तो उसके बड़प्पन का अनुभव करते हुए कल्पनातन्त्र भी बुरी तरह काँपने लगते हैं !

पार्लामेण्ट की वे गगन-चुम्बी विशाल अट्टालिकाएँ, पूँजीपतियों के वे शानदार भवन और तेरे वचस्थल पर द्रुतगति से तैरते हुए नादिरशाही सरीखी, विदेशी लूट से भरे वे भीमकाय जख्यान पूर्व (East) की निःस्वार्थ आतिथ्य-स्वीकार तथा उसकी सादगी और भोलेपन पर जब एक व्यङ्ग्य-हास्य हँसते होंगे, तब टेम्स ! तू अवश्य ही इन कूटनीतिज्ञों और सच्चे (?) व्यवसायियों के 'बड़े पन' का पूर्ण आभास पाती होगी ! और श्याम वर्ण कोहरे में से विद्युत की छुनी हुई प्रखर किरणें जब गुलाबी गौराङ्ग युवतियों के अरुण, पीत, नील-मणियों को जगमगा, तुरकमें अनोखे प्रतिविम्ब डालती होंगी ; तथा तटस्थ शानदार होटलों, नृत्य-भवनों, थिएटरों और क्लबों का मादकतापूर्ण आह्लाद तेरे वचस्थल पर चयटों थिरकता रहता होगा, तब तू अवश्य ही जॉनबुल के आनन्द (Epicurianism) को विशेष मात्रा से परिचित होती होगी।

आज के दिन प्रत्येक वस्तु, भाव, योजना बड़ी ही बड़ी दिखाई पड़ती है—उस तल्लीन, प्रेमोन्मत्त, पकी हुई मिस (?) और बैचेरर (?) को चर्च में, स्ट्रीट में, घर में, मोटर में, नौका में, जहाँ कहीं भी अवसर मिले, Gift-exchange, Heart-exchange तथा..... exchange करते हुए देखिए ! रूप, लावण्य और प्रेम का बाज़ार कितना गर्म है ; और है कितनी 'बड़ी' सहन-यता, और सरसता उनकी कामनाओं और प्रणयकेलि में !!

'बड़ा दिन' आया और लाया उनके अमजीवियों को अधिक सुखमय, सभ्य और शिचित बनाने वाली यथोचित मजदूरी ! फिर क्यों न वे भी अपनी प्रिय पत्नियों तथा छोटे-छोटे भोले शिशुओं के साथ इस विश्व-व्यापी आनन्द में लवलीन हो जायें। और विशेषकर इस 'बड़े दिन' के ऊपर तो वे असाधारण रीति से प्रसन्न हैं—वे ही तो White Hall में बैठे-बैठे ब्रिटिश साम्राज्य की नकेल घुमा रहे हैं। कौन उन्हें गिरी दृष्टि से देखने का साहस करेगा ? वे हैं "अपने भाग्य को आप बनाने वाले" सनातनी स्वामियों की ढोंगी और बेहूदा सृष्टि के "अस्पृश्य, शूद्र, ग्लेच्छ....." भारत-भाग्य-विनायक मजदूर बादशाह !"

और उनके ग्राम ! वे प्रकृति के अङ्ग में पड़े हुए कितना स्वाभाविक जीवन व्यतीत कर रहे हैं ! न रोग और न दरिद्रता। कितने स्वच्छ और कितने शान्त ! सबका रहन-सहन सामान्य, जीविका सामान्य, पर

निरिचत और सुखम। पुरुष सुखी, स्त्रियाँ सुखी, बच्चे सुखी ! फिर क्यों न वे भी आज जङ्गल में मजल मनाएँ और समयानुसार गाँव और दीनों को प्यार करने वाले महारमा ईसा की पुण्य-स्मृति में बजाए गए चर्च के चयटे के घहराते हुए शब्द में, अपनी सामान्य स्थिति को विलीन कर, क्यों न सब के सब आज के इस "बड़े उछाह" में मग्न हो जाएँ !

ऑक्सफ़र्ड और केम्ब्रिज के उस तत्त्ववेत्ता शिष्यक की प्रसन्नता में कितनी उत्सुकता है ! उसे अपने आविष्कार, अपने सिद्धान्त तथा अपनी वैज्ञानिक गवेषणाओं पर नाज़ है। उसने इस वर्ष के बीच में दिन-रात परिश्रम कर ऐसी नई बातों को, ऐसे नए तथ्यों को, ऐसे नए तन्त्रों को खोज निकाला है, जो बिल्कुल मौलिक (Original) हैं। इसके उपलक्ष में आज उसे विद्यालय से समस्त विद्वानों और शिष्यों की करतल-ध्वनि के मध्य मान और उपाधि दी गई है। प्रकृति के गुप्त रहस्यों के पता लगाने वाले का कितना उचित सत्कार !

ईटन (Eton) के मैदान पर बड़े उल्लास के साथ खेलते हुए उन विश्वविद्यालयों के नवयुवक और नव-युवतियों को देखो ! बलिष्ठ शरीर, प्रबल राष्ट्र की आत्मा के कितने दैदीप्यमान मन्दिर हैं। स्त्री और पुरुष दोनों ही स्वच्छन्दतापूर्वक विचार रहे हैं। चेहरों पर तमतमाहट है, हृदय में उत्साह है, और है उनके विचारों और उद्देश्यों में नवीनता और सजीवता ! आकाश-भेदी वेधशाला में खड़े हुए, किसी 'बड़े दिन' पर, मजल ग्रह की कौतूहलमय यात्रा की कामना, संसार के अगम्य वन, पर्वतों, नदियों, भूगर्भ तथा हिममय प्रदेशों के ग्लेशियर्स को अपने उद्दण्ड साहस से मर्दन कर, विश्व भर में यूनियन जैक (Union Jack) को फहरा कर, ब्रिटिश साम्राज्य का आतङ्क जमाने की ह्छा आ-आकर उनको कितना चपल बना रही है। फ़ादर विलियम (Father William) और ओल्ड ग्रैनीज़ (Old Grannies) बाबा आदम के वे अन्ध-विश्वास, जीर्ण-शीर्ण सिद्धान्त किसी पाताल के नरक में धू-धू जल रहे हैं। और नया समाज, नया विज्ञान, नया प्रेम, नई भावनाएँ उसकी जगह ले रही हैं। युवावस्था और स्वतन्त्र आन्दोलन के सामने क्या करना असम्भव है ?

(अपना)

परतन्त्रता ! दासता ! दरिद्रता ! लाठी ! जेल ! और कोड़े !

तब क्या यह बड़ा कहलाए जाने वाला दिन एक भौगोलिक सत्य (Geographical Truth) के अतिरिक्त अपने लिए कुछ और विशेषता रखता है ? हाँ, केवल एक और !! चिरकाल के बड़े-बड़े रक्त-स्त्रावित ज़र्रों पर नमक छिड़क कर इसका इस क्रूरता से ठंडा मार कर चला जाना !!

इस दिन वे यों हँसते होंगे, यों गाते होंगे और हम यों रो रहे हैं, यों बिखल रहे हैं, और भविष्य में भी बहुत दिनों तक ऐसे ही रहने की सम्भावना है—बस यही सोच-सोच कर हमारी मूक वेदनाएँ हमें विशेष-कर इस दिन अधिक विषादयुक्त बना डालती हैं !

संसार के आदि-सभ्य-प्राचार्यों के विश्व-व्यापी प्रेम,

उदारता, और बन्धुत्व के विचारों की सहायक, स्वयं महात्मा ईसा के बौद्ध-गुरुओं के पवित्र आश्रमों को दिव्य बनाने वाली मात भागीरथी आज दूटे हृदय से बह रही है, ब्रिटिश साम्राज्य के स्पञ्ज ने उसके असंख्य रत्नों को खींच टेम्स में भर दिया है—उसके किनारे के लहलहाते 'शस्य-श्यामलाम्' 'Trusteeship' की भारी शुल्क में टेम्स पर के बने पूँजीपतियों के विशाल कार्यालयों में न जाने कब से जा रहे हैं। तब फिर जब वह धन, यौवन, चपलता, निरशङ्कता और मस्तानेपन पर गर्व करे और गङ्गा अपने तटस्थ उजड़े खेतों, पुराने ढङ्ग के फूस के कोपड़ों, वल्लविहीन ग्रामवासियों की दारुण दरिद्रता को देख, तीव्र वेदना का अनुभव कर, 'दुःखी भारत पर' आँसू बहाने लगे, तब आश्चर्य ही क्या है ?

शिशिर के कटकटाते शीत में दिन भर कड़ा परिश्रम कर गोधूली के समय धूल-धूसरित उन गाँव की पवित्र स्त्रियों की, Heorthrug पर बहुमूल्य सोफ़ों पर बैठी, तथा मनसिज (cupid) की पुण्य (?) स्मृति में हिस्की पी-पीकर पियानों पर प्रेम-गीत गा आनन्द मनाने वाली उन सुखी बेटियों से समानता कीजिए। अकस्मात् किसी भारत के साधारण मजदूर के अतिथि बन कर उसकी दारुण दरिद्रता, दीनता, अज्ञानता और भूख में से उन 'Vagabond-wages' के ठाठ देखिए ! युवकों के राष्ट्र-प्रेम के ज्वार की प्रचण्ड लहरों को बोटल में बन्द करने की च्यर्थ और मूढ़ योजना करने वाले इन भीरु विद्यालयों का उन.....!

और किस-किस की तुलना करें—भारत के युवक हों या युवती, मजदूर हों या तत्त्ववेत्ता, विद्यार्थी हों या मास्टर, सभी कोई यदि अपनी स्थिति की अपने उन प्रतिपक्षियों से समानता करेंगे, तो ज्ञात हो जायगा कि यहाँ तो "सुख सरसों, शोक सुमेरु।"

तब फिर इस व्यर्थ के अरण्य-चीत्कार से लाभ क्या ? 'आज के महात्मा' के नाम पर इस विषमता का कारण ढूँढ़िए। पर इसके लिए 'काशी' के किसी ज्योतिषी या शास्त्री बाबा पर न जाइए। क्योंकि वहाँ भाग्यवाद या दैववाद का चक्कर निहत्साह, भीरु और निडर बनाए बिना न छोड़ेगा। इन तमाम समस्याओं के कारण तथा क्रिया बताएँगे कर्मवादी महर्षि मार्क्स और महात्मा लेनिन के 'लाल' ग्रन्थ।

आओ, 'दुःखी भारत' के एकमात्र आश्रय—युवकों और युवतियों ! अपनी गड़बड़ दशा का, अपनी हीना-स्वथा का, अपने घोर अज्ञान की तनिक भी चिन्ता न करते हुए, तमाम भारत की दुःखी आत्मा को सुखी बनाने का भार अपने ऊपर लो, और अपना भार न्याय, धर्म, साहस और स्वतन्त्रता के प्रतिपक्षी सर्व-शक्तिमान परमात्मा पर छोड़, इस घोर विषमता का नाश करने के लिए आगे आओ। तुम्हारे अतिरिक्त और किसी में इतना साहस नहीं है, जो ऐसा कर सके.....

क्राइस्ट आए थे निर्धनों की निर्धनता मिटाने, अम-जीवियों को सुखी बनाने, अज्ञानतम को विद्या-भास्कर से छिन्न-भिन्न करने और विश्व-व्यापी बन्धुत्व, श्याम और सेवा का पाठ पढ़ाने। ऐसा न होने पर क्रान्ति करके क्रॉस (Cross) पर लटकने ! तुम भी आओ ! जिन्हें भारत के युवक कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और 'माता' के पचास सहस्र वीर, साहसी, श्यामी और अहिंसक सुपुत्रों की दारुण यन्त्रणा जेल की कठोर दीवारों को पार कर जिनके हृदयों में भीषण उथल-पुथल मचा रही है; वह इन अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी महारमा की पुण्य-स्मृति में, उस ढोंगी पुजारी के लाख मना करते रहने पर भी, मन्दिर के चयटे को ज़ोर से बजा गाने लगें :—

"बहने दो, रोक-टोक से कभी नहीं रुकती है। यौवन-मद की बाढ़ नदी की, किसे देख झुकती है।"

*

*

*



छप गई !

प्रकाशित हो गई !!

व्यङ्ग-चित्रावली

यह चित्रावली भारतीय समाज में प्रचलित वर्तमान कुरीतियों का जनाजा है। इसके प्रत्येक चित्र दिल पर चोट करने वाले हैं। चित्रों को देखते ही पश्चात्ताप एवं वेदना से हृदय तड़पने लगेगा; मनुष्यता का याद आने लगेगी; परम्परा से चली आई रूढ़ियों, पाखण्डों और अन्ध-विश्वासों को देख कर हृदय में क्रान्ति के विचार प्रबल हो उठेंगे; घण्टों तक विचार-सागर में आप डूब जायेंगे। पछता-पछता कर आप सामाजिक सुधार करने की वाध्य होंगे !

प्रत्येक चित्रों के नीचे बहुत ही सुन्दर एवं मनोहर पद्यमय पंक्तियों में उनका भाव तथा परिचय अङ्कित किया गया है। इसके प्रकाशित होते ही समाज में हलचल मच गई। प्रशंसा-पत्रों एवं सम्मतियों का ढेर लग गया। अधिक प्रशंसा न कर हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि ऐसी चित्रावली आज तक कहीं से प्रकाशित नहीं हुई। शीघ्रता कीजिए, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

इकरङ्गे, दुरङ्गे, और तिरङ्गे चित्रों की संख्या लगभग २०० है। छपाई-सकाई दर्शनीय, फिर भी मूल्य लागत मात्र केवल ४); स्थायी तथा 'चाँद' के ग्राहकों से ३); अब अधिक सोच-विचार न करके आज ही आँख मीच कर ऑर्डर दे डालिए !!

दैवी सम्पद्

[लेखक—श्री० रामगोपाल जी मोहता, बीकानेर]

यदि आप सचमुच ही स्वाधीनता के उपासक हैं,
यदि आप अपने आपको, अपनी जाति को तथा अपने देश को पराधीनता के बन्धनों से मुक्त कर स्वतन्त्र बनाना चाहते हैं तो "दैवी-सम्पद्" को अपनाइए।

यदि आप अपने आपको, अपनी जाति को तथा अपने देश को सुख-समृद्धि-सम्पन्न करना चाहते हैं तो "दैवी सम्पद्" का अध्ययन करिए।

यदि धार्मिक विचारों के विषय में आपका मन संशयात्मक हो तो "दैवी सम्पद्" को विचारपूर्वक पढ़िए। आपका अवश्य ही समाधान होगा।

यदि आपके जीवन के किसी भी व्यवहार के सम्बन्ध में कोई उलझी हुई ग्रन्थि हो तो उसको सुलझाने के लिए "दैवी सम्पद्" का सहारा लीजिए ! आप उसे अवश्य ही सुलझा सकेंगे।

अपने विषय की यह अद्वितीय पुस्तक है। लगभग ३०० पृष्ठों की फेदरबेट कागज पर छपी हुई सजिलद पुस्तक का मूल्य केवल २।।) रु०।

सार्वजनिक संस्थाओं को, केवल डाक-व्यय के १-) (पाँच आने) ग्रन्थकर्ता के पास भेजने पर यह पुस्तक मुफ्त मिलेगी।

ग्रन्थकर्ता का पता—श्री० सेठ रामगोपाल जी मोहता, बीकानेर (राजपूताना)

प्रकाशक का पता—व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद



हमारे सहयोगी

तिनके का सहारा

गो

लमेज़ कॉम्प्रेन्स डूब ही चुकी थी, कि मेकडॉनल्ड साहब ने एक तिनका उसमें फेंक दिया; और अब भारतीय प्रतिनिधि उसी के सहारे उतरा रहे हैं। यह तिनका और कुछ नहीं, हिन्दू-मुस्लिम झगड़े को तै करने की एक आशा मात्र है; फन्दा काम कर गया है। मि० फ्रज़लुल्लाह ने बङ्गाल के मुसलमानों के पास एक सन्देश भेजा है, जिसमें उन्होंने कहा है कि मुसलमानों को संयुक्त चुनाव को इस शर्त पर स्वीकार करना चाहिए, कि बङ्गाल लेजिस्लेटिव कौन्सिल में उनके लिए प्रतिशत २१ जगहें सुरक्षित रहें! ऐसी पागलपन भरी बातों का प्रभाव भी पागलपन ही के रूप में पड़ा है। हम देखते हैं कि जो मुस्लिम नेता गोलमेज़ कॉम्प्रेन्स का बहिष्कार करने के लिए अपने देशवासियों को सलाह दे रहे थे, वे भी अब इसके महत्व का अनुभव करने लगे हैं, और बड़े जोरों से अपने देशवासियों को सलाह दे रहे हैं कि, कम से कम इन साम्प्रदायिक झगड़ों का निवटारा तो इसके द्वारा करा ही लेना चाहिए! उनका इस प्रकार रङ्ग बदलना रहस्यपूर्ण है!

संयुक्त चुनाव के लिए हिन्दुओं से बहुत अधिक त्याग करने के लिए कहा जा रहा है। हमारे कुछ मुस्लिम मित्रों का विचार है, कि संयुक्त चुनाव का सम्बन्ध विशेषकर हिन्दुओं से है। राष्ट्रीयता जो केवल संयुक्त चुनाव से ही उन्नति कर सकती है—हिन्दुओं का भाव है! स्वराज्य से हिन्दू और मुस्लिम दोनों का सम्बन्ध है, किन्तु उसके लिए अपना बलिदान करना विशेषकर हिन्दुओं का काम है! हम बराबर ऐसे विचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाते रहे हैं, और फिर भी इसका विरोध करते हैं। हमारी सम्मति में, मुसलमानों का भी स्वराज्य और उसकी प्राप्ति के साधनों से उतना ही सम्बन्ध है, जितना कि हिन्दुओं का। इसलिए संयुक्त चुनाव से मुसलमानों को भी उतना ही लाभ है, जितना कि हिन्दुओं को। इस कारण स्वराज्य-प्राप्ति में त्याग का अपना भाग एक दूसरे के मध्ये नहीं मढ़ना चाहिए। कहा जाता है, कि अल्पसंख्यक समुदाय की रक्षा के लिए तब तक प्रबन्ध होना चाहिए, जब तक कि साधारण नागरिकता उन्नत रूप धारण न कर ले। किन्तु यह दुर्भाग्य की बात है कि कुछ मुसलमान नेता केवल उन्हीं प्रान्तों में जहाँ मुसलमानों की संख्या कम है, विशेष प्रतिनिधित्व नहीं चाहते, बल्कि यह माँग वे उन स्थानों के लिए भी पेश करते हैं, जहाँ वे अधिक संख्या में हैं। उन्हीं के कथनानुसार बङ्गाल में उनकी संख्या अधिक है। यदि ऐसी बात है, तो यहाँ की लेजिस्लेटिव कौन्सिल में उनके लिए विशेष स्थान सुरक्षित क्यों रखे जायें? बङ्गाल के लोकल बोर्डों में उनके लिए उससे कहीं ज्यादा स्थान प्राप्त हैं, जितना कि उन्हें अपनी संख्या के परिमाण से मिलना चाहिए। यह कहा जा सकता है कि, लोकल बोर्डों के प्रतिनिधित्व के लिए योग्यता की सीमा बहुत छोटी है। अगर ऐसी बात है, तो उचित यह होगा कि लेजिस्लेटिव कौन्सिल के लिए भी योग्यता की सीमा घटा दी जाय।

इस सम्बन्ध में हिन्दू मुसलमानों को तहे-दिल से सहायता पहुँचावेंगे। यह बात सच है, कि नेहरू रिपोर्ट में, युवावस्था प्राप्त सभी मनुष्यों को चुनाव का अधिकार दिए जाने की सिफारिश की गई है। यदि ऐसा किया जाता, तो भारत की गति प्रजातन्त्र की ओर फिर जाती। किन्तु हमारे कुछ मुस्लिम नेता इस ओर नहीं जाना चाहते। वे केवल एक साम्प्रदायिक समूह का राज्य मात्र चाहते हैं।

गोलमेज़ कॉम्प्रेन्स में गड़बड़ मची हुई है। जिन बातों पर पहले विचार करना चाहिए था, वे सब से पीछे के लिए रख छोड़ी गई हैं! भारतीय प्रतिनिधिमण्डल दल की सरकार से इस बात का वचन चाहते थे, कि यदि कॉम्प्रेन्स में हिन्दू-मुसलमानों का समझौता हो जाय, तो सरकार औपनिवेशिक स्वराज्य की प्राप्ति में उन्हें सहायता देगी। किन्तु मि० रेमजे मैकडॉनल्ड ऐसी प्रतिज्ञा करने के लिए राजी नहीं हुए। इसके बाद ही चुनाव का प्रश्न उठना चाहिए था, किन्तु अब तक उसका जिक्र भी नहीं किया गया है। मि० मैकडॉनल्ड कहते हैं—“पहले अपना मतविदा तैयार कर लीजिए, और तब हम उस पर विचार करेंगे।” भारतीय प्रतिनिधि अब चाहते हैं कि, शीघ्रतापूर्वक कुछ करके, मि० मैकडॉनल्ड के भरोसे बैठ जायें। मि० जे० एन० बलु और सर पी० सी० मित्र तो शीघ्र सब काम कर डालने के लिए इतने चिन्तित थे कि बङ्गाल के साम्प्रदायिक झगड़े को मिटाने के लिए चट मि० आगा ख़ाँ तक को पञ्च बनाना स्वीकृत कर लिया, मानो बङ्गाल भारत से बाहर है, और आगा ख़ाँ भी एक बड़े निष्पक्ष पुरुष हैं! इसमें सन्देह नहीं, कि भारतीय प्रतिनिधियों के लिए, हिन्दू-मुस्लिम समस्या का अच्छा जाल बिछाया गया है। इन्हें औपनिवेशिक स्वराज्य या कुछ और मिले चाहे नहीं, किन्तु ये साम्प्रदायिक उलझनों को लेकर तो ज़रूर ही लौटेंगे!!

यदि गोलमेज़ कॉम्प्रेन्स के भारतीय सदस्यों को ज़रा भी अक्ल होती, तो वे इस तरह हिन्दू-मुस्लिम समस्या को वहाँ न छोड़ते। उन्हें पहले औपनिवेशिक स्वराज्य के लिए वचन ले लेना चाहिए था; फिर चुनाव का प्रश्न उपस्थित किया जाता। किन्तु वे केवल काठ के पुतले बने हुए हैं।

—“अमृत बाज़ार पत्रिका” (अङ्गरेज़ी)

* * *

मि० मेकडॉनल्ड की सफ़ाई

जा

न पड़ता है, कि मि० चर्चिल की ब्रिटिश राजनीति सम्बन्धी साफ़ बातों से और उनके इस कथन से, कि आधुनिक भारतीय आन्दोलन को कुचल डालना चाहिए, मि० रेमजे मैकडॉनल्ड कुछ असमृष्ट से हो गए हैं। उनका कहना है कि मि० चर्चिल का व्याख्यान द्वेषपूर्ण है। यदि मि० मैकडॉनल्ड की सरकार का भयङ्करोद्देश कर देना एक जुरी बात है, तब मि० चर्चिल का व्याख्यान अविचेकपूर्ण कहा जा सकता है।

किन्तु क्या मि० मैकडॉनल्ड अपनी छाती पर हाथ रख कर यह कह सकते हैं, कि भारत के साथ उनकी सरकार का व्यवहार दमन-नीतिपूर्ण नहीं रहा है? आपका ज़्यादा है कि मि० चर्चिल ने अपने व्याख्यान में पुराने राज्याधिकारियों के अधीनस्थ देशों के प्रति व्यवहार का दिग्दर्शन मात्र कराया है। किन्तु लाखों भारतवासियों को उनकी देशभक्ति के पुरस्कार-स्वरूप जेलों में डाला जाना, आर्बिन्नेन्सों का पास किया जाना, छाठियों का प्रहार भीड़ों पर किया जाना, जुलूमों तथा सार्वजनिक सभाओं का गैर-कानूनी ठहराया जाना, समाचार-पत्रों पर प्रेस-आर्बिन्नेन्स का बोकू लाद दिया जाना; आदि का क्या अर्थ है? क्या हम इतना देखते हुए भी समझें कि मि० चर्चिल ने केवल पुरानी बातों को उगल डाला था? मि० मैकडॉनल्ड ने इस बात पर बड़ा जोर दिया है, कि भारत में राजनैतिक विकास का एक मात्र कारण पाश्चात्य साहित्य, और अङ्गरेज़ों के राजनैतिक विचारों का प्रभाव है! किन्तु भारत की बदली हुई दशा के अनुरूप शासन की क्या व्यवस्था उन्होंने की है?

मि० मैकडॉनल्ड शायद गोलमेज़ कॉम्प्रेन्स की ओर अँगुली उठा कर कहेंगे कि, बर्क के व्याख्यान, मेकाले के इतिहास और मॉर्ले के राजनीति सम्बन्धी लेखों ने भारत में जो जागृति फैला दी है, उसके योग्य शासन-विधान की व्यवस्था करने के लिए ही तो उदार दल की सरकार ने गोलमेज़ कॉम्प्रेन्स से भूमिका आरम्भ की है! किन्तु मैकडॉनल्ड साहब को यह ज्ञात नहीं कि भारतीय दशा की वास्तविकता से सामना पड़ने पर मॉर्ले महाशय को भी मुँह की खानी पड़ी थी? क्या मि० मॉर्ले उन सुधारों के विधायकों में नहीं थे, जिनके द्वारा सम्प्रदाय-प्रतिनिधित्व की व्यवस्था की गई थी? क्या कॉम्प्रेन्स-सभा में उन्होंने यह नहीं कहा था, कि हिन्दू और मुसलमान का भेद प्राकृतिक है? उन्होंने कहा था कि “उनके जीवन में उनके इतिहास में, उनके सामाजिक व्यवहार में, तथा उनके धार्मिक विचारों में गहरा भेद है।” तब इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है, यदि उन साम्प्रदायिक भेदों के अन्वेषण से प्रभावित होकर, गोलमेज़ कॉम्प्रेन्स के कुछ सदस्यगण साम्प्रदायिकता की ओर अधिक झुकें, और सच्चे राष्ट्रीय प्रस्तावों को ठुकरा दें? यदि कुछ मुसलमानों ने संयुक्त निर्वाचन का विरोध किया है, तो इसमें गज्जनावियों तथा उनकी तरह सोचने वालों का उतना दोष नहीं है, जितना कि उनका, जो यह सोचते हैं कि “भारत में दो विरोधी धर्मों का होना विदेशी आधिपत्य के लिए सुविधाजनक है!”

जान पड़ता है कि मि० मैकडॉनल्ड को यह डर है कि कॉङ्ग्रेस वाले तथा वे, जो गोलमेज़ कॉम्प्रेन्स की असफलता चाहते हैं, कहीं मि० चर्चिल की बातों की ओट में फिर ब्रिटिश राज के विषय में गलतफ़हमी फैलाने की कोशिश न करने लगें! प्रधान-मन्त्री शायद यह भूल रहे हैं, कि मि० चर्चिल के व्याख्यान को प्रभाव-शाली बनाने वाली केवल उसके भीतर की सच्ची बातें हैं। यदि मि० मैकडॉनल्ड यह सिद्ध करना चाहते हैं, कि मि० चर्चिल के विचार शक्ति हैं, और उन्होंने अपने व्याख्यान में इङ्गलैण्ड और भारत का केवल प्राचीन चित्र खींचा है, तो वे केवल कोरे शब्दों से, चाहे कितने ही जोशीले और कर्ण-मधुर क्यों न हों—ऐसा नहीं कर सकते! भारत की शासन-नीति के परिवर्तन से ही दोनों देशों के सम्बन्ध में परिवर्तन हो सकता है।

—“लिबर्टी” (अङ्गरेज़ी)

* * *

निःशस्त्रीकरण आन्दोलन का उपहास

[डॉक्टर "पोलखोलानन्द भट्टाचार्य" एम० ए०, पी० एच०डी०]

गत महायुद्ध के अन्त होने पर उसमें भाग लेने वाले पचास राष्ट्रों ने यह वचन दिया था, कि आज से अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को सुलझाने के लिए हम सशस्त्र युद्ध का सहारा न लेंगे। पर आज इन्हीं राष्ट्रों की क्या हालत है? प्रत्येक राष्ट्र अपनी शक्ति को औरों से अधिक बलिष्ठ बनाने का प्रयत्न कर रहा है। प्रत्येक राष्ट्र का फौजी खर्च बढ़ता चला जा रहा है। क्या ये सब निःशस्त्रीकरण के लक्षण हैं? यदि इन देशों को

पर इनसे यूरोप की दशा में कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ है। सब यही डरते हैं, कि यदि हमने निःशस्त्रीकरण का कार्य आरम्भ कर दिया, तो दूसरे देश हमारी सत्ता तथा उपनिवेशों पर कब्जा जमा लेवेंगे। इस आपस के अविश्वास को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि कोई एक देश आदर्श बनने को तैयार हो। वह अपने देश के फौजी खर्च को इतना कम कर दे, कि वह यह कह सके, कि हम अपने वचन के पकड़े हैं, हमने निःशस्त्रीकरण को कार्यरूप दे दिया है! उसे चाहिए कि वह अपने देश में केवल उतनी ही सेना तथा जज़ी जहाज़ों रखे, जितनी कि उसे आन्तरिक उपद्रवों को दवाने के लिए आवश्यक हैं। इङ्ग्लैण्ड के लिए यह बहुत अच्छा अवसर है। वहाँ मज़दूर-दल का शासन है, जो कि निःशस्त्रीकरण का पक्षपाती है। उसे चाहिए कि वह इस समय सब राष्ट्रों का आदर्श बने। फौजी खर्च को उद्योग-धन्यों में लगा कर देश की उन्नति करे। उसे चाहिए कि वह युद्ध-कार्यों में लगे हुए असंख्य सैनिकों को व्यापार तथा उद्योगों में स्थान दे और वम, गोला तथा बारूद बनाने वाले कारखानों में खाने-पीने की तथा अन्य उपयोगी वस्तुएँ बना कर राष्ट्र को धनाढ्य तथा सुखी बनावे। इस सब के लिए यह आवश्यक है, वह निम्नलिखित कार्यक्रम का अनुकरण करे :—

- १—निःशस्त्रीकरण को कार्य रूप दे।
- २—फौज में काम करने वाले मनुष्यों को उद्योग-धन्यों में लगावे।
- ३—वम, गोला इत्यादि फौजी सामान बनाना और बेचना बन्द कर दे।
- ४—अपने अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को सुलझाने के लिए लीग ऑफ नेशन्स का सहारा ले।

यदि इस कार्यक्रम का अनुसरण न किया गया, तो अब दूसरे महायुद्ध में देर नहीं है। सब देश बड़ी संख्या में सेना रखे हुए हैं, वे मुक्त में पल रही हैं। फौजी हथियार तथा जहाज़ों की भी संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। संसार के बलशाली देशों में आपसी प्रतिस्पर्धा तथा घृणा भी आवश्यकता से अधिक मात्रा में उपस्थित है। फिर युद्ध में क्या देर हो सकती है? संसार की शान्ति-रक्षा के लिए इङ्ग्लैण्ड को चाहिए कि वह इस शुभ अवसर को न छोड़े व और निःशस्त्रीकरण के कार्य में अग्रगण्य बने।

* * *

अग्रवाल भाई पढ़ें

एक अच्छे घराने की गुणवती कन्या के लिए, जिसकी आयु १४ से ऊपर है गोत्र गर्ग है वर की शीघ्र इरकार है। जो तन्दुरुस्त सदाचारी है सयतदार व सुशिक्षित हो उम्र १८ से २४ साल के भीतर हो विशेष बातें पत्र व्यवहार से तै करे।

पता :—अग्रवाल समिति,

D. बलदेव बिल्डिङ, फ़ाँसी JHANSI.

कुछ अद्भुत बातें

क्या लम्बा होना अच्छा है ?

बहुत से लोग खूब लम्बे-चौड़े—दैत्याकार लोगों को प्रशंसा की निगाह से देखते हैं, और सम्भवतः उनको भविष्य में उत्पन्न होने वाली उन्नत मनुष्य-जाति का नमूना समझते हैं। पर यह बात बिल्कुल ग़लत है। दैत्याकार होना भी उसी तरह दुःख है, बीमारी का लक्षण है, जिस प्रकार कि बीनापन। शरीर-शास्त्र के ज्ञाताओं का कहना है कि दैत्याकार मनुष्य वास्तव में एक बालक के समान है, क्योंकि उसके शरीर की वृद्धि उस समय के बाद भी होती रहती है जब कि स्वाभाविक दशा में उसको रुक जाना चाहिए था। दैत्याकार मनुष्यों के शारीरिक अङ्ग यथा प्रमाण नहीं होते, उनके हाथ-पैर सदैव बहुत बड़े होते हैं और चेहरा प्रायः बेढङ्गा होता है। जिन डॉक्टरों ने दैत्याकार मनुष्यों की परीक्षा की है उनका कहना है कि उनको प्रायः पेशाब की बीमारी होती है और यक्ष्मा होने की भी पूरी सम्भावना रहती है। उनको दूसरे रोग भी बहुत जल्दी हो सकते हैं। वे स्वाभाविक क्रद के आदमियों की अपेक्षा जीव श्रम करते हैं, वे कोई कड़े परिश्रम का काम नहीं कर सकते, उनके पुट्टे उनके आकार की अपेक्षा कमजोर होते हैं, उनके स्नायुओं में सहनशक्ति नहीं होती। दैत्याकार लोग सुन्दर भी कदाचित ही देखने में आते हैं।

विचित्र घड़ी

सिसली के प्रसिद्ध नगर सेसिना में एक विचित्र मीनार बनाई गई है। इस पर एक घड़ी लगाई है और मीनार के ऊपर काँसे का एक विचित्र सिंह खड़ा किया गया है। इस सिंह के अगले पंजे में झण्डा है। दोपहर दिन को इस सिंह की पूँछ खड़ी हो जाती है और झण्डा फहराने लगता है। सिंह के नीचे काँसे का ही मुर्गा बैठाया गया है जो सूर्य के निकलते ही बाँग देने लगता है। दोपहर के समय और शाम को भी यह मुर्गा बोला करता है।

मीनार पर जो घड़ी लगाई गई है उसके डायल मीनार के चारों ओर लगे हैं। प्रत्येक डायल का व्यास ८ फ़ुट है। इन पर चाँद की भिन्न-भिन्न कलाएँ दिखाई गई हैं और साथ ही स्थाई कैलेंडर भी लगाया गया है। सूर्य के चारों ओर ग्रह किस प्रकार चक्कर लगाया करते हैं, यह भी दिखाया गया है। प्लूटो नामक ग्रह का अभी हाल ही में आविष्कार हुआ है और इसमें उसे भी स्थान दिया गया है। घड़ी के नीचे एक मञ्च सा बना है जिस पर आशमियों की मूर्तियाँ लगी हैं। ये यन्त्र द्वारा चलाई जाती हैं और गिजों के आसन्नण का दृश्य दिखाती हैं। उपर्युक्त मुर्गों के ऊपर मेहराब पर घण्टे लगे हुए हैं जिनकी आवाज़ बहुत दूर तक पहुँचती है।

सब से अधिक बुद्धे कहाँ हैं ?

बलगेरिया में सौ वर्ष से अधिक आयु के लोग ३१३६ हैं। ग्रेट ब्रिटेन की जन-संख्या बलगेरिया से अधिक है, पर वहाँ सौ वर्ष से अधिक के व्यक्ति केवल १४५, स्पेन में ३५५ और आयरलैण्ड में ११६ हैं।

नेत्र रोग नाशक अर्क

यह आँख की सभी बीमारियों के लिए एक ही दवा है। आजमा कर देखिए, एक शीशी का मूल्य ॥) आठ आना डा० व्यय अलग। ४ शीशी लेने वाले के लिए खर्च मात्र। एक आने का टिकट भेजने पर "तैल निर्माण प्रकाश" नामक पुस्तक मुफ्त भेजी जाती है।

आर्य औषधालय, चेतगञ्ज, मिर्ज़ापुर (यू० पी०)



यूरोप के राष्ट्र निःशस्त्रीकरण (Disarmament) की नीति पर किस तरह अमल कर रहे हैं ?

अपने वचनों पर कुछ भी विश्वास होता, यदि उन्हें खण भर के लिए भी इस बात का खयाल होता, कि हम अपने आपसी झगड़ों का निवटारा बिना युद्ध के कर सकते हैं, तो आज यूरोप की दशा दूसरी ही होती। स्वयं इङ्ग्लैण्ड, जो संसार की शान्ति की रक्षा करने का दावा करता है और जहाँ आजकल मज़दूर-दल का राज्य है, इस साल अपने सैनिक बल पर १,००० लाख पौण्ड खर्च करने वाला है। मज़दूर-दल सदा निःशस्त्रीकरण की माला जपा करता था, पर आज जब वह देश का शासक बना बैठा है, सब अपने सारे सिद्धान्तों को उसने एक बार ही भुला दिया है !!

सब से बड़ी मुश्किल तो यह है, प्रत्येक राष्ट्र यह चाहता है कि सब राष्ट्र एक साथ ही निःशस्त्रीकरण का कार्य आरम्भ करें। कोई भी उसमें अग्रगण्य नहीं होना चाहता। इसीसे सारे प्रयत्न निष्फल हो रहे हैं। युद्ध के बाद निःशस्त्रीकरण-परिषद की कई बैठकें हुई हैं,

आदर्श चित्रावली

THE IDEAL PICTURE ALBUM

The Hon'ble Justice Sir B. J. Dalal of the Allahabad High Court, says :

Dear Mr Saigal,
Your album is a production of
great taste & beauty & has come to me
as a pleasant surprise as to what a
press in Allahabad can turn out. Moon
worshipped & visit to the Temple are
particularly charming pictures, life-like
& full of details. I congratulate you
on your remarkable enterprise & thank
you for a present which has ^{given} me
continue to give me a great deal of
pleasure.

Yours Sincerely B. J. Dalal.

The Hon'ble Mr. Justice Lal Gopal Mukerjee of
the Allahabad High Court :

... The Pictures are indeed very good and indicate, not only the high art of the painters, but also the consummate skill employed in printing them in several colours. I am sure the Album ADARSH CHITRAWALI will be very much appreciated by the public.

The Hon'ble Sir Grimwood Mears, Chief Justice
Allahabad High Court :

... I am very glad to see that it is so well spoken of in the Foreign Press.

The Indian Daily Mail :

... The Album ADARSH CHITRAWALI is probably the one of its kind in Hindi—the chief features of which are excellent production, very beautiful letter-press in many colours, and the appropriate piece of poem which accompanies each picture.

W. E. J. Dobbs, Esq., I. C. S., District Magistrate
and Collector, Allahabad :

I am glad that Allahabad can turn out such a pleasing specimen of the printers art.

Sam Higginbottom, Esq., Principal Allahabad
Agricultural Institute :

... I think it is beautifully done. Most of the guests who come into the Drawing room pick it up and look at it with interest.

A. H. Mackenzie, Esq., Director of Public Instruction, U. P. :

... I congratulate your press on the get-up of the Album, which reveals a high standard of fine Art Printing.

मूल्य केवल ४) रु०
डाक-व्यय अतिरिक्त

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Price Rs. 4/- Nett.
Postage extra.

Hindi edition :
Annual Rs. 6/8
Six monthly
Rs. 3/8

The 'CHAND'

Urdu edition :
Annual Rs. 8/-
Six monthly
Rs. 5/-

A magazine which has raised consciousness in India

The Leader :

The February (1929) number of the CHAND fully maintains its reputation for fearless criticism of social injustice and bold advocacy of reform. Its columns are always full of interesting articles poems and stories. Hindi may well be proud of possessing a high class magazine like CHAND.

The Amrit Bazar Patrika :

Had there been such magazine, in Bengali, Urdu, Marathi, Telegu, etc., a great service would surely have been rendered.

The Bombay Chronicle :

It has justly won a reputation all over India. Lovers of social regeneration in India, especially those who are well-off, can benefit themselves and also do a good turn to this magazine by being subscribers and donors.

The Mysore Chronicle :

Few vernacular papers and magazines can boast of such a well-conducted magazine as the CHAND.

The Sunday Times :

It is no exaggeration, we believe, to say that the CHAND occupies a foremost place among the journals published in this country.

The Indian Daily Telegraph :

It is ably edited and deserves much encouragement.

The Tribune :

The magazine is neatly printed on good white paper and in get-up and elegance is all that the most fashionable lady may desire.

The Rajasthan :

The CHAND undoubtedly stands high among the existing Hindi monthlies and we heartily congratulate the conductors for their unabated zeal.

The Searchlight :

It can unhesitatingly be said that it can take its rank with any high class magazine.

The Indian Social Reformer :

We have often noticed in these columns the excellent work done by the Hindi Journal—the CHAND. The CHAND has justified its existence as one of the best Hindi magazines.

The Forward :

The neatness of the paper and its get-up leaves nothing to be desired. It has raised a general consciousness in the Hindi-knowing world.

The Patriot :

We commend this journal to the Hindi-reading public with the hope that they will extend their patronage to this useful journal, which, we are sorry to learn, has been kept up at a considerable pecuniary loss to the promoters of the enterprise.

Individual Opinions

Justice Sir Abdul Qadir, Member Public Service Commission :

I have learnt with great pleasure that you propose to bring out an Urdu edition of your excellent magazine. The CHAND, which has rendered valuable service to the cause of Hindi literature for more than 7 years. I think Urdu and Hindi are so connected together that in serving the literature of one you are practically serving the literature of the other. The only difficulty is that of the script, and in bringing out an Urdu edition, you are surmounting that difficulty, and placing the result of your labours within the reach of the Urdu-reading public. I regard Urdu as the common heritage of Hindus and Muslims, and congratulate you on your resolve to serve Urdu as well as Hindi, and wish you success in your laudable enterprise.

F. W. Wilson, Esq., Ex-Chief Editor of the "Pioneer"

I am delighted to hear that you are about to bring out an Urdu CHAND. I am told that your main objects are to kindle among the Urdu-reading public a desire for social reform and to spread among them a knowledge of enlightened social criticism. I can conceive of no more useful and beneficial a publication, if these principles are faithfully and unswervingly followed. Again and again the criticism is made against Indian life to-day and the objection raised against further political progress that a large majority of the public are either, because of illiteracy or indifference, unaware of the need for social reform. The greatest vehicle in the education of Public opinion is an enlightened, vigorous, independent and free press. That you realise the need for bringing to bear the influence of modern publicity against the many dead and rotten branches of social custom that are choking the young and vigorous life of a healthy Indian nationality, is obvious by the mere fact that you have undertaken this new venture. I cordially wish you all success.

Pt. Moti Lal Nehru, Ex-President, All India Congress :

I welcome the appearance of the Urdu CHAND. It supplies a real want. I hope it will fulfil the expectations raised by the excellence of its Hindi parent. I wish it every success.

Major D. R. Ranjit Singh, O. B. E., (Kaisar-i-Hind) I. M. S., (Late) :

I am conscious of the great good the Hindi CHAND has already done and I am confident its Urdu edition will be able to do the same.

Munshi Iswar Saran Saheb, Member Legislative Assembly :

(By Air Mail from London)

I wish this magazine every success. The work of social reform is blessed and thrice blessed are those, who honestly do it. I hope this magazine will advocate the right policy in social matters and if it does, it will have to fight the obscurantists on the one hand and the blind imitators of the west on the other. I trust it will strive for the realisation of the fact that a girl has as much right to education and freedom as has her brother. I sincerely wish it to work for the preservation of the true type of Indian womanhood. I wish it a long career of usefulness.

Prof. M. H. Syed, M. A., Lecturer in Urdu, Allahabad University :

I am glad to learn that an Urdu edition of the CHAND is being issued. I wish this new venture every success. I understand that this monthly is devoted to the cause of social reform in India. In our present state of society there is no cause as laudable as this and I do hope that the CHAND in its Urdu garb will bring light to a large number of people who are still steeped in ignorance and are averse to new ways of life.

Dr. Sir Tej Bahadur Sapru, M. A., LL. D., Ex-Law Member of the Government of India :

I wish it every success.

Mr. M. M. Verma, M. A., Director of Education, Bikaner State writes :

... I need hardly say that I have been following the career of your Journal with keen interest, and I have extremely refreshing outlook of the work which it is sure to accomplish in the most important of phases of Social Reform in India ...

This PDF you are browsing now is in a series of several scanned documents by the Centre for the Study of Developing Societies (CSDS), Delhi

CSDS gratefully acknowledges the enterprise of the following savants/institutions in making the digitization possible:

Historian, Writer and Editor Priyamvad of Kanpur for the Hindi periodicals (Bhavishya, Chand, Madhuri)

Mr. Fuwad Khwaja for the Urdu weekly newspaper Sadaqat, edited by his grandfather and father.

Historian Shahid Amin for faciliating the donation.

British Library’s Endangered Archives Programme (EAP-1435) for funding the project that involved rescue, scan, sharing and metadata creation.

ICAS-MP and India Habitat Centre for facilitating exhibitions.

Digital Upload by eGangotri Digital Preservation Trust.

